खण्ड छः

आबी (स्त्री) वह अराज़ी–ए–मज़रूआ जिसकी सिंचाई तालाब, नहर या कुँवें के पानी से होती हो आमतौर से **चाही** के नाम से मौसूम की जाती है।

आढ (पु0) देखें ढोडा।

आड़/आड़ी (स्त्री) देखें मँड़ा।

आकाषी बर्त (स्त्री) देखें बारानी।

आल (स्त्री) संस्कृत ऊल बमानी सील। बर्साती पानी या किसी दूसरे तरीक़े की आबपाषी का असर, जो सतही ज़मीन में कुछ गहराई तक रहे जिससे बीज का जमाव और पौदे की इब्तिदाई नष्वनमा को मदद मिले। **2.** पियाज़ या लहसुन के पौधे के पत्ते जिनसे जड़ पढ़ती है। **प्रयोग** बरसात कम होने से ज़मीन में **आल** नहीं रही। **3** ज़मीन की कुर्बत से ज़मीन में काफ़ी **आल** रहती है।

नमी ( ) देखें आल।

सील ( ) देखें आल।

गेल ( ) देखें आल।

ऊद ( ) देखें आल।

आलान/अलान (स्त्री) मटर की बेल का खुसूसन और दूसरे बेलों का अमूमन मंढ़वा, बेलों के चढ़ने को लकड़ी वगैरह का बनाया हुआ सहारा।

आबी (स्त्री) आलदार ज़मीन। (संस्कृत ऊली बमानी सीली हुई ज़मीन) **देखें** आल।

आला ( ) देखें आल।

आलिया (पु0) लफ्ज़ आला का इस्मेमुसग़्ग़र बमानी ताक़। काष्तकारों की इस्तिलाह में अनाज को दूसरी फसल तक महफूज़ रखने की ज़मीनदोज़ बनी हुई 'खो' या खत्ती को कहते हैं।

आमन (स्त्री) ऐसा नषेबी क़तअ़ अराज़ी जिसमें धान की सिर्फ एक फस्ल बोई जाये।

आँक (स्त्री) अंदाज़ा, तख़मीना, जाँच। काष्तकारी की इस्तिलाह में तक़सीमे पैदावार के लिए खड़ी खेती की जिसके तख़मीने करने का तरीक़ा।

कंकूत ( ) देखें आक।

आंकबंदी (स्त्री) फसल की पैदावार का अंदाज़ा लगाना।

आँकिया (पु0) फसल की पैदावार का तख़मीना करने वाला माहिर शख़्स।

आबादकार (पु0) पड़ती या जंगल की ज़मीन को खेती के लिए अज़सिरे नौ तैयार करने वाला काष्तकार।

आबादकारी (स्त्री) ग़ैर मज़रूआ ज़मीन को खेती करने के लायक़ बनाने का हक्के मिलकियत।

उबदज (पु0) बरसाती कीड़े मकोड़े जिनका तुख़्म मिट्टी में मिला रहता है जो बरसात का पानी पड़ने से वजूद में आ जाते हैं।

उब्ना (क्रिया) देखें फूटना।

अब्वाव (पु0) मालगुज़ारी की इस्तिलाह में लगान के तहत काष्तकार या ज़मीनदार से वसूल की हुई एक मुक़र्रिरा रक़म जो ज़ेली रक़म के नाम से मौसूम और बाज़ सरकारी अख़राजात मस्लन पटेल, पटवारी की तंख़्वाह वगैरह के लिए मुख़तस़ होती है।

अबीज/अबज (पु0) न फूटने वाला तुख़्म यानी ऐसा बीज जो ख़राब हो जाने की वजह से उगने के क़ाबिल न रहा हो।

उपट (स्त्री) सत्हे ज़मीन के ऊपर की तह की फटन या तरख़ जो पानी खुष्क होने के बाद काली और चिकनी मिट्टी की ज़मीन में पड़ जाती है। **आना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

उपच्ना (क्रिया) बीज का जम्ना, फूट निकलना। **प्रयोग** आल की वजह से चना अच्छा उपचा है। **देखें** फूटना।

उप्चनहार (पु0) वह क़त़अ़ अराज़ी जिसमें बीज जल्द और खूब अच्छी तरह घंघना के फूटे, बढ़े और हर क़िस्म का बीज बोने के लिए अच्छी हो। **2.** फूटने वाला बीज बरख़िलाफ़ अबीज।

अफार (पु0) अपनी जगह से न टलने वाला। खलियान बनाने और गाहने से पहले अनाज की बालों की **पूलियों** का अंबार। **करना** के साथ बोला जाता है।

अतरपाल/अंतरपाल ( ) बंजर की क़िस्म का क़त़अ़ अराज़ी जिसमें पानी गहरा उतर जाये और ऊपर की सतह बिल्कुल खुष्क और बे आल रहने की वजह से किसी क़िस्म की काष्त के लायक़ न हो अगर बारिष कस्रत से हो तो कोई छोटा मोटा अनाज मस्लन बाजरा, मकई वगैरह बो दिया जाता है।

अटाला (पु0) देखें अफार।

अटान (पु0) अट्टे और अढ्ढे का ग़लत तलफ्फुज़। **देखें** मचान।

उठाव्नी (स्त्री) अंदोख़्ता, कोई रक़म या पैदावार का कुछ हिस्सा जो आइंदा फ़सल की तुख़्म रेज़ी की जुरूरत पूरी करने को बचाकर रखा जाये। **2.** पेष्गी रक़म जो ज़मीनदार या साहूकार से तुख़्मरेज़ी के लिए ली जाये। **देखें** बीज बिसार।

अठ्सास (पु0) गन्ने की काष्त के लिए शुरू बरसात से मौसमे बहार तक आठ महीने हल चलाकर तैयार किया हुआ खेत।

अजोत (स्त्री) बग़ैर जोती या पड़ती ज़मीन। **2.** वह क़त़अ़ अराज़ी जिसपर हल न चले और इसलिए बे काष्त रहे।

अजौरी (स्त्री) अगौरी का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** अगौरी।

उच्टा (पु0) भगा देने वाली चीज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में खेत के अंदर आदमी की मसनूअ़ी सूरत बनाकर खड़ी कर देने को कहते हैं। जिसको देखकर जंगली जानवर चमक जाये और डरकर भागे। **बनाना, लगाना, गाड़ना** के साथ बोला जाता है।

बिच्का ( ) देखें उच्टा।

धड़का ( ) देखें उच्टा।

उच्का (पु0) देखें उच्टा।

अदकारी रइय्यत (स्त्री) अकारी का गँवारू तलफ़्फुज़ मुराद काम न रखने वाला। काष्तकारी इस्तिलाह में ऐसे किसान को कहते हैं जो अपना हक़्के अराज़ी जुम्ला हुकूक़ के साथ दूसरे किसान को मुंतक़िल कर दे और इस तरह बेकार हो जाये।

अधार धौरा (पु0) दरिया के दहाने के क़रीब की अराज़ी मज़रूआ़ जो पानी के उतार चढ़ाव से बढ़ती घटती रहे ऐसी ज़मीन का लगान ग़ैर मुअ़य्यन होता और काष्तकारी इस्तिलाह में उधार धूरा कहलाता है।

दरिया बुन्ना ( ) अधार धूरा।

अध्बार (पु0) वह काष्तकारी मज़दूर जो पूरे वक़्त का मुलाज़िम या कारिंदा न हो बल्कि आधे दिन खेती बाड़ी और आधे दिन घरबार का धंदा करे।

अध्~बटाई (स्त्री) खेत की पैदावार में ज़मीनदार का बराबर का साझी, एक की ज़मीन और दूसरे की ख़िदमत इस बटाई का सबब होती है।

आधा साझा ( ) देखें अध्बटाई।

अध्~चना (पु0) देखें अध् गेवाँ।

अध्~कच्चा (पु0) पहाड़ के दामन में ऐसा नषेबी क़त़अ़ अराज़ी जो पानी के ठेरने की वजह से बहुत ज़ियादा गीला बल्कि कीचड़ बना रहे और आम क़िस्म की पैदावार के लायक़ न हो, ऐसी ज़मीन में

आल ज़ियादा रहने से बीज गल जाता है।

पहाड़ा ( ) देखें अध्गेवाँ।

अध्~करी (स्त्री) वह मज़रूआ अराज़ी जिसपर आम अराज़ियात के मुक़ाबले ख़ास हालात की सूरत में आधा लगान लगाया और वसूल किया जाता है।

अध्~गेवाँ (पु0) वह गेहूँ का खेत जिसमें बराबर का चना बोया जाये, गेहूँ और चने की मिलवाँ बुवाई।

अध्~मरजाई (स्त्री) वह खेती जो पानी की कमी से नष्व्नमा न पाये और बालों में दाने मुरझा जायें।

अधियार (पु0) वह किसान जो दो गाँव में खेत रखता और खेती करता और दोनों का काष्तकार हो।

अधियारी (पु0) बटाई पर काम करने वाला काष्तकार।

अधियाली ( ) देखें अधियारी।

अधेल/अधेलिया (पु0) देखें अधियार।

अढंड/अढंडी (पु0) गाँव की वह अराज़ी जिसपर किसी क़िस्म का महसूल या लगान न हो, बिला लगान अराज़ी, मस्लन झाड़ी, सड़क, आबादी। (अदण्ड यानी मुआफ़ी)

अढयानी (स्त्री) खेत के रखवाले के अढ्ढे के ऊपर धूप से बचाव के लिए फूस का बना हुआ छतरीनुमा साइबान या आसरा।

अराज़ी मज़रूआ (स्त्री) खेतीबाड़ी की ज़मीन, अज्ज़ा ए तरकीबी, तबई हालात और पैदावार के एतिबार से मुख़तलिफ़ नामों से मौसूम की जाती है काष्तकारी इस्तिलाह में ख़ालिस कुदरती अज्ज़ा से मुरक्कब ज़मीन मटियार और पौदों की ग़िज़ा के लिए दूसरे अज्ज़ा मिलाकर तैयार की हुई **गोइंद** कहलाती है।

अर्रा (पु0) देखें सत नजा।

उर्ना (पु0) देखें माला।

अर्वा चॉवल (पु0) देखें हंसराज।

उड़ाना (क्रिया) देखें उसाना।

अड़बंद (पु0) हल के जूए को हस्बे जुरूरत आगे पीछे करने के लिए **हरस** में बने हुये खदाने और कटाव जिसमें मेख़ बाँध दी जाती है **देखें** हल।

असाढ़ी (स्त्री) फ़स्ले ख़रीफ, शुरू बरसात से खत्म बरसात तक चार माह की मुद्दत, हिन्दी में इन महीनों के नाम असाढ़, सावन, भादों और कुवार हैं और बरसात के महीने कहलाते है। इस ज़माने में मोटी क़िस्म के अनाज रूई और बाज़ दीगर इजनास की काष्त की जाती है और इस्तिलाह में असाढ़ी कहलाती है।

असामी (पु0) काष्तकार, किसान, जोतिया जो ज़मीनदार से ज़मीन किराये या पट्टे पर लेकर खेती बाड़ी का काम करे और ज़मीनदार की रइय्यत की हैसियत से रहे।

उसाना (क्रिया) उड़ाना, दायें चले हुए अनाज को भूसे से जुदा करने के लिए हवा में ऊपर उठाकर गिराना ताकि भूसा दानों से अलाहिदा गिरे।

असाढ़ (पु0) बरसात के पहले महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारा मासा।

उसती (स्त्री) अनाज की बालों की एक बीमारी का नाम। **देखें** कंडवा।

असीच (स्त्री) वह क़त्अ अराज़ी जिसकी सिंचाई न हो सके यानी उसके लिए कोई ज़रीआ आबपाषी न हो। **देखें** ख़ाकी।

असली गाँव (पु0) वह देही बसती जिसका नाम सरकारी रजिस्टर में दर्ज हो उससे मुलहिक़ दूसरे खेड़े इस्तिलाह में **दाख़ली** कहलाते है।

बंदोबस्त टोडरमल ( ) देखें असली गाँव।

अकारी (पु0) देखें अदकारी।

अकाल/काल (पु0) खुष्क साली, क़हेत साली, महंगाई। बारिष न होने या कम होने से अनाज की पैदावार में कमी होना।

इक बहा (स्त्री) वह क़तअ अराज़ी जिसपर सिर्फ एक मर्तबा मामूली तरीक़े से हल चलाया गया हो।

खुरेली ( ) देखें इक बहा।

एक जोती ( ) देखें इक बहा।

एक सरी जोत ( ) देखें इक बहा।

पहली तोड़ ( ) देखें इक बहा।

इक बिरी (स्त्री) बीज बोने की एक क़िस्म की क़ीफ़।

इक सूआ (पु0) बीज का सूए की शक्ल का फुटाव।

इक फ़र्दा (स्त्री) देखें एक फस्ली।

अकास बेल (स्त्री) देखें अमर बोरिया।

अखा (पु0) देखें अड़बंद।

उखारी (स्त्री) गन्ने की नई पौध या कियारी।

कहावत

जेठ मास में चार दुखारी।
बन, बालक, भैंस और उखारी।।

उखानी (स्त्री) खलियान को उलट पलट करने की पंजेदार छड़ या दो शाखा लकड़ी।

पंजषाखा ( ) देखें उखानी।

दुंबाला ( ) देखें उखानी।

अखाई/अखानी (स्त्री) एक क़िस्म की बाँज जुवार जो चारे के लिए बोई जाये इसमें दाना बहुत काम आता है। फाँटे लम्बे हो जाते हैं। पंजाब में इसकी काष्त ज़ियादा होती है।

अखरा (पु0) वह खेत जिसमें से फ़सली पैदावार काट ली गयी और इसकी जड़ें ज़मीन में लगी छोड़ दी गयी हों। बग़ैर सँवारा और साफ़ किया हुआ खेत।

उखराज (स्त्री) गन्ने की पौद खेत में मुंतक़िल करने का ज़माना।

अख्वा (पु0) आँख, गन्ने की पोरी के निषान पर नई शाख़ फुटाव की घुंडी। **निकलना बढ़ना** के साथ बोला जाता है। **देखें** उखारी।

उगाई/उगाही (स्त्री) तहसीले लगान, वसूले ज़रे माल गुज़ारी। **2.** ताजिरों की इस्तिलाह में फरोख़्त शुदा माल की रक़म, मुक़र्रिरा मीआ़द पर वसूल करने का तरीक़ा।

अगन (पु0) जाड़े के दूसरे महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारा मासा।

उगना (क्रिया) देखें फूटना। **प्रयोग** पानी की नमी से तीन रोज़ में सारे बीज उग गये।

अगवासी (स्त्री) देखें बाड़।

अगौर (पु0) गन्ने का ऊपर का हिस्सा जिसपर पत्ते निकलते हैं।

अखौला ( ) देखें अगौरा।

मसकंडा ( ) देखें अगौरा।

अगौरी (स्त्री) काष्तकारी मज़दूर को पेषगी उजरत देने का तरीक़ा बाज़ गँवार अजौरी तलफ़्फुज़ करते हैं।

अगिया (स्त्री) चावल के पौदों की एक बीमारी जिससे पौदा सूख जाता है। जिसतरह आग की गर्मी से सूख जाये।

अगेर (पु0) अनाज की बालें जो कटाई के पहले थोड़ी सी तोड़कर ज़मीनदार को रस्मन बतौर नज़र पेष की जाये।

अगहनी (स्त्री) खरीफ़ की फसल की वह जिंस जो शुरू जाड़े यानी अगहन के महीने में काटी जाये।

अमानी (स्त्री) ख़ाम सरकारी तौर पर किसी ज़मीन को यौमिया उजरत मज़दूरी देकर काष्त कराने का तरीक़ा ए कार। दूसरे तामीरी कामों में भी यह इस्तिलाह मुरव्वज है।

अमर बाँरिया/अमर बोरिया (स्त्री) न मरने वाली बेल। एक क़िस्म की निबातात जो लम्बे लम्बे डोरों की शक्ल ज़र्द रंग की

होती है और बड़े दरख़्तों के ऊपर खुद ब खुद पैदा हो जाती और फैलकर सारे दरख़्त को ढ़ाँक लेती है फिर उसकी रतूबत से खुद फलती फूलती और दरख़्त को सुखा देती है ज़ियादती की सूरत में घास और छोटे पौधों को भी घेर लेती है।

अमलाक (स्त्री) ज़मीनदार की बिला षिरकते ग़ैर मक़बूज़ा अराज़ियात।

अमलदारी/अ़मलदारी (स्त्री) काष्तकार से लगान या महसूल ज़रे नक़द में वसूल करने का तरीक़ा।

अंतरबेद (पु0) दरिया ए गंगा और जमुना के दरमियान का निहायत ज़रख़ेज़ ज़रई इलाक़ा जो इटावा और इलाहाबाद के दरमियान फैला हुआ है।

अंजल (पु0) देखें खलिहानी।

अंजना (पु0) अद्ना क़िस्म का धान जो चैत यानी गर्मी के महीने में बोया जाता है इसीलिए उसको इस्तिलाह में चैतरा धान भी कहते हैं।

अंचला/अंचली (पु0/स्त्री) लप या मुट्ठी भर अनाज के दाने। (लिबास में आँचल ओढ़नी के कोने को कहते हैं।)

उँधेरिया करना (क्रिया) गन्ने के खेत की पहली निलाई और खोद करना ताकि नई पौध जल्द बढ़े और नया फुटाव लाये।

अंडरा (पु0) धान का पौधा जिसमें बाल का ख़ोषा निकलने की अलामत दिखाई देने लगे। **होना, फलने पर आना** के साथ बोला जाता है। **देखें** लफ़्ज़ अंडवा भाग पाँच पृ0

अंडिया (पु0) जुवार या मकई का भुट्टा या दरख़्त जिसमें भुट्टा निकल रहा हो, फलने पर आया हो, जुवार या मकई का पौधा। **देखें** लफ़्ज अाँड भाग–5।

अंकबंदी/अंगबंदी (स्त्री) असामीवार यानी हर काष्तकार पर अलाहिदा अलाहिदा लगान मुक़र्रर करने का तरीक़ा जो हर फसल के ख़तम पर लिया जाये।

अंकदार (पु0) मज़रूआ अराज़ी का मौरूसी शरीक और हिस्सादार जो अपने हक़ का लगान अलाहिदा देता हो।

अंकरी (स्त्री) अखरी या **आखरी** का दूसरा तलफ़्फुज़। बीज बोने का नलुवा जो हल के जूये के साथ खड़ा बाँध दिया जाता और मुख़तालिफ़ नामों से मौसूम किया जाता है। **देखें** लफ़्ज़ माला।

अंकोरी (स्त्री) अंग या आंग का दहक़ानी तलफ़्फुज़ मुराद, हल का फार वाला हिस्सा। **देखें** हाड़।

अँगरू (स्त्री) कंकरीली ज़मीन जिसमें जड़ियल पौदे मूली, गाजर, शलजम, चुकंदर वगैरह न बोया जा सके।

अनमुंधा (पु0) सुब्ह का झुटपुटा वक़्त जिस वक़्त किसान खेत में जाता है।

अनंदी (स्त्री) कियारी में लगी हुई धान की नन्हीं पौध जो खेत में लगाने के क़ाबिल न हुई हो।

अवासी (स्त्री) अनाज की अध्कच्ची बालें जो होले बनाकर खाने के क़ाबिल हो गयीं हों।

अवाई (स्त्री) हल की नोंक से बनी हुई बीज बोने की गहरी नाली। हल की गहरी खोद।

लागो ( ) देखें अवाई।

ऊप (स्त्री) क़र्ज़े की एक क़िस्म जिसमें काष्तकार फ़सल पर नक़द रक़म की बजाय अनाज देने का पाबंद किया जाता है और बाज़ार के नर्ख़ से एक दो या तीन सेर फी रुपया ज़ियादा लिया जाता है। **करना** के साथ बोला जाता है।

ऊपर छुंट/ऊपर चौंट ( ) खेत कटाई का एक तरीक़ा जिसमें पहले बालें पौधों के ऊपर से छाँट ली जाती यानी काटकर इकट्ठा कर ली जाती है।

ऊद आना (क्रिया) खेत में हल चलाने के लायक़ बरसाती पानी से नर्मी और नमी पैदा हो जाना। इसको बाज़ मुक़ामात पर **वतर आना** भी कहते हैं। लफ़्ज़ ऊद बमानी नमी या सील पंजाबी ज़बान में बोला जाता है।

ओरना (पु0) वेरना का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** माला, वेर और वेरना।

ऊसर (स्त्री) ऐसी ज़मीन जिसमें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खार की मिक़दार इतनी ज़ियादा हो कि किसी क़िस्म की खेती न हो सके और घास भी पैदा न हो।

शोरीली ( ) देखें शोर।

औखर/औखल (स्त्री) ऐसी ग़ैर मज़रूआ पड़ती क़तअ़ अराज़ी जो मेहनत से ज़राअत के लायक़ बनाई जा सके।

ऊग (स्त्री) हरस और नागल के जोड़ पर ऊपर के रुख़ से बतौर डाट फँसी हुई एक लम्बी चोबी फाँट जो उन दोनों हिस्सों को आपस में गूँधे रखती है और इसलिए इस्तिलाह में उसको **गुंधेल** भी कहते हैं। 2. हिन्दी में ऐसी चीज़ को कहते हैं जो किसी चीज़ के ऊपर बतौर अबरा चढ़ाई जाये और वह नीचे के हिस्से पर जमी रहे। **देखें** हल या औगी।

इहरी (स्त्री) नमक के महलूल को निथारने और मुक़त्तर करने की छलनी।

अहीटा (पु0) खेत खुसूसन खलियान का निगेहबान जो खेत की रखवाली से किसी वक्त न हटे यानी किसी को अपना क़ायम मुक़ाम बनाये बग़ैर अपनी जगह से न जाये।

एकड़ (पु0) 484 मरब्बअ़ गज़ या दस मरब्बअ़ जरेब का एक क़तअ़ अराज़ी। एक जरीब 22 गज़ लम्बी होती है।

एक फसली (स्त्री) वह खेत जिसमें सिर्फ़ ख़रीफ की फस्ल काष्त की जाये।

एक फर्दा ( ) देखें एक फसली।

ईख (स्त्री) गन्ने की एक क़िस्म जो शकर बनाने के लिए बोई जाती है इसकी बहुत सी क़िस्में और नाम मषहूर है। **देखें** भाग तीन पेषा शक्करसाज़ी पृ0

~राज (स्त्री) ईख बोने के वक़्त की रस्म और पूजा।

~हाड़ी (स्त्री) ईख की काष्त की क़तअ़ अराज़ी या वह खेत जो ईख की काष्त के लिए मख़सूस हो।

बापौती (स्त्री) बाप से बेटे को मिलने वाला तर्का या अरसे पिदरी।

बाजंतरी (पु0) सरकारी लगान या खिराज वसूल करेन वाला।

बाजीदार (पु0) साझी खेती के कारोबार का साथी कारिंदा जिसको पैदावार का कोई हिस्सा देना मुक़र्रर कर लिया गया हो।

बारानी (स्त्री) वह आराज़ी ए मज़रूआ जिसमें आबपाषी का कोई ज़रीआ न हो और पैदावार का दारोमदार सिर्फ बारिष पर हो। इसको इस्तिलाह में **खाक़ी** भी कहते हैं।

बारबटाई (स्त्री) देखें बोझ बटाई।

बारामासा (पु0) बारह महीने की एक मुद्दत यानी साल जो बारह महीनों में तक़सीम है हिन्दी में उनके हस्बेज़ेल नाम है। चैत, बैसाख, जेठ, असाढ़, सावन, भादों, कुवार, कातिक, अगहन, पूस, माघ, फागुन। हिन्दी रवायात के बमुवज्जिब जो मुबनी बर हिकमत है। इन महीनों में से हर एक के लिए एक–एक चीज़ ऐसी बताई गयी है जो इस महीने में करनी या खानी नुक़सान देह होती है। इसको इसतरह बयान किया गया है।

चैत–गुड़, बैसाख–तेल, जेठ–पंह (सफर) असाढ़–बैल (बैलगिरी), सावन–मर्सा(सागपात), भादों–दही, कवार–करेला, कातिक–मही,

अगहन–जीरा (ज़ीरा), पूस–धनिया, माघ–मिस़री, फागुन–चना।
इन मासा में यह सब तजे।
जो नर नारी सुख को भजे।।

बारा मासिया (पु0) काष्तकारी मज़दूर जो पूरे साल या हमेषा के लिए मुलाज़िम हो।

बाड़/बार (स्त्री) अवध में बागर गोहान और बिहार में गवेंद बोला जाता है। खेत के अतराफ़ हिफ़ाज़त के लिए काँटेदार झाड़ी या इसी क़िस्म की दूसरी चीज़ की लगाई हुई आड़।

बाड़ा (पु0) गाँव की बस्ती के क़रीब तरकारियाँ लगाने का छोटा खेत जिस के अतराफ़ मुस्तक़िल बाड़ बनी हुई हो और यही उसकी वजह तस्मिया है।

बासमती (पु0) आला क़िस्म के चावलों की एक क़िस्म जो आमतौर से बिनासपती के नाम से मषहूर हैं। देहरादून, बरेली, शाहजहाँपुर के इलाक़े में बहुत होती है यह चावल दो साल से ज़ियादा अगर जमा रखा जाये तो ख़राब हो जाता है।
2. जुवार की एक उमदा क़िस्म।
कहावत
बासमती धान जो गाड़ा।
बड़ा आदमी जो परीमत छाड़ा।।
ऊँच के बेर नीच के खाये।
यह चारो गये ढोल बजाये।।

बाग़ी पैदावार (स्त्री) ज़रई पैदावार में वह ख़ास पैदावार जो फल फूल की तरह काष्त की जाती और इस्तिलाह में बाग़ी पैदावार कहलाती है। इनमें मुंदरजा ज़ेल चीजें शुमार की जाती है। अदरक, अफ़ीम, अमवाड़ी, अल्सी (तसी), इलायची, भंग, तिकुर (अरारोट) तिल, तम्बाकू, चाय, सरसों, सन, कह़वा, कुसुम, कुष्टा (जोट), कपास, कालीमिर्च, मजीठ . . . . . षकर वगैरह शुमार की जाती है।

बाक़ी (स्त्री) तक़ावी की रक़म जो काष्तकार के ज़िम्मे देनी रह जाये।

बाक (स्त्री) खड़ी खेती की पैदावार का तख़मीना या आँक। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

बाखर/बक्खर (पु0) खेत में से घास और कटी हुई जड़ें निकालने और सफाई करने का हल।

बाख्ली (स्त्री) बखारी का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** बखारी।

बागती (स्त्री) बाग़की का ग़लत तलफ्फुज़, मुराद खेत के अंदर का ऐसा क़त़अ़ ज़मीन जिस पर आम वगैरह के छायादार दरख़्त लगे हों, जिसके साये में खेती फूले न घास उगे।

बागर (स्त्री) बग्गड़ का ग़लत तलफ़्फुज़। मुराद खेत की हद की बे तरतीब आड़ या रोक। **देखें** बाड़ और बंजर।

बाल (स्त्री) गप्फी, गेहूँ, जौ, धान और बाजरे वगैरह के दानों का खोषा बाज़ मुक़ामी बोलियों में **फोइया** कहते हैं।
कहावत
माँगे लोधा बाल न दे।
गद्दी पाँव दे सर बस ले।।

गप्फ़ी ( ) देखें बाल।

बालसुंदर/बलसुंदर (स्त्री) बालू मिली हुई चिकनी मिट्टी का उमदा और ज़रख़ेज़ क़त़अ़ अराज़ी।

बल्कट (स्त्री) खड़े खेत में से अनाज की बालें तोड़ या काटकर जमा करने का तरीक़ा। **देखें** ऊपर छंट।

बालुवा (स्त्री) बालूवाली यानी रेतीली ज़मीन जिसमें पानी जल्द तह में उतर जाये और सत्ह में आल न रहे और खेती के लायक़ न हो।

बालूबुर्द (स्त्री) नद्दी नाले या दरिया के क़रीब की ऐसी ज़मीन जिसपर पानी की

रौ से रेत की इतनी तह जम जाये की काष्त के क़ाबिल न रहे।

बालूतरा/बालू तराई (स्त्री/पु0) दरिया के धारे की ज़मीन जो रेत और गाद से पट गयी हो। दरिया के धारे का रुख बदल जाने से यह अराज़ी काष्त के लिए निहायत उमदा होती है।

बालूचर (स्त्री) दरिया का रेत्ला किनारा या किनारे की रेतीली ज़मीन जो फ़ालीज़ के लिए बहुत अच्छी होती है।

बान बिठाना (क्रिया) धान की पौध की फेरी करना यानी कियारियों से निकालकर खेत में लगाना।

बाँजर (स्त्री) बालू, मकई के भुट्टे के ऊपर के बाल।

बाँसा (पु0) देखें माला।

बाँगर (स्त्री) बुलंदी, ऊँची ज़मीन जहाँ से पानी बहकर नीचे की तरफ को आये, चढ़ाव की ज़मीन जहाँ से दरिया या नद्दी नाले का पानी **खादर** यानी नषेबी ज़मीन की तरफ बढ़े।

बाव बेगार/बाव बँगार (पु0) काष्तकारी मज़दूर जिसको ज़मीनदार खुद काष्त या खेती में मामूली मुआवज़े पर काम में लगाये।

बेगारी ( ) देखें बाव बेगार।

बाव्नी (स्त्री) बावन गाँव की जागीर जो किसी बड़ी ख़िदमत के बदले में राजा से मिले।

बाह (स्त्री) देखें खुरेल।

बाहन (स्त्री) दो तीन मर्तबा हल चला कर तैयार किया हुआ खेत।

बाहना (क्रिया) खेत में हल चलाना।

बाहनी करना (क्रिया) देखें बाहना।

बाईसी पंचात ( ) देखें पंचायत।

बाईवरी (स्त्री) एक क़िस्म की झाड़ी जो खुष्क साली में खेत में पैदा हो जाती है। इसकी जड़ बहुत लम्बी होती है जो कभी कभी ज़मीन के अंदर इतनी गहरी फैल जाती है कि इसका मिटाना दुष्वार बल्कि नामुमकिन हो जाता है। ज़मीन काष्त के क़ाबिल नहीं रहती।

बेऊल्याना (पु0) बबूल या कीकर का जंगल, खेती बाड़ी के आलात और गाड़ियों के पट्टे बनाने के लिए उसकी बड़ी हिफ़ाज़त की जाती है।

बतर (स्त्री) पानी की ऐसी तरी जो ज़मीन को नर्म और हल चलाने के क़ाबिल बना दे। आमतौर से असाढ़ की बारिष ज़मीन की तराई के लिए बहुत मुफीद होती है। 2. खेत की ज़मीन की इतनी नमी जो गेहूँ की बुवाई को काफी हो। **प्रयोग** तेज़ हवा चलने से ज़मीन में बतर नहीं रहीं।

बतोरी (स्त्री) छोटी क़िस्म का चना।

चनी ( ) देखें बतोरी।

बटाना (पु0) अनाज का गोल दाना। इलाक़ा कुमाऊँ और दकन के मटर को कहते हैं।

बटाई (स्त्री) बराबर का हक़। ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान खुदकाष्त अराज़ी की पैदावार की रिवाज या मुआहिदे के मुताबिक तक़सीमे हिस्सा **रसदी**। इसको इस्तिलाह में **बटाई जिंसी** कहते हैं।

बटाई नवासिया (स्त्री) ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान पैदावार की ऐसी तक़सीम जिसमें सोलह हिस्सों में नौ हिस्से ज़मीनदार के और सात हिस्से काष्तकार के हों।

बट्टा हरवाई (पु0) खेत की जुताई का हक़्क़े मुक़र्ररिह जो बटाई से क़ब्ल कुल पैदावार में से हल वाले के लिए अलाहिदा कर दिया जाये।

बटनय्या (पु0) सेर की पैदावार का शरीक काष्तकार।

बटाई जिंसी (स्त्री) देखें बटाई।

बटवारी ( ) देखें बटाई।

बटवार (स्त्री) जंगल के रास्तों की निगेहबानी करने वाला चौकीदार। **2.** पुलिस या चुंगी के निगराँकार मुलाज़िम की सरेराह बनी हुई चौकी या क़यामगाह। **3.** खेत से अनाज के कटे हुये पौदों को समेटने का अ़मल।

बटवारा (पु0) देखें बटाई।

बटोरन/बटोलन (स्त्री) काष्तकारी मज़दूरों का खलियान के अतराफ से भूसे के साथ बिखरे हुये अनाज के दाने समेटना।

बटिया खलियानी (स्त्री) खलियान पर हिस्सेदारों में जिंस की तक़सीम का तरीक़ा।

बटवी/बटेव (पु0) बटिया का राहगीर, खेत की पगडंडी पर चलने वाला।

बिठावन (स्त्री) देखें बान बिठाना और रोपना।

बिजार (स्त्री) देखें हरज़्ना।

बिजाई/बिजवार (स्त्री) गाँव के कमेरों का हक़ जो मुक़र्ररिह मज़दूरी के अलावा मेहनत और कोषिष से खेत खलियान के गिरे पड़े और बिखरे हुये अनाज के दाने जमा करके हासिल करें और उनकी मेहनत का ईनाम समझा जाये। **2.** ज़मीनदार को उसके मुक़र्ररिह हक़ से कुछ ज़ियादा रस्म और रिवाजन मिलना।

बिजरा/बीजू ( ) बियार (बियारू) बीज बोने को तैयार की हुई कियारी जिसमें उन पौधों का बीज बिखेर कर बोया जाये जिनकी पौध परवरिष होने पर खेत या चमन में तरतीब से लगाई जाती है। बाज़ पौध कई मर्तबा एक जगह से दूसरी जगह बदलकर लगाई जाती है।

बिजमार (स्त्री) तुख़्म सोख़्त, वह ज़मीन जिसमें बीज न फूटे और गल सड़कर खराब हो जाये।

बिज महूरत (स्त्री) बीज बोने के लिए मुबारक साअ़त देखने की रस्म।

बिजवारा (स्त्री) देखें बिजाई।

बिझावत/बिझावट (स्त्री) सेर के अख़राजात का हिसाब या शरीक काष्त का रंदों के नाम और उनके इख़राजात, नफ़अ़ व नुक़सान लिखने का पटवारी का रजिस्टर। **देखें** पटवारी।

बिझूट/बझोट (स्त्री) देखें ऊपर छुंट।

बिचार/वीचार (स्त्री) काष्कारों की इस्तिलाह मुराद खड़े खेत की पैदावार का अंदाज़ा करना।

बिचका (पु0) देखें उचटा।

बदरा (स्त्री) देखें खादर।

बदर्वा (स्त्री) शुरू बरसात के मौसम में बोई जाने वाली जुवार जो आमतौर से चारे के लिए बोई जाती है इसका दरख़्त सात–आठ फुट लम्बा होता है और बहुत कम फलता है।

बधा (पु0) कठिया गेहूँ।

बिधनी (स्त्री) पंजे की वज़अ़ का बेलचा जो अनाज की फली के छिलके को दानों से जुदा करने के लिए काम में लाया जाय। **2.** पौधों की जड़ों से घास निकालने का एक किस्म का शाखोंदार खुर्पा।

बिधियाना (क्रिया) तम्बाकू के पौधे के ऊपर बढ़ने वाले फुटाव को तोड़ना ताकि पौदा घुनदार बने इस तरीक़े से इसको फूलने से रोका जाता है ताकि पत्तों का फैलाव ज़ियादा हो।

खुटकना ( ) देखें बिधियाना।

बरा (पु0) बिराह का गलत तलफ़्फुज, काष्तकारों की इस्तिलाह में ऐसे खेत या खेतों को कहते हैं जो दिहात से दूर जंगली जानवरों के रास्ते या जंगल की सरहद पर वाक़े हो और जिनकी निगरानी मुष्किल हो और जंगली जानवर उसकी

पैदावार का नुक़सान करें इसी वजह से ऐसे खेत कम लगान होते हैं।

बरादना (क्रिया) बरसाना, भूसा मिले हुये अनाज को हवा में ऊपर से गिराना ताकि भूसे से दाना अलाहिदा हो जाये।

धूरा ( ) देखें बरा।

सवाना ( ) देखें बरा।

बराकाँबर/भूरा काँबर (स्त्री) हलके भूरे रंग की सख़्त ज़मीन जो जल्द खुष्क और सख़्त हो जाये। अगर बारिष थोड़े–थोडे वक़्फ़े से रबीअ़ तक न हो फस्ल नहीं बोई जाती इस ज़मीन की खेती को महावट के पानी की भी बड़ी जुरूरत होती है।

बिराना/बिरान (पु0) झड़बेरी का जंगल जो अमूमन ज़राअ़त के ना क़ाबिल होता है।

बर बस्ती (स्त्री) बन की नौ तोड़ अराज़ी का लगान या महसूल जो की बीघा के हिसाब से आम खेतों के मुक़ाबिले में कम लिया जाता है। **2.** बाग़ की ज़मीन का लगान।

बगोटी (स्त्री) बाग़ाती का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। वह जमीन जो बाग़ लगाने के लिए बन काटकर बनाई जाये।

बिर्त (स्त्री) नेपानी ज़बान में बर्ता, मुआफ़ी लगान की ज़मीन को कहते हैं जो इनामदार और उसकी औलाद को नसलन बाद नसलन दी जाती है। यह मिलकियत या जागीर किसी ख़िदमत के औ़ज़ इनायत की जाती है इस्तिलाहे आम में उस मज़रूआ़ अराज़ी को कहते हैं जिसपर काष्तकार का मौरूसी हक़ हो और बेदख़ल न किया जा सके जब तक वह अपने ज़िम्मे का लगान रास्त सरकार में दाखिल करता रहे। **2. बिर्तिया** मौरूसी जागीरदार या काष्तकार जो बेदख़ल न हो सके। **3. जीवन बिर्त** वह जागीर जो मुतवफ़्फी मुलाज़िम लड़के को गुज़ारे के लिए मुस्तक़लन दी जाये। **4. मर्वत बिरत** वह जागीर जो मुल्क की ख़िदमत में मारे जाने वाले के वारिसों को खून बहा के तौर पर अता की जाये। **5. संकल्प बिरत** वह जागीर जो मज़हबी ख़िदमत सर अंजाम देने के बदले में अता की जाये। बिरहमन का हक़्के ख़िदमत जो गाँव की अराज़ी या पैदावार से उसको दिया जाये।

बिर्तात पत्तर (पु0) परवाना जागीर, इनायत नामा अ़ताये जागीर।

बिरतिया (पु0) देखें बिर्त।

बरझी बंदी (स्त्री) वह जागीर जो फ़ौज़ी खिदमत अंजाम देने के लिए दी जाये।

बर्दा (पु0) देखें कछार।

बर्ढा (स्त्री) भूड की क़िस्म की रेतीली और कंकरीली जमीन।

बिर्रा (पु0) गेहूँ, चना और जौ की मिलौनी। **2.** चने और जौ या चने और गेहूँ की मिलवाँ बुवाई।

बेझड़ ( ) देखें बिर्रा।

बुर्री (स्त्री) हाथ से बीज को बिखेर कर बोने का तरीक़ा। **2.** हिन्दी बुरकना बमानी चुटकी से किसी चीज़ को फैला कर डालना। **करना** के साथ बोला जाता है।

गुर्मी ( ) देखें बुर्री।

गुल्ली ( ) देखें बुर्री।

बिखेर ( ) देखें बुर्री।

बरसाना (क्रिया) देखें बिरादना। **2.** बारिष होना, बादलों से पानी गिराना।

बरसवाही (स्त्री) साल के फ़सल पर कमेरों की मज़दूरी या हक़्के ख़िदमत देने का तरीक़ा जैसे छःमाही।

बिर्वा (पु0) चने का पौधा। कोई नया पौधा। **कहावत** होनहार बिर्वा के चिकने चिकने पात।

बिरवही (स्त्री) नई पौध जो खेत में लगाने को अव्वल कियारी बढ़ाई गयी हो।

बरहा (पु0) बीज बोने को हल से बनाई हुई नाली। 2. खेत में पानी ले जाने की नाली। **देखें** पेषा आब पाषी पृ0

बरहाना (पु0) ग़िज़ा की जुरूरत के लिए बरहों में लगाई जाने वाली तरकारियाँ मसलन मूली, शलजम वगैरह जो बरहों के किनारे लगा दी जाती है।

बाड़ी ( ) सब्ज़ी, तरकारी लगाने का क़तअ़ अराज़ी। **देखें** बाड़।

बरेह़ (स्त्री) पान की कियारी।

बसावरी (स्त्री) महसूल अराज़ी शामिलात जो घर बनाने को ली जाये। **देखें** बसावरी।

नजूल ( ) देखें बसावरी।

टकैना ( ) देखें बसावरी।

बिस्त (पु0) देखें मुक़द्दम।

बस्गत (स्त्री) गाँव के क़रीब आबादी की ज़मीन, क़ाबिले बस्ती घर बनाने की ज़मीन।

बिस्वा (पु0) एक सौ अस्सी मुरब्बइ़ गज़ का क़तअ़ अराज़ी।

बसौरी (स्त्री) भेतौरी, लगता, कर। **देखें** बसाव्री।

बसौनी बिसार (पु0) गाँव के चौकीदार का चौकीदारः जो उसको फ़सल पर गाँव की मुष्तरका आमदनी में से दिया जाता है।

बिस्वा बरार (पु0) गाँव की अराज़ियात में हक़्क़ियत रखने और उसकी आमदनी वसूल करने वाला ज़मीनदार।

बिसोई (स्त्री) दो बिसवे अराज़ी की बीघा हक़्के ज़मीनदारी जो बट्टेदार ज़मीनदार की काष्त के लिए अलाहिदा कर दे।

बिसवेदार (पु0) बड़े काष्कार के ज़ेरदस्त काष्तकार। **देखें** मुक़द्दम।

बिसवेदारी (स्त्री) ज़मीनदारी, गाँव का हिस्सेदार।

बसीऔरा/बस्यौरा (पु0) गाँव में मकान बनाने और बसने की दावत जो बिरादरी को दी जाये।

बसियाऊरा ( ) देखें बसीऔरा।

बक़्बूता (पु0) बक़ाया लगान की फेहरिस्त।

बुकटा (पु0) भरी मुट्ठी। **भरना** के साथ बोला जाता है।

बकोली (स्त्री) एक कीड़ा जो चावल के दरख़्त को खा जाता है।

बुखारी (स्त्री) बुख़ारी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। उर्दू में बुख़ारी से मुराद ऐसी कोल्की होती है जो मामूली सामान रखने को दीवार के आसार में बना ली जाये। काष्तकारी इस्तिलाह में ऐसी जगह समझी जाती है। जहाँ अनाज महफ़ूज़ रखा जा सके। यह जगह या तो झाऊ की शाखों से एक बहुत बड़े पिटारे की शक्ल बना ली जाती है जिसको वह कोठी कहते हैं या मकान के अंदर दीवारों से मिलाकर ईंट मिट्टी से कोल्की नुमा खो सी बना लेते हैं और उसको बाखली कहते हैं।

बक्खर (पु0) खेतों के कटे हुये पौधों की जड़ें निकालने का भारी क़िस्म का हल। **खर** संस्कृत बमानी खुद रौ निबातात।

बखेर (स्त्री) देखें बुर्री।

बगोटी (स्त्री) देखें बरबस्ती।

बुलाहर (पु0) गाँव का संदेसिया, पयाम्बर, मुनादी करने वाला। गाँव के किसी काम में षिरकत के लिए बस्ती वालों को इत्तिला देने और बुलाने वाला।

बुलदहानी (स्त्री) चरागाह में मवेषियों के चरने का महसूल जो ज़मीनदार को अदा किया जाये।

बिल्ली लोटन (स्त्री) एक किस्म की खुष्बूदार घास जिसकी खुषबू पर बिल्ली फरेफ़्ता होती है।

बल्वा (स्त्री) बालूवाली या रेतीली अराज़ी जिसमें पानी जल्द जज़्ब हो जाये और पौधों की जड़ों के लिए नमी न रहे।

बुलहरी (स्त्री) गाँव के बुलाहर की उजरत या हक़्क़े खिदमत। **देखें** बुलाहर।

बमेठा (पु0) दीमक का घर जो वह मिट्टी के अंबार की शक्ल खेत में बनाती है।

बम्हनी (स्त्री) सुर्ख़ रंग मिट्टी की, हल्की क़िस्म की कमज़ोर अराज़ी।

बन (पु0) कपास और कपास का खेत।

बिनार (स्त्री) वह खेत जिसमें गेहूँ और जौ की फ़सल बोई और काटी जा चुकी हो।

बन बस्ती (स्त्री) देखें बर बस्ती।

बन तरिया (पु0) जंगल का रखवाला या निगेहबान।

बंटा (पु0) देखें खुरपा।

बंजर (स्त्री) नाक़ाबिले काष्त अराज़ी।

बेजोत ( ) देखें बंजर।

बनझरी/बन झोरी ( ) वह अराज़ी जो खुद रौ छोटी झाड़ी की कस्रत की वजह से काष्त के लायक़ न हो।

बन चरी (स्त्री) जुवार के पौधे से मिलती जुलती लम्बी पत्ते की जंगली घास जिस को जंगली हाथी शौक़ से खाता है।

बंदा सेवक (पु0) वह क़र्ज़दार काष्तकार जो क़र्ज़ा उतरने तक क़र्ज़ ख़्वाह की मज़दूरी करने का मुआहिदा करे।

बंदोबस्त (पु0) ज़रई पैदावार की तष्ख़ीसे लगान का अमल या इंतिजाम।

बँसवारी/बँसवर (स्त्री) बाँस का बन।

बन कटी (स्त्री) जंगल साफ करके खेती करने का हक़ जो किसी मुआहिदे के तहत दिया जाय।

बन कर (पु0) जंगल की पैदावार का महसूल जो जमीनदार से सरकार को वसूल हो।

बनखुरा (पु0) कपास के दरख़्त की संटियाँ या छड़ें जिनसे किसान मामूली टट्टियाँ बना लेते हैं।

कप सँटा ( ) देखें बन खुरा।

बन खंड (पु0) गाँव की अराज़ी में जंगल का टुकड़ा या क़तअ जो ग़ैर मज़रूआ शुमार किया जाये।

बिंगा (स्त्री) सफ़ेद रंग की सरसों।

बन नील (पु0) जंगली या खुदरा नील के पौदे या झाड़ी।

बनहर (पु0) देखें पनहर।

बनेल (स्त्री) देखें अड़बंद।

बुआर (स्त्री) अनाज की बुवाई का ज़माना।

बूआँठी (स्त्री) बीज बोने का नलीदार ज़र्फ़ जो हल के साथ लगा दिया जाता है। **देखें** माला।

बुवाई (स्त्री) अनाज का बीज बोने का अमल या तुख़्मरेज़ी।

कहावत

कातिक लगे बवाई अगन में भरे।
मूठा काढ़ मँड़ पर धरे।

बोझ बटाई (स्त्री) काष्तकार और ज़मीनदार के दरमियान अनाज के गट्ठों की सूरत में पैदावार की तक़सीम यानी अनाज के बालों के मुट्ठे बाँधकर गिनती से तक़सीम कर लेना।

बार बटाई ( ) देखें बोझ बटाई।

बोला (पु0) क़ौल, ज़बानी मुआहिदा जो ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान हो।

बोलेदार (पु0) क़ौलदार ज़बानी मुआहिदा रखने वाला काष्तकार।

बोना (क्रिया) पैरना, छिटना, छिटकना, तुख़्मरेज़ी। पैदावार की ज़मीन में बीज डालना।

बूँट (पु0) चने का ढोडा।

बाँगा (पु0) टेढ़ा और गाँठदार संटा या साँटा। अनाज के दरख़्त का ढंठल।

बोनी (स्त्री) बूआर, बावक। **करना, होना** के साथ बोला जाता है। **देखें** बुवाई।

बौनिया (स्त्री) छोटे दाने की सफ़ेद जुवार।

बोयार (स्त्री) खेती की ज़मीन, अनाज बोने की ज़मीन जो हर क़िस्म की खराबियों से पाक हो। बरख़िलाफ बंजर। **2.** ऐसा क़त़अ अराज़ी जिसमें हमेषा कोई न कोई चीज बोई जाती रहे।

बँगा ( ) देखें बाँगा।

बोयर (स्त्री) देखें बोयार।

बोवय्या (पु0) बीज बोने वाला मज़दूर।

बेहंड (स्त्री) बारिष के पानी से कटी हुई ज़मीन यानी जिसमें जगह–जगह मिट्टी बहकर गढ़े पड़ गये हों।

बेहनौर (स्त्री) धान की पौध।

बहींत (स्त्री) वह अराज़ी जिसपर नदी नाले या दरिया का पानी चढ़ आये और इसकी मिट्टी बहाकर ले जाये।

बियार/बियारू (स्त्री) देखें बिजरा। धान के बीज का फुटाव।

बियास (स्त्री) धान या गेहूँ वगैरह के बीज की फूटी हुई सलाई।

बियाला (पु0) बयालीस सेर का मन जो मुस्ताजिर काष्तकार से अनाज की तौल में लगाता है।

बियावर (स्त्री) देखें बियास।

बैठ/बेट (स्त्री) दरिया के किनारे की रेतीली और बंजर ज़मीन। **2.** ज़रई पैदावार में सरकार के हिस्से की मिक़दार जो तष्ख़ीसे लगान के वक़्त मुक़र्रर की जाये।

बैठक (स्त्री) देखें चुंगी ख़ाना।

बीज बिसार/बीजंत (स्त्री) बीज खरीदने को पेष्गी रक़म जो ज़मीनदार काष्तकार को दे।

बेजरा (स्त्री) दालदार फुटाव, चंद रोज़ का फूटा हुआ बीज जिसकी दालें न गिरी हों।

बीज गड्डा (पु0) गन्ने की पौध लगाने को खोदा हुआ गड़हा जिसमें गन्ने की आँखदार पोर दबा दी जाये।

बेजोत (स्त्री) वह ज़मीन जिसमें हल न चल सके और खेती के काम की न हो।

बेझड़ (स्त्री) तीन क़िस्म का मिलाजुला ग़ल्ला जिसमें आमतौर से गेहूँ चना और जौ बराबर मिक़दार से शरीक होते हैं। किसानों और ग़रीबों के खाने का सस्ता ग़ल्ला।

बेचिराग़ (पु0) ग़ैर आबाद, वीरान क़स्बा जहाँ खुष्क साली की वजह से खेतियाँ बरबाद हो गई हों और काष्कार घर छोड़कर चले गये हों।

बैराग (पु0) वह चंदा जो फ़सल पर काष्तकारों से मज़हबी इग़राज़ के लिए जमा किया जाये।

बेराना (पु0) देखें बिराना।

बैसाख (पु0) मौसमे गर्मा के दूसरे महीने का हिन्दी नाम जिसमें लू चलती है। **देखें** बारह मासा।

बेसर (स्त्री) अनाज के दरख़्तों की कटाई की उजरत जो सौ पूलियों पर बीस पूली के हिसाब से दी जाये। बीस फ़ीस्द।

बीघा (पु0) 360 मुरब्बअ़ गज़ ज़मीन का क़त़अ़।

बेल (स्त्री) खेत में कियारियाँ बनाने का एक ख़ास क़िस्म का फावड़ा। **2.** ऐसी निबातात जिसका तना पतला और लचकदार हो और बग़ैर सहारे ऊपर न चढ़ सके। **3.** गन्ने के रस को मुसलसल उबालने का अ़मल जो राब बनाने के लिए किया जाये।

बेलन/बेलना (पु0) देखें हँगा और सुहागा।

बेहन (स्त्री) देखें पनेर।

भाबर (स्त्री) हल्की क़िस्म की सियाह मिट्टी की ज़मीन। **2.** कोहे सिवालिक का जंगल जो लम्बी घास से

ढका रहता है। इस घास से एक क़िस्म की रस्सी बनाई जाती है जो भाबर के नाम से मषहूर है।

भाजीदार (पु0) हिस्सेदार, साझी (संस्कृत भाज बमानी तक़सीम करना) काष्तकारी इस्तिलाह में खेती की पैदावार में बराबर का हिस्सेदार मुराद ली जाती है।

भादौं (पु0) बरसात के तीसरे महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारह मासा।

भास (स्त्री) देखें धसन।

भाग (पु0) देखें लगान।

भागनर (स्त्री) दरिया ए जमना के किनारों में दरिया बरआमद क़ाबिले क़ाष्त ज़रखेज़ क़तअ अराज़ियात।

भाऊली (स्त्री) खेत की पैदावार को ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान हिस्सा ए रसदी तक़सीम करने का तरीक़ा।

भाई भाँट (स्त्री) जागीर की आमद्नी से मुषतरक ख़ानदान के अफराद को गुज़ारा देने का तरीक़ा।

भय्या चारह ( ) देखें भाई भांट।

भब्रा (स्त्री) देखें चिक्कन।

भतमई (स्त्री) गन्ने की पेराई यानी बोने का तरीक़ेकार।

भटिया (स्त्री) ज़िला हिसार के इलाक़े की ज़रई अराज़ियात जो भट्टी राजपूतों के क़ब्ज़े और काष्त में होने की वजह से भटिया कहलाती और अर्फ़े आम में ज़मीन की उमदा क़िस्म समझी जाती है।

भदमार (स्त्री) गन्ने की काष्त के लिए तैयार की हुई ज़मीन।

भदई/भदाई (स्त्री) वह जिंस जो भादों के महीने यानी आख़िर बरसात में बोई जाने के क़ाबिल हो।

भुरारी रात (स्त्री) सुबह का छुटपुटा वक़्त, पौ फटने का वक़्त जब किसान हल लेकर खेत को जाता है। आख़िर जाड़ों में इस वक़्त घर से निकलना तकलीफ़ और बीमारी का बाअ़िस समझा जाता है।

कहावत

माह भुरारी, जेठ दोपहरी, सावन साँझे कार।
कहे कबीर सुनो भाई साधू यह तीनों हैंगा खुवार।।

भरन (स्त्री) बीच बरसात की बारिष जो दिनों बराबर बरसती रहे और तरी से ज़मीन खूब नर्म हो जाये। ज़मीन पानी से भर जाये।

भराऊमीना ( ) देखें भरन।

भरत (स्त्री) दण्ड, ताज़ीरी टेकस, तावान जो किसी वाहिद शख़्स या जमात की तरफ से दाख़िले सरकार किया जाये।

भरवा/भरोनी (पु0) देखें खलियाँ।

भिड़बोनी (स्त्री) धनी बुवाई जिसमें बीज बराबर–बराबर मिला हुआ डाला जाये या भड़वाँ बुवाई।

भस्म (स्त्री) (संस्कृत भस्मन बमानी राख और भुस बमानी दलदल) काष्तकारी इस्तिलाह में ऐसी खेती को कहते है जो मैंह की ज़ियादती से गल जाये। **होना** के साथ बोला जाता है।

भुसयार (पु0) दायीं चला हुआ अनाज जिसमें भूसा मिला हुआ हो।

भुसैरा/भुसैला (पु0) अनाज की ऐसी पौध जिसमें बाले कम और पत्ते ज़ियादा पैदा हों और तैयारी पर भूसे की मिक़दार ज़ियादा निकले। इस हालत को पौधों का रोग कहते हैं।

भुसैंड़ी (स्त्री) संस्कृत भुस या विष बमानी चुभना (नोंकदार चीज़ का अंदर को घुसना, काष्तकारी इस्तिलाह में ऐसी जड़ को कहते हैं जो सीधी ज़मीन में उतरती जाये जैसे गाजर मूली की जड़।

भमोतिया (स्त्री) कातिक के महीने में बोई हुई जुवार जो शुरू जाड़े में गल्ले के लिए बोई जाये।

कातीका ( ) देखें भमोतिया।

भंटा (पु0) भत्ते का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ जो भात से मुष्तक़ है। काष्तकारी इस्तिलाह में हल वाले को यौमिया, या रोज़ीना खूराक जो रोज़ाना दी जाये।

भुन जीरिया/भुन जीरा (पु0) मकई के भुट्टे के ऊपर निकले हुये बाल भुन (फुन) बमानी चोटी। **जीरा**, ज़ीरे का हिन्दी तलफ़्फ़ुज़। **2.** मकई के दरख़्त का फूल जो तुर्रा कहलाता है।

भंडसाली (पु0) वह काष्तकार या मुस्ताजिर जो अनाज का ज़ख़ीरा जमा रखे। **2.** बर्तन रखने की कोलकी।

भंडसारी ( ) देखें भंडसाली।

भंगी (पु0) एक क़िस्म का कीड़ा जो गन्ने की पौध में पैदा हो जाता और उसको बरबाद कर देता है।

भूड़ (स्त्री) दरिया के चढ़ाव की रेतीली ज़मीन जिसमें पानी अंदर जज़्ब हो जाने की वजह से हमेषा खुष्क रहती है या बालू की खुष्क ज़मीन।

भूड उड़ानी (पु0) रेत का मुतहर्रिक टीला जो हवा से उड़कर एक जगह से दूसरी जगह जा लगे ऐसे मुक़ाम के क़रीब खेती करना नुक़सान का बाअ़िस होता है।

भूड़ तराई (स्त्री) दरिया के धारे की रेतीली ज़मीन जहाँ से दरिया का धारा पलट गया हो ऐसी ज़मीन में तरी ज़ियादा होती है और जगह जगह पानी के झरे होते हैं।

भूड़ ठंडी (स्त्री) सर्द और खुष्क रेतीली ज़मीन जिसमें पानी बहुत नीचे हो और नाक़ाबिले काष्त रहे।

भूड़ सवाइया (स्त्री) देखें दूमट।

भूम भाई (पु0) एक ही अराज़ी के दो मालिकाना हक़दार या हम वतन।

भूम हारा (पु0) किसी ज़मीन पर मुष्तरक क़ब्ज़ा या सुकूनत रखने वाला।

भूमिया (पु0) कमाटची (मालाबार), कोमटी (दकन)। वह काष्तकार जिसको फ़ौजी ख़िदमत के मुआवज़े में अराज़ी ए मज़रूआ इनायतन दी गयी हो। फौजी ख़िदमत की जागीर रखने वाला, दकन के बाद बड़े शहरों में लफ़्ज़े कमाटन घर की ख़ादिमा के लिए बोला जाता है और लफ़्ज़ भूमिया राजपूताने की इस्तिलाह है। भूम बमानी ज़मीन।

भूमियावत (स्त्री) मालिकाना हक़्के ज़मीनदारी।

भूई (पु0) गाँडों के गाँव का सरदार।

भाँडा/भाँडी (पु0/स्त्री) लफ़्ज़ भूम का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। गाँव की मुख़तसर क़तअ़ अराज़ी जो देही मकीनों के लिए अलाहिदा कर दी जाये।

भई वत (स्त्री) गाँव की बिरादरी या पंचायत।

भेतौरी (स्त्री) देखें बसौरी।

परजोत ( ) देखें बेसाव्री।

भेट (स्त्री) पान की कियारियों का थाव्ला का मुंडेर का घेरा। **2.** पान की बेल लगाने को किसी तालाब के किनारे की ऊँची ज़मीन या पुष्ता।

भेड़ (स्त्री) अरहर के दरख़्तों का अम्बार जो फलियाँ निकालने को लगाया गया हो।

भेड वाँस (स्त्री) रात के वक़्त खाली खेत में भेंड़ों का गल्ला छोडकर ज़मीन को खदियाने का तरीक़ा। भेड़ों की कसीर तादाद जो रात भर खेत के क़तअ़ में ठहरकर जगह–जगह पेषाब और मेंगनी करती और रौंदती है वह ज़मीन के लिए बहुत उमदा खाद हो जाती है।

भेसोरा (पु0) भेस बदला हुआ। लकड़ी वग़ैरह का बनावटी आदमी जो जंगली जानवरों को खेत में आने से डराये। **देखें** बिचका।

भेंट (स्त्री) ज़मीनदार का नज़राना जो तेहवार या तक़रीब के मौक़े पर उसको दिया जाये।

भय्या चारा (पु0) देखें भाई बाँट।

पाथू (स्त्री) देखें गुँधेल।

पाड़ (स्त्री) खेत के रखवाले का मचान जो खड़ी खेती के बीच में बाँसों का बना लिया जाता है ताकि रखवाला खेत के दरख़्तों से ऊँचा बैठकर रखवाली कर सके।

पाड़ा (पु0) खेत की पहली मर्तबा हलाई जिससे कटी हुई खेती की जड़ें साफ़ और ज़मीन हमवार करने का अमल मुराद होती है। **करना** के साथ बोला जाता है।

छाँटा ( ) देखें पाड़ा।

पाखर/पाखरे (स्त्री) देखें पोथ।

पाखली (स्त्री) खेत की ज़मीन हमवार करने की हल में लगाई हुई लकड़ी की सिल्ली (मोटा और भारी तख़्ता या सिलीपर) लकड़ी का भारी घिस्सा जैसा घोड़े को सधाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। **देखें** पेषा चाबुक सवारी भाग पाँच पृ0

रूहकानी ( ) रुख़ानी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। बढ़ई के एक औज़ार का नाम है जिससे लकड़ी की कोरें छीलकर साफ और सतह हमवार की जाती है। **देखें** पाखली।

पाला (पु0) जाड़े की सर्द और खुष्क हवा जो खेती को जला दे। **पड़ना मारना, लगना** के साथ बोला जाता है।

कहावत

जै दिन पोह में पाला पड़े।
तै दिन जेठ नोयीं चले।।

पालामारी खेती (स्त्री) वह खेती जो खुष्क और सर्द हवा के लगने से मुरझा गयी हो और फलने की उम्मीद न हो।

पालू (स्त्री) वह खेत जिसमें सिर्फ एक फ़सल हो अद्ना क़िस्म की कम लगान ज़मीन।

एक फ़रदी ( ) देखें पालू।

पान धार (स्त्री) आबपाषी की ज़मीन। नहरी या चाही।

पाँचा (पु0) खलियान उलट पलट करने का पंज शाखा।

पाँचादोई (स्त्री) काष्तकार और ज़मीनदार के दरमियान तक़सीमे पैदावार का 2/5 और 3/5 हिस्सा रसदी।

पाँसना/फाँसना (क्रिया) गन्ने की आँखदार पोरों के कियारियों में दबाना जहाँ वह फूट कर चंद रोज़ परवरिष पाये ताकि खेत में मुंतक़िल करने के क़ाबिल हो जाये।

पाँगू (स्त्री) पानी की मार पर खाने वाली ज़मीन। **देखें** खादर।

पानी खेत (पु0) देखें पान धार।

पाह (स्त्री) देखें पगडंडी।

पाही/पाई (पु0) काष्तकार का काष्तकार या रअ़िय्यत, वह किसान जो काष्तकार से ज़मीन लेकर खेती करे या उसका साझी हो जाये। 2. दूसरे गाँव में जाकर काष्त करने वाला किसान, **उड़ीसा** में बोला जाता है।

कहावत

बगर बराले जोर है माने तिरया की सीख।
यह तीनों रह जायें गे पाही जो बो दे ईख।।

पाई (स्त्री) घुन की क़िस्म का कीड़ा जो कोठी के अनाज में पैदा हो जाता है।

पबेरा/पवेरा (पु0) अनाज की फ़सल का बीज बोना। **देखें** पैरना 2. बिखरी यानी छिदरी बुवाई।

पिताई (स्त्री) गन्ने का सर शाख़ा या ऊपर के पत्ते।

पत्री (स्त्री) खेत की ज़मीन हमवार करने के हल का दूसरा नाम। **देखें** हँगा।

पुत्लीघर (स्त्री) संस्कृत पुत्राका बमानी कपास का बिनोला निकालने की चरख़ी।

पतोतन देना (क्रिया) क़र्ज़ा उतरे तक गाँव बिलक़ब्ज़ रहन रखना।

पतोई (स्त्री) देखें पत्री और हँगा।

पतेला/पटेला (पु0) देखें पत्री और हँगा।

पटावन (स्त्री) आध्आना फी पट्टा पतवारी का नज़राना जो वह बतौर हक़्क़े ख़िदमत पट्टादार से वसूल करता है।

पटपर/पटपड़ (स्त्री) दरिया के किनारे की नौ बरआमद ज़मीन जो साल ब साल बढ़ती है। 2. बड़ा खुला मैदान जहाँ फौज क़याम कर सके।

पटपरी (स्त्री) चने के पौधे के फूलने की अलामत। 2. चने की फूली हुई पौध।

पट्टा (पु0) ज़मीन को लगान पर देने की दस्तावेज़ जिसमें ज़मीनदार का क़ौलो क़रार तहरीर होता है और काष्तकार के पास रहती है।

पट्टा दवामी (पु0) अराज़ी मज़रूआ को हमेषा के लिए लगान पर दे देने की तहरीर जिस की रू से काष्तकार ज़मीन से बेदख़ल नहीं किया जाता जब तक वह मुक़र्रिरा लगान अदा करता रहे और वह अपना हक़ दूसरे को मुंतक़िल कर सकता है।

पट्टू (पु0) देखें नागर या नागल।

पट्टी (स्त्री) पूरे गाँव का कोई हिस्सा।

पट्टीदार (पु0) गाँव की किसी पट्टी का मालिक।

पट्टीदारी (स्त्री) गाँव की पट्टी रखने का हक़ जिसका इंतिज़ाम पट्टीदार खुद करता है और अपना सरकारी लगान नम्बरदार के ज़रिये अदा करने का ज़िम्मेदार होता है। खिलाफवर्ज़ी की सूरत में सब पट्टीदार लगान की अदायगी के ज़िम्मेदार होंगे। ज़मीनदारी के इस तरीक़े को पट्टीदारी मुकम्मल कहा जाता है। दूसरी सूरत पट्टीदारी ग़ैर मुकम्मल कहलाती है इसमें पट्टी का कुछ हिस्सा अलाहिदा अलाहिदा होता है और कुछ मुष्तरक ऐसी हालत में सरकारी लगान मुष्तरक हिस्से से अदा किया जाता है।

पट्टेदार (पु0) ज़मीन के क़ब्जे का हक़ रखने वाला ज़मीनदार की दी हुई सनद रखता हो।

पड़ौंथा (पु0) देखें पत्री और हँगा।

पटनी (स्त्री) वह अराज़ी या खेत जो ज़मीनदार अपनी जागीर से एक मुक़र्रिरह लगान पर दवामी तौर से दे दे। 2. **दरपटनी** पटनीदार जो अपने हक़ से असली शरायत पर किसी दूसरे को कुछ छोटे हिस्से का मालिक बना दे। 3. **दरपटनी** का छोटा हिस्सा **सह पटनी** कहलाता है।

पटनीदार (पु0) देखें पटनी।

पटवारी (पु0) गाँव का नवीसंदा, गाँव की अराज़ियात सरकारी खातेदार जो गाँव की पैदावार की कमी, बेषी और जमा व ख़र्च का हिसाब रखे। उसके पास 1. ख़स्रह 2. जमा बंदी 3. फ़स्ली 4. फ़र्द बाग़ात 5. दाख़िल ख़रिज खेवट 6. वासिल बाक़ी 7. बझावट 8. रोज़नाम्चा 9. सियाहा 10. खाता 11. नक़्षा जिंस वारी 12. मिलाने खसरह; सरकारी रजिस्टर रहते हैं।

पटौली (पु0) ज़मीनदार और असामी के दरमियान काम की तक़्सीम का इक़रार।

पटेल (पु0) देखें नम्बरदार।

पटेला (पु0) हल की क़िस्म। **देखें** पत्री और हँगा।

पुचार (पु0) ज़िला इटावा की इस्तिलाह, नषेबी ज़मीन जो दरिया या नहर के पानी के रिसाव से खूब सैराब होती रहे। इसमें बाज़ हिस्से ऊसर होते हैं जिसके वस्त में दलदल पैदा हो जाती है या चष्मा निकल आता है। जिसमें छोटे नाले बह निकलते हैं।

पच अंगड़ (पु0) खलियान को उलट पलट करने की पंज शाखा छड़।
पच उंगला (पु0) देखें पचअंगड़।
पच अंगूरा (पु0) देखें पचअंगड़।
पछार (स्त्री) नषेबी ज़मीन जिसमें पानी आकर ठैरे।
पछवाँसी (स्त्री) देखें गुंधेल।
पछौत (स्त्री) आखिर मौसम की बोई हुई खेती।
पिछोड़ना (क्रिया) अनाज उड़ाना, बरसाना, दानों से भूसे को जुदा करने का अमल।
पधान (पु0) गाँव का मुखिया या गूजरों की जमाअ़त का नुमाइंदा।
पधानचारी (स्त्री) वह क़त़अ़ अराज़ी जो गाँव के चौधरी को खेती के लिए बतौर माफ़ी या बेलगान दी गयी हो।
पधनचरी (स्त्री) गाँव के मुक़द्दम या मुखिया का हक़ वसूले लगान सरकारी।
पुर (पु0) देखें माला।
पराल (पु0) धान का भूसा।
परबेदा (स्त्री) छिदरी तुख़्मरेज़ी।
परता/पड़ता (पु0) देखें पोता।
परताल/पड़ताल (स्त्री) खेत की पैमाइष की जाँच।
परता/परतल (पु0) पैदावार का तख़मीना, क़ीमत खरीद पर नफ़ा का औसत। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।
परती/पड़ती (स्त्री) देखें पड़ती।
परथया/परथी (पु0) परोथा को दूसरा तलफ़्फ़ुज़, हल की फार की नोक जो मिट्टी खोदती है उसको कुड़ाड़ी भी कहते हैं।
परजा (पु0) गाँव के कमेरे।
परजावत (स्त्री) किराया या महसूले अराज़ी जो कमेरों से लिया जाये। इसे टिकैना भी कहते हैं।
परछी (स्त्री) वह तख़ता जो बोने के बाद परहों पर फेरा जाये। ताकि मिट्टी बीज पर पड़ जाये।
परधान (पु0) देखें पधान।
परस्तू (पु0) खेत की जुताई का साझी किसान।
करसत ( ) देखें परस्तू।
ढंगवारा ( ) देखें परस्तू।
जेड़ा ( ) देखें परस्तू।
अँगवारा ( ) देखें परस्तू।
परगना (पु0) ज़िले का एक छोटा हिस्सा या तहसील, परगने से छोटे को पट्टा कहते हैं।
परवा (स्त्री) ज़र्दी माइल रंग की क़ाबिले आबपाषी हल्की रेतीली ज़मीन।
परवाना (पु0) हुक्मनामा जो हाकिम की तरफ से रइय्यत के नाम जारी किया जाये और इस पर हाकिम की मुहर लगी हुई हो।
परौता (पु0) ऐसा पल्ला, झोली या टोकरे की क़िस्म का ज़र्फ़ जिससे बरसाया जाये। **देखें** बरसाना।
परौथा/परैता (पु0) परथिया का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। **देखें** परथिया।
परहारी (स्त्री) देखें चोहन।
परेथ (स्त्री) देखें चाही ज़मीन।
परीहत (स्त्री) देखें मुठिया या हल।
पड़ती (स्त्री) अकारत, वह मज़रूआ़ अराज़ी जो कुछ अर्से के लिए बेकार छोड़ दी जाये ताकि उसमें कुव्वत पैदा हो, ख़र्च के मुक़ाबले में पैदावार कम होने की वजह से ज़मीन खाली छोड़ दी जाती है। **2. पड़ती जदीद** वह अराज़ी जो एक दो फसल तक अकारत रखी जाये। **3. पड़ती क़दीम** वह अराज़ी जो बहुत अर्से तक अकारत हो और उसमें अच्छी फसल पैदा होने की उम्मीद न रहे। वह खेत जो मौसमे सरमा में रबीअ़ की फसल के बाद खाली रहे

और दूसरी आनेवाली फस्ले रबीअ़ के लिए अच्छी तरह तैयार किया जाये।

पड़ती जदीद (स्त्री) देखें पड़ती।

पड़ती क़दीम (स्त्री) देखें पड़ती।

पक्का बीघा (पु0) हालिया पैमाइष के हिसाब से 3025 मुरब्बअ़ गज़ या 5/8 एकड़ का एक क़त्अ़ अराज़ी।

पगडंडी/पख डंडी (स्त्री) खेत के अंदर या किनारे एक आदमी के चलने का रास्ता जो कच्ची ज़मीन पर चलने और मुसलसल इस्तेमाल से पक्का निषान बन जाता है।

बटिया ( ) देखें पगडंडी।

पलास (पु0) एक क़िस्म का जंगली पौधा जिसपर लाख का कीड़ा परवरिष पाता है।

पिलौता (स्त्री) पीली मिट्टी की ज़मीन जो रेत और चिकनी मिट्टी की मिलवाँ और कुव्वत में अव्वल दर्जे की होती है।

पलोच/पालोच (स्त्री) वह खेत जो आनेवाली ख़रीफ की फ़सल पर खाली छोड़ दिया गया हो।

पलीहार (स्त्री) वह खेत जो तीन साल बोने के बाद एक फसल की मुद्दत तक खाली छोड़ दिया जाये।

पनाकाल (पु0) बारिष की कसरत से फसल की ख़राबी और क़हेत का होना।

पंटार (स्त्री) खेत में पौधों की निलाई यानी उनकी जड़ों के पास की घास निकालना और मिट्टी पोली करना। **करना** के साथ बोला जाता है।

पंदी ( ) देखें पलोच।

पंदड़ ( ) देखें पलोच।

साढ़ी ( ) देखें पंटार।

खोद ( ) देखें पंटार।

पुंजा (स्त्री) वह अराज़ी जिसकी आबपाषी आसानी से न हो सके।

पंज उंगला (पु0) देखें पंज अँगड़।

पन जोत्रा (पु0) नम्बरदार का हक़्क़े ख़िदमत जो मालगुज़ारी वसूल कराने पर पाँच फीसद सरकार से मिले।

पंच (पु0) देही सभा के पाँच नुमाइंदे। पंचात के पाँच रूक्न।

पंचायत/पंचात (स्त्री) देहीसभा, गाँव वालों की मज़लिसे इंतजामी जो आमतौर से पाँच मषहूर और मुअ़ज़्ज़िज़ गाँव वालों की अंजुमन होती है।। जो गाँव के अदालती और इंतज़ामी काम अंजाम देती है। **1. गाँवाँ पंचात** वह पंचायत जो सिर्फ अपने गाँव की हद तक इंतिज़ाम करे। **2. जवार पंचात** क़रीब क़रीब के गाँववालों की मिली जुली पंचायत जिसमें उन गाँव का एक एक आदमी शरीक होता है। **3. बाईसी पंचात** बाइस गाँव के चौधरियों यानी पंचों की पंचात। **4. पंचमुहाल पंचात** पाँच क़स्बात की मुष्तरका पंचात। **देखें** मुहाल। **5. चौरासी पंचात** चौरासी गाँव के चौधरियों यानी पंचों की सबसे बड़ी पंचात।

पंचमुहाल पंचात (स्त्री) देखें पंचात।

पंचनामा (पु0) किसी इंतिज़ामी या अदालती फैसले के लिए पंच और पंचो के फैसले के लिए राज़ीनामा लिखना। पंचो के फैसले को कुबूल करने का तहरीरी इक़रारनामा जो फरीकैन की तरफ से लिखा जाये।

कहावत

पाँच पंच कीजिए काज।
हारे जीते न आवे लाज।।

पन चँगोरा (पु0) हल की एक क़िस्म। **देखें** दँतियाला और हँगा।

पंदी (स्त्री) देखें पलोच या पालोच।

पंधी (स्त्री) हल की क़िस्म। **देखें** दँतियाला।

पंडर (स्त्री) देखें पलोच या पालोच।

पनमार (पु0) पानी मारी हुई खेती या पानी मारा हुआ खेत जो बारिष या दूसरे पानी की कस्रत से खराब हो गया हो।

पनहर (पु0) बनहर का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। काष्तकारी इस्तिलाह में बन यानी कपास के खेत से कपास चुनने वाला मज़दूर।

पनेर/पनेरी (स्त्री) बीज बोने और पौध तैयार करने की कियारी जिसमें ऐसे बीज बोये जायें जिनकी पौध पल्टी यानी एक जगह से निकालकर दूसरी जगह लगाई जानी जुरूरी हो। लफ़्ज़ पौध से पयाद और बोने से बेहन। काष्तकारी इस्तिलाह में बीज बोने की कियारियों से मुराज ली जाती है।

पनीला (पु0) वह खेत जिसमें पानी की आल इतनी ज़ियादा हो कि बीज गल जाये। **2.** दलदली ज़मीन।

पोता (पु0) लफ्ज़ पर्ता या पड़ता का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। काष्तकारी इस्तिलाह में पड़ती या अकारत ज़मीन का रस्मी लगान मुराद ली जाती है।

पूती (स्त्री) पोथी का ग़लत तलफ़्फ़ुज। **देखें** पोयी।

पोथ (स्त्री) पोथ बमानी कंकर। वह अराज़ी जो कंकरीली ढालू और टीलेदार अकारत, या नाक़ाबिले ज़राअ़त रहे।

पोथी (स्त्री) गट्टा, गठीली या गाँठदार जड़ जैसे आलू अरवी, लहसुन, पियाज वगैरह।

पोटिया (पु0) कठिया गेहूँ की एक क़िस्म का नाम जो किसी क़दर गोलाईदार होता है।

पौद (स्त्री) देखें बरोही।

पौदर (स्त्री) देखें पख डंडी।

पौधारी (स्त्री) देखें पनेरी।

पौरूत्सी (स्त्री) भूरे रंग की एक क़िस्म की ज़मीन जो रबीअ़ की फ़सल में अकारत रहती है।

पौरूदुरस (स्त्री) काली और सुर्ख मिली जुली मिट्टी का खेत जिसमें रबीअ़ की फसल बहुत अच्छी होती है लेकिन ख़रीफ़ की फसल पानी ज़ियादा होने पर बोई जाती है।

पौरू कोरिया (स्त्री) सुर्ख़ी माइल रंगत की मिट्टी का खेत जिसमें रबीअ़ की फसल आबपाषी से बोई जाती है।

पौरू केहरा (स्त्री) वह क़तअ़ अराज़ी जिस पर सज्जी और रेह की पतली तह जमी हुई हो इसमें दोनों फसलों की खेती खराब होती है। ज़ियादा बारिष हो तो बोई जाती है।

पूस/पोह (पु0) जाड़े के तीसरे महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारह मासा।

पोलच (स्त्री) वह पड़ती अराज़ी जिसमें खेती करते चार साल हो गये हों और हर साल बोई गयी है।

पौन टोटी (स्त्री) देखें चुंगी और चुंगी खाना।

पूई/पोई (पु0) गन्ने की पोर की गाँठ पर फुटाव का निषान कल्ला या आँख। क़रीब छः इंच ऊँचा गेहूँ का पौधा। **देखें** पंहर।

पोइया (पु0) फूटे हुये बीज की नई कोपल या बीज का फुटाव।

फटा (पु0) खेत में बैल या इसी क़िस्म के दूसरे मवेषियों के खुर के निषान जो खेत की हमवार सत्ह में गढ़हा डाले। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

पहरूआ (पु0) खेती की रखवाली करने वाला निगेहबान।

पहल (स्त्री) आलू बोने के लिए तैयार की हुई कियारी।

पही (स्त्री) रबीअ़ के अनाज का ढेर जो गाहने के लिए अंबार किया गया हो।

पयाद (स्त्री) देखें पनेर या पनेरी।

पयाल (स्त्री) चावल के दरख़्त का भूसा या सूखे पत्ते।

पूआल ( ) देखें पयाल।

पयार ( ) देखें पयाल।

पैदावार (स्त्री) खेती का हासिल जो मौसम पर जिंस बोने से हासिल हो। बाग़ की पैदावार जो फसल पर फल फूल की सूरत में मिले। **जंगली पैदावार** लाख, जंगली रेषम, गाँध और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दूसरी कार आमद दवायें, जड़ी बूटी शामिल है। जंगल में कारआमद लकड़ी के तक़रीबन सत्तर क़िस्म के दरख़्त होते हैं जिनके नाम की फेहरिस्त 'आईने अकबरी' में दर्ज है।

पैर/पैड़ (स्त्री) देखें खलियान।

पैरा/पैरगहा (पु0) तैयार खलियान। यानी वह खलियान जिनपर दायीं चल चुकी हो। भूसा मिला हुआ अनाज का अंबार।

कहावत

पैरगहा जो रखे पास।
बिन बरसाये न पावे रास।। ***1 असल माल।***

पीर औतार (पु0) फक़ीरों का मुक़र्रिरा रोज़ीना जो गाँव की मुष्तरिका आमदनी से दिया जाये।

पैर बटाई (स्त्री) जो उड़ान से पहले काष्तकार और जमीनदार के दरमियान हिस्सा रसदी बाँट ली जाये।

खलियानी बटाई ( ) देखें पैर बटाई।

पैरनी (स्त्री) तुख़्म रेज़ी, खेत में बीज की बुवाई।

पैरिया (पु0) वह जुवार जिसके दरख़्त का भुट्टा सीधा रहने के बजाये ज़मीन की तरफ झुक जाये। इस नुक़्स की वजह से उसकी तैयार देर में होती है।

पेड़ी (स्त्री) खेत के अंदर लगे हुये दरख़्त के फल फूल के इस्तेमाल का लगान जो ज़मीनदार को दिया जाये।

पेक (पु0) रात के वक़्त गाँव के गिर्द फिर कर बस्ती की निगरानी करने वाला चौकीदार। जो वक़्फ़े वक़्फ़े से रात को बस्ती और गाँव के अतराफ़ फेरा लगाना और हुष्यार करता है।

पैकाषी (पु0) गैर वतनी या परदेसी काष्तकार जिसको अराज़ी मज़रूआ पर मालिकाना हक़ हासिल न हो सिर्फ मुआहिदा ए मुक़र्रिरा की रू से काष्त करता रहे।

पीलिया (स्त्री) वह खेत जिसकी मिट्टी में रेत की मिक़दार किसी क़दर ज़ियादा हो।

पीसी/पिसिया (स्त्री) गेहूँ की एक उमदा क़िस्म जो सफेद और नर्म होता है इसका आटा बहुत अच्छा होता है।

पेषकाष्त (स्त्री) खेती करने का पेष्गी लगान।

पैंट/पेट (पु0) गाँव का वक़्ती बाज़ार जो रोज़ाना किसी वक़्त या हफ्ते में एक मर्तबा एक मुक़र्रिरा मुक़ाम पर लगे। **भरना** के साथ बोला जाता है।

फार/फाल (स्त्री) हल का आहनी फल या भाला जो ज़मीन तोड़ता या नाली खोदता है। **देखें** हल।

फार कुटाई (स्त्री) फार पिटाई, हल की फार को दुरुस्त और तेज़ करने की लोहार की उजरत।

फार पिटाई ( ) देखें फार कुटाई।

फारी (स्त्री) हल की फार की नोंक या नुकीला सिरा।

फाँदी (स्त्री) गन्नों का गट्ठा। फलंदे का इस्मे मुसग्गर।

फास/भास (स्त्री) दलदली ज़मीन या वह ज़मीन जिसमें किसी चष्मे के पानी का रिसाव जारी रहे जिसकी वजह से वह कीचड़ बन जाये और काष्त के क़ाबिल न हो।

फागुन (पु0) बसंत रुत यानी मौसमे बहार के महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारह मासा।

कहावत

बरस दिना के तीन रुत।
सावन, संत, बसंत।।
एक दिन ऐसा होये गा।
तिरया न चाहेगी कंथ।।

फुटाव (पु0) अंकुर, बीज से पौधे का निकास।

फिरौती (स्त्री) सरकारी लगान की बक़ाया रक़म की अदायगी।

फिरोई (स्त्री) खेत की सतह हमवार करने का हलकी क़िस्म का हल जिसमें एक सपाट तख़्ता ज़मीन बराबर करने को लगा होता है।

फन्ना (पु0) परहारी और नागर के जोड़ में फँसी हुई चोबी मेंख। **देखें** हल।

फूट (स्त्री) ककड़ी की क़िस्म के एक फल का नाम।

कहावत

खेत में उपचे सब कोई खाये।
घर में होये घर बह जाये।।

फूटना (क्रिया) बीज से पौधा निकलना।

जमना ( ) देखें फूटना।

निकसना ( ) देखें फूटना।

फोकी ज़मीन (स्त्री) वह ज़मीन जिसकी मिट्टी फूली हुई हो और ज़रा से दबाव या वज़न से नीचे धसे ऐसी जमीन में बीज कम फूटता है बल्कि नहीं फूटता। अलबत्ता जड़ी ले पौधे खूब जमते हैं।

पोली ज़मीन ( ) देखें फोकी ज़मीन।

तामना (क्रिया) हल चलाने से क़ब्ल खेत की घास और जड़ें निकालना।

पोली ज़मीन ( ) देखें फोकी ज़मीन।

तरा (पु0) एक क़िस्म के सन का पौधा जिसके बीज को **अल्सी** और रेषे को **कतान** कहते हैं।

तरामिरा (पु0) देखें तरा।

तरावट (स्त्री) पानी की तरी का असर। **देखें** आल।

तराई/तलाई (स्त्री) देखें खादर।

तड़ख़/तड़ख़न (स्त्री) काली या चिकनी मिट्टी की ज़मीन की फटन जो पानी खुष्क हो जाने से पैदा होती है। यह कैफ़ियत खेती के लिए नुक़सानदेह होती है।

तरमाई (स्त्री) पानी की सेल जो ज़मीन के अंदर से ऊपर आये और बीज के जमने के लिए मुफीद हो। **आना** के साथ बोला जाता है।

तरवाई सिरवाई (स्त्री) पस्त व बुलंद ज़मीन। **2.** पहाड़ की तलैटी के क़ाबिले काष्त अराज़ी। **देखें** खादर और बाँगर।

तरी (स्त्री) दरिया के धारे के दोनों तरफ की अराज़ियात जो पानी की नमी की वजह से घनी झाड़ियों और दरख़्तों से ढकी रहे।

बेला ( ) देखें तरी।

तरी हार (स्त्री) नद्दी, नाले या दरिया के धारे की ज़मीन जो धारे का रुख़ बदलने से निकल आई और क़ाबिले क़ाष्त हो गयी हो ऐसी ज़मीन खेती के लिए बहुत अच्छी समझी जाती है।

तअ़ल्लुक़ा (पु0) सूबा अवध की इस्तिलाह। ज़रई अराज़ियात का एक बड़ा रक़बा जो ज़िला का एक हिस्सा और बहुत से गाँव, खेड़ों का इलाक़ा होता है सरकारी क़ब्ज़े में हो तो तहसील और जागीरदार की मिलकियत हो तो तअ़ल्लुक़ा कहलाता है जिसको तअल्लुक़दार कहते हैं।

तअल्लुक़ेदार (पु0) रियासत हैदराबाद में ज़िला के अफ़सर माल का लक़ब। जिसे कलक्टर भी कहा जाता है।

तक़ावी (स्त्री) सरकारी इमदाद बवक़्ते जुरूरत काष्तकार को ज़राअ़त के काम को सुधारने के लिए जिंस या नक़दी की सूरत में बतौर क़र्ज़ दी और बइक़सात वसूल की जाये।

टिकोर (स्त्री) 1/3 और 2/3 की निस्बत से ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान

सेर या खुद काष्त अराज़ी की पैदावार की तक़सीम का मुआहिदा।

तिल (पु0) एक क़िस्म का रौग़नी तुख़्म।

तलाबी (स्त्री) तालाब के पानी से सैराब होने वाली ज़मीन। **2.** तालाब के नवाह की अराज़ियात जिसमें तालाब के पानी के रिसाव का असर रहे। पानी के रिसाव की ज़ियादती ज़मीन को नाक़ाबिले काष्त बना देती है क्योंकि इसमें बीज गल जाता है और एक क़िस्म की काही या कंजाल ज़मीन की सतह को ढके रहती है। **3.** वह अराज़ी जिसमें तालाब का पानी आ जाये।

तलावन (स्त्री) देखें तालाबी।

तलगंज (पु0) देखें खत्ती।

तिलहन (स्त्री) रौग़नी तुख़्म। **देखें** भाग तीन पृ0

तमलैक नामा (पु0) सनद मिलकियते अराज़ी जो ज़मीनदार काष्तकार के हक़ में लिख दें।

तिनचस (स्त्री) तीन मर्तबा हल चलाया हुआ खेत। **देखें** पट्टा और पट्टा दवामी।

तिन्नी (पु0) एक क़िस्म का जंगली चावल।

तोदा (पु0) संस्कृत तंदा बमानी मिट्टी का छोटा सा ऊँचा बनाया हुआ ढेर। काष्तकारी इस्तिलाह में खेत की हद के निषान को कहते हैं जो मिट्टी के ढेर या गुमटी की शक्ल बना हुआ हो।

तहफारा ( ) तीन फार का हल। **देखें** हल।

तीर (स्त्री) दरिया के किनारे की रेतीली पट्टी जो खतेरी और खादर के दरमियान वाक़े हो।

तीरा (पु0) दरिया का ऊँचा किनारा। यह इस्तिलाह दरिया ए गोमती के किनारे के लिए मख़सूस और मुक़ामी है।

थाप (स्त्री) पंचायती फैसले का इत्मीनान देना। यह इस्तिलाह लफ़्ज़ थपकना से बनाई हुई मालूम होती है जिस से पुचकारना, दिलासा और इतमिनान देना मुराद ली जाती है। दकन के बाज़ मुक़ामात पर थाप देना तस्कीम और दिलासा देने या झूठमूठ समझा देने के मानों में बोला जाता है।

थाक/थोक (स्त्री) देखें तोदा।

थाली (पु0) देखें पाही और रअ़िय्यत।

थानियत (पु0) एक मुक़र्रिरा ज़ेरे निगरानी जगह पर रहने वाला चौकीदार लफ़्ज़ थान से थाना और थानियत बनाया गया है।

थर/थल (स्त्री) थल संस्कृत बमानी सथला। राजपूताना और सिंध के हुदूद का रेगिस्तानी नाक़ाबिले काष्त इलाक़ा। सैराब न होने वाला दवामी खुष्क इलाक़ा।

थोक ठेलन (स्त्री) पट्टीदार या भय्या चारे की ज़ेली तक़सीम जो दो या दो से ज़ियादा पट्टियों में होती है।

थोकदार (पु0) गाँव की दो या दो से ज़ियादा पट्टियों का ज़मीनदार।

टापा/टापर (स्त्री) देखें टप्पर।

टाँकी (स्त्री) किसी फल या तरकारी को थोड़ा सा काटकर बानगी देखने यानी उसका रंग और मज़ा मालूम करने और कच्चा पक्का मालूम करने का तरीक़ा। आमतौर से तरबूज, खरबूज़े और ककड़ी पर यह अ़मल किया और टाँकी लगाना कहा जाता है।

टाँड (पु0) देखें मचान।

टप्पा (पु0) खेत की हद बंदी का निषान। **2.** मुहल्ला सर बस्ता या वह क़िला या गाँव जिसमें एक ही क़बीले के लोग रहते हों। **3.** परगने का दाख़ली गाँव। **देखें** तोदा और परगना।

टप्पड़ (पु0) टापू का ग़लत तलफ़्फुज़, काष्तकारी इस्तिलाह। खेतों के दरमियान ऐसी पथरीली और ऊँची ज़मीन को कहते हैं जिसमें क़ाष्त न हो सके।

टका बीड़ा (पु0) तेहवार या किसी तक़रीब के मौक़े का नज़राना जो काष्तकार

ज़मीनदार को दे। इस नज़राने की कम से कम मिक़दार पान का एक बीड़ा और नक़दी का एक टका होता है। इसलिए इस्तिलाह में इस नज़राने का नाम टका बीड़ा हो गया। अगर ज़मीनदार इस नज़राने को कुबूल न करे तो काष्तकार को ज़मीन से अलाहिदा करने का इरादा समझा जाता है।

टिकैना (पु0) लफ़्ज़ परजा से मुषतक़। **2.** मवेषी के चारे का महसूल जो पड़ती ज़मीन से लाया जाय और काष्तकार ज़मीनदार को दें। **देखें** परजावत।

टुमरी/तुमरी (स्त्री) संस्कृत तम्बा जो आमतौर से तौंबा कहलाता है बमानी कद्दू, लम्बा घिया। इसमें से एक क़िस्म गेंद की शक्ल होती है उर्दू में उसी को तौंबा कहते हैं।

टुंडा (पु0) गेहूँ और जौ की बाल का खुरदुरा बारीक तिंका जो हर दाने के ख़ोल के ऊपर होता है, खुरदुरेपन की वजह से कपड़े पर चिमट जाता है।

टुंकी (स्त्री) टिड्डी का दूसरा तलफ़्फुज़। कीड़ों की क़िस्म का परदार बड़ा कीड़ा जो कभी कभी अपने मामन से कसीर तादाद में निकलता और खेतों पर यूरिष करके खड़े खेतों को तबाह व बरबाद कर देता है जहाँ पड़ता है लाइलाज होता। **2.** गंडासा।

टोका (पु0) पंजाब और सिंह के इलाकों में टिड्डी का दूसरा नाम।

टैंट (पु0) देखें ढोडा।

ठिरमरूआ (पु0) देखें पालामार खेत।

ठिर्वा (पु0) देखें पाला।

ठैंटा (पु0) चने का ढोडा। **देखें** ढोडा और ढैंडा।

जाब (स्त्री) लफ़्ज़ झाब का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** झाब।

जब्सिया (स्त्री) जवाँसा की झाड़ी का क़त्अ अराज़ी। जवाँसा एक झाड़ी का नाम है। जो गर्मी की षिद्दत में सरसब्ज़ होती है इस की जड़ें ज़मीन में बहुत गहरी जाती और . . . फैली रहती है जिस ज़मीन में यह झाड़ पैदा हो जाये वह काष्त के क़ाबिल नहीं रहती।

जुतेरा (पु0) साझे की जुताई यानी हल चलाई का तरीक़ा जिसमें दोनों काष्तकार अपना अपना बैल मिलाकर जोड़ बनाते हैं और हल चलाते हैं।

जरेब (स्त्री) खेत की पैमाइष की एक नाम जो 55 गज़ लम्बी होती है कच्ची पैमाइष में बाज़ जगह 22 गज़ की भी एक जरेब लिखी है। पैमाइष का पैमाना इस तरह है कि 3 गज़ एक गट्ठा।

20 गट्ठा/55 नम्बरी गज़ = एक जरेब।

एक मरबअ़ जरेब = एक बीगः

10 मरबअ़ जरेब = एक एकड़।

एक बीगः में तक़रीबन नौ मन अनाज की पैदावार का अंदाज़ा किया जाता है।

जड़हन (स्त्री) धान की पौध जो कियारी से खेत में मुंतकिल करने के लायक़ हो गयी हों। जड़हन की वजह तस्मिया जड़ है जिससे मुराद ऐसी पौध होती है जिसकी जड़ें इतनी बढ़ गई हों उखाड़ने में उनके टूटने का अंदेषा न हो। बाज़ मुक़ामी बोलियों में **घानी** कहते हैं यानी अगहन के महीने में कियारी से निकालकर खेत में लगाई जाने वाली पौध।

जड़ैता (पु0) देखें जड़हन।

छोरा ( ) देखें जड़हन।

जलाली (पु0) उमदा क़िस्म का कठिया गेहूँ जिसका रंग सुर्ख़ी माइल और दाना लम्बा होता है जो ख़ानदेस या दखन के किसी ज़मीनदार या जागीरदार के नाम से मौसूम हो गया है।

जलालिया (पु0) इस गेहूँ का रवा बनाया जाता है। **देखें** जलाली।

जमअ़ (स्त्री) सरकारी लगान या महसूल जो ज़मीन की आमदनी से वसूल और मुल्क के ख़ज़ाने में हो। इस आमदनी की मुंदर्जा ज़ेल दो क़िस्मे हैं। **~असल या लगान** मुल्क की आमदनी जो मुल्क की जुरूरियात के लिए महफ़ूज़ और मुख़तस हो। **~धारा** (धरना छः गाँव ख़र्च, मलबा) वह रक़म चंदा जो गाँव के मुष्तरक अख़राजात के लिए सरकारी तौर पर घर और खेत पीछे लिया जाये। **~फसल (अब्वाव)** लगान के अलावा दूसरे ज़राये आमदनी मस्लन घाट उतरवाई, पहाड़ और जंगल की आमदनी वगैरह। **~संगीन** वह महसूल जो लगान के अलावा फ़ौजी या इसी क़िस्म की किसी दूसरी जुरूरत के लिए लिया जाये।

~असल (स्त्री) देखें जमअ़।

~बंदी (स्त्री) ज़मीन की पैदावार और आमदनी की मुफस्सल सरकारी खतौनी।

~धारा (स्त्री) देखें जमअ़।

~संगीन (स्त्री) देखें जमअ़।

~फ़सल (स्त्री) देखें जमअ़।

~गुज़ार (पु0) जमअ़ वसूल करके ख़ज़ाने में दाखिल करने वाला सरकारी नुमाइंदा जो ज़मीनदार की तरफ़ से काष्तकार से वसूल करने का मजाज़ होता है।

जमोगदार (पु0) देखें मुस्ताजिर।

जंदरा (पु0) खेत में कियारियों की मेंड़ बनाने का फावड़े की क़िस्म का औज़ार।

जिंस (स्त्री) हर क़िस्म की ज़रई पैदावार, गल्ला, खुराकी अष्या।

~फेर (स्त्री) जिंस से जिंस का तबादला। **करना** के साथ बोला जाता है।

~पसरना (क्रिया) बोई हुई जिंस का जमना और फूट निकलना।

~गदराना (क्रिया) हर क़िस्म की खेती का तैयारी पर आना, अनाज की बालों में दानों का सख़्ताना।

जिंसी बटाई (स्त्री) खेती की पैदावार की हिस्सादारों और कारिंदों में हिस्सा ए रसदी तक़सीम करना। **करना** के साथ बोला जाता है।

जंगलबरी/जंगल बरी तअ़ल्लुक़ (स्त्री) वह अराज़ी जो जंगल को काटकर खेती के लिए निकाली गयी हो।

जनमकार (पु0) सरकार से हासिलषुदा अराजी पर हक़्के मालिकाना रखने वाला काष्तकार जो बराहे रास्त सरकार को लगान अदा करे और बेदख़ल न किया जाये।

मीरासदार ( ) देखें जनमकार।

मीराकी ( ) देखें जनमकार।

जनमी कुरसन (पु0) देखें जनमकार।

जौ (पु0) गेहूँ की एक क़िस्म का अनाज जिसपर भूसे की क़िस्म का छिल्का मंढ़ा होता है। **2.** दाने के सर पर लगा हुआ बारीक और खुरदुरा तिनका जो गँवारी ज़बान में टंड़ा कहलाता है।

जवाली (स्त्री) जौ मिला हुआ गेहूँ। **2.** जौ का मिला हुआ भूसा।

जुवार (स्त्री) एक क़िस्म का अनाज जिसका दाना सफेद और मटर की तरह गोल होता है इसका शुमार मोटी क़िस्म के अनाज में किया जाता है।

जुवारा (पु0) जौ या जुवार के पौदे की शक्ल की घास या हरियाली। **2. छोटा खेत** एक जोड़ बैल की खेती यानी जो एक जोड़ी बैल से तैयार की जा सके।

जुवार पंचात (स्त्री) देखें पंचायत या पंचात।

जोत (पु0) देखें गुंधेल या हल।

जोतार/जोतिया (पु0) देखें हाली।

जोताऊ/जुताऊ (स्त्री) क़बिले काष्त अराज़ी यानी ऐसी अराज़ी जो खेती बाड़ी के लायक़ बनाई जा सके। **2.** वह अराज़ी जिसमें खेती की जाती हो यानी आबाद हो।

जोतुर (स्त्री) देखें जोताऊ या जुताऊ।

जोतन (स्त्री) देखें जोत्ना।

जोत्ना (क्रिया) बैल या दूसरे बारबरदारी के जानवर को गाड़ी में जोड़ना (गाड़ी या किसी दूसरी चीज़ को खिंचवाने के काम पर लगाना) काष्तकारी इस्तिलाह में खेत में हल चलाना और तुख़्मरेज़ी के लिए उसको तैयार करना मुराद ली जाती है। जिसको वह अपनी रोज़मर्रा में खेत जोतना, ज़मीन जोत्ना कहते हैं।

कहावत

मैंढ़ बाँध दस जोतन दे।
दस मन बीगः मू पे ले।।

जोतियान (स्त्री) दो फस्ला खेत यानी वह खेत जिसमें दो फ़स्लें बोई जाती हों।

जौठान (पु0) देखें जोतियान।

जोघन/जोतन (स्त्री) हल से बैलों को बाँधने की रस्सी। देखें जोत भाग पाँचा पृ0

जौर (स्त्री) एक क़िस्म का भारी हल। **देखें** जोतियान।

जोगरा (स्त्री) हल में जुवा बाँधने की रस्सी जो मुक़ामी बोलियों में **नधा, नाधी, नरेली** और **हरनाध** भी कहते हैं। नरेली, नारियल के रेषों की बनी हुई **नधा** या **नाधी** बमानी रस्सी और **हरनाध** बैल की रस्सी को कहते हैं।

हरनाध ( ) देखें जोगरा।

जोगनिया (स्त्री) बड़े दाने की सुर्ख़ी माइल रंगत की जुवार।

जौ मटरा (पु0) जौ और मटर मिलवाँ बोया हुआ खेत। **2.** जौ और मटर का मिलवाँ ग़ल्ला।

जूनार/जूनाल (पु0) वह खेत या क़त्अ अराज़ी जो रबीअ की फसल काटने के बाद खाली छोड़ दिया गया हो। कभी कभी ईख की काष्त के लिए दो तीन फ़सलों तक ख़ाली छोड़ी जाती है ताकि उसमें कुव्वत आ जाये।

जोता ( ) पुराना।

जूनी (स्त्री) देखें जूनार या जूनाल।

जेठ (पु0) गाँव का सरे गिरोह, बड़ा आदमी, पंच, चौधरी। जेठ बमानी बड़ी और मुक़द्दर हस्ती यानी मर्तबे वाला। **2.** गर्मी के मौसम के तीसरे महीने का हिन्दी नाम जिसके दिन साल के सब दिनों से ज़ियादा बड़े होते हैं और मौसमे गर्मा अपने इंतिहा पर होता है। **देखें** बारह मासा।

कहावत

जेठ मास जो बिजली जो दे।
भरी बैसाख की टेसू धो दे।।
जेठ मास जो तपे निरासा।
तो जानो बरखा की आसा।।

जेठाँसी (स्त्री) हक़्के विरासत जो मूरिस के सबसे बड़े लड़के को मिले। हिन्दू क़ानूने विरासत।

जेठ रइय्यत (पु0) मुक़द्दम से दूसरे दर्जे का गाँव का बड़ा काष्तकार। **देखें** मुक़द्दम।

जेठौंड़ा (पु0) बग़ैर लगाने अराज़ी जो गाँव के चौधरी को ज़राअ़त के लिए हक़्के ख़िदमत के तौर पर दी जाये।

जेठी (स्त्री) वह जुवार जो जेठ के महीने में चारे के लिए बोई जाये। इसका दरख़्त लम्बा और पतील होता है। भुट्टा बहुत कम निकलता है।

जेल (स्त्री) दो मर्तबा जोता हुआ खेत, एक बार जोता हुआ **इक सिरी**। तीन बार जोता हुआ **तासी**, चार दफ़अ़ का हल चलाया हुआ **चौ आँस** और पाँच बार का भेरा हुआ **पचबस** कहलाता है।

जेली/झेली (स्त्री) खलियाँ पलटने की पंजषाखा छड़। **2.** नई ज़मीन तोड़ने का एक क़िस्म का भारी हल। **देखें** आखानी।
धंका ( ) देखें जेली/झेली।
जेवनार (स्त्री) देखें जूनार।
जीवन बिर्त (स्त्री) छोटे बेटे के गुज़ारे के लिए अ़ता की हुई जागीर।
झाब (स्त्री) खलियान खाँदते वक्त बैल के मुंह पर चढ़ाने की जाली जिसकी वजह से बैल खलिहान में मुँह नहीं डालता। **देखें** झब्बा भाग एक और छींका भाग पाँच। पृ0
झाबर/झावर (स्त्री) नषेबी ज़मीन जो बरसात में तहे आब रहे; पानी खुष्क होने के बाद भी उसकी सतह पर कीचड़ रहती और इसलिए सिर्फ मोटी क़िस्म के चावल की काष्त के काम आती है।
झाँसा (पु0) खेत की पैदावार की जाँच किये और तख़मीना लगाये बग़ैर लगान मुक़र्रर करने का तरीक़ा ए कार। इसके अलावा उर्दू में झाँसा बमानी धोखा बोला जाता है।
झाँका (पु0) देखें झाँकी।
झाँकड़ (पु0) सूखी झाड़ी जो खेत की बाड़ बनाने के काम आये। **2.** झाड़ियों का जंगल।
झाँकी (स्त्री) झाँकड़ का इस्मे मुसग़्ग़र, झड़ बेरी की पतझड़ का सूखी झाड़ी।
2. छोटी झाड़ी का जंगल।
झावर (स्त्री) देखें झाबर।
झपका/झपकी (पु0) अनाज बरसाने यानी भूसा मिले हुए दानों को ऊपर उठाकर गिराने के मौक़े पर हवा देने का पंखा या छाज जिसकी झपक से भूसा उड़कर दानों से दूर गिरता है कपड़े की चादर को हवा में झपकाकर यह अमल किया जाता है।
झटकवाँ बुवाई (स्त्री) हाथ से बिखेर कर बीज बोने का तरीक़ा ए अ़मल जो ख़ास किस्म की जिंस या पेरी बोने के लिए किया जाता है। **देखें** बोनी और बुवाई।
झटकोरा/छटकोरा (पु0) देखें कछार।
झर्रा (पु0) कंकरीली और रेतीली ज़मीन जिसमें पानी नीचे उतर जाये और छोटे पौदों की जड़ों के लिए ऊपर की सतह में नमी न रहे।
झिरना (क्रिया) देखें झर्रा।
झड़ोई (स्त्री) अनाज की फलियों को झाँकड़ों से झाड़ने और उनका छिलका अलाहिदा करने की छड़, ख़ासकर अरहर और माष की फली के लिए यह अ़मल किया जाता है।
झिरी (स्त्री) गेहूँ का दाना जो फसल खराब होने की वजह से बाल के अंदर झुर का पतला रह जाये।
मुरंड गेहूँ जो सूखे के रोग से असली हालत को पहुँचाने से पहले मुरंड हो जाये।
झुरना ( ) उर्दू बमानी दुबला होना, ग़म से अफसुरदा होना।
झड़ती (स्त्री) लगान के हिसाब जमा व ख़र्च की बाक़ी, पटवारी की इस्तिलाह में फर्दे हिसाब जमा व ख़र्चे लगान मुराद ली जाती है। **~लेना** जमा व खर्च का हिसाब देखना।
सिलक ( ) देखें झड़ती।
झलरा (स्त्री) घटिया क़िस्म के मोरे दाने की जुवार जिसका भुट्टा छिदरा शाख़ दर शाख़ होता है।
झलौर (स्त्री) देखें खादर।
झमाका (पु0) बारिष की तेज़ बौछार पानी का ढरेड़ा।
झुमरा (स्त्री) घनदार और गुथी हुई झाड़ियों की ज़मीन जिनकी जड़ों के फैलाव से ज़मीन ज़राअ़त के लिए साफ़ न हो सके।
झुंडा (पु0) मकई के दरख़्त का तुर्रा जो भुट्टा निकलने की अ़लामत होता है।
झोरा (पु0) दायीं पर और उसके अतराफ़ भूसे के साथ मिले जुले बिखरे हुये अनाज के दाने जो खलियान उठाने के बाद गिरे पड़े रह जायें और जिनको गाँव के कमेरों

का हक़ समझा जाये। **2.** माष मूँग और मूठ की फली और दाने का छिलका जो चारे के काम आता है।

झोझरा ( ) उर्दू बमानी टूटा फूटा और झोरा भी कहते हैं जो मुहावरे में झोरा लगाना बोला जाता है।

झोला (पु0) लफ़्ज़ छोरे का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। जाड़े की खुष्क और ठंडी हवा की थपेड़ जो खेती को सुखा दे और बालों को जला दे।

झाँगा (पु0) देखें झाँगी।

झींगा (पु0) रूई के पौदे का कीड़ा जो पत्तों को खा जाता है।

चाप (स्त्री) देखें झाँकड़।

चापड़ (स्त्री) पथरीली और चट्टानी ज़मीन।

पठार ( ) देखें चापड़।

चालानी (पु0) वह खेत जो एक गाँव से मुतल्लिक़ और दूसरे गाँव को रक़बे में शरीक किया जाता हो।

दाख़्ली, खारिजी ( ) देखें चालानी।

चाँटी (स्त्री) चट्टी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** चट्टी।

चाँचर (स्त्री) खाली छोड़ा हुआ यानी चंद साल से बेकाष्त पड़ा हुआ खेत। **2.** एक क़िस्म की ऊसर ज़मीन जिसमें चना या और कोई मामूली जिंस बोई जा सके।

चाँचरी (स्त्री) गेहूँ, जौ और चावल का वह दाना या दाने जिन पर बाल का ग़िलाफ़ यानी छिलका लगा हुआ हो।

चाँदह (पु0) खेतों की पैमाइष की इकाई की अलामत जो किसी मर्कज़ी जगह पर लगाई जाये। **लगाना** और **क़ायम करना** के साथ बोला जाता है।

चाँडी/चाँड़ी (स्त्री) देखें माला या हल।

जाँगिया (पु0) देखें बाड़ या हल।

चावड़ी (स्त्री) देखें चौपाल।

चाहचा (स्त्री) जुवार का घुंडी लगा हुआ दाना जो सख़्त क़िस्म का होता है और बहुत दिनों अच्छी हालत में रहता है।

चाही (स्त्री) देखें परेथ।

चाही तोड़ (स्त्री) वह ज़मीन या खेत जो पानी की नाल से नीचा और बिला वक़्त आबपाषी की जा सके।

चाही डाल (स्त्री) वह खेत जो पानी की नाल से ऊँचा हो और उसकी आबपाषी के लिए पानी ऊपर चढ़ाना पड़े।

चबावन (स्त्री) अनाज का तैयारी पर आया हुआ दाना, जो भरकर खुष्की पर आ जाये और खाने के लायक हो।

चट्टी (स्त्री) गाँव की सनअ़तों पर लगाया हुआ महसूल जो सन्नाओं से लिया जाये।

ढंड ( ) देखें कर और चट्टी।

चिटकना (क्रिया) देखें चुरकना।

चिटकोरिया (स्त्री) देखें खादर।

चिर चिटा (पु0) एक क़िस्म की घास जिसका तुर्रा रूऐंदार होता और कपड़े को चिमट जाता है।

चुर्का (पु0) खुटकी, चुटकी, चमटी। **देखें** चुरकना।

चुरकना (क्रिया) तम्बाकू या धान के पौदे के ऊपर के फुटाव को तोड़ना ताकि पौधा घना हो और ऊँचा होने के बजाये नई शाखें निकालें।

चरी (स्त्री) जानवर के खाने की जिंस जो काष्त से हासिल की जाये।

चरेरी (स्त्री) देखें चरी।

चिड़िया (स्त्री) देखें चरी।

चिड़िया (स्त्री) नागर की मुठिया की खूँटी। **देखें** हल।

चक (पु0) गाँव की पड़ती अराज़ी का कोई हिस्सा जिसको सरकार गाँव के रक़बे से ख़ारिज करके किसी दूसरे शख़्स को सनद के ज़रिये काष्त और आबादी के लिए देकर मालिक बना दे।

चुकारा (पु0) चक पर क़ब्ज़ा करने का नज़राना जो मालिक को दिया जाये।

चका केवल (स्त्री) काली मिट्टी की ज़मीन जो धूप में सख़्त और बारिष में धसन हो जाये और खुष्क होने पर फटे, ऐसी ज़मीन में हल मुष्किल से चलता है लेकिन अनाज हर क़िस्म का होता है।

चकबट (स्त्री) गाँव की पड़ती अराज़ी को जिसे मुस्ताजिर या मालिक काष्त में ना ला सके, गाँव के रक़बे से ख़ारिज करके आबादी के लिए ग़ैर वतनी या बैरूनी शख़्स को देने का तरीक़ा।

चक बरारी (स्त्री) देखें चकबट।

चक बंदी (स्त्री) देखें चकबट।

चकत (स्त्री) देखें चुकारा।

चिक्टी (स्त्री) काली मिट्टी की नर्म ज़मीन जो हल और बैलों के पैरों में चिमट जाये। दलदली ज़मीन।

चकरी (स्त्री) चक का इस्मे मुसग्ग़र।

चक्कत/चक्कट (स्त्री) सैलाब ज़दा वह क़त्अ़ अराज़ी जिसकी मिट्टी पानी की रौ से कटकर बह जाये और जगह–जगह गढ़े और नालियाँ बन जायें।

चकत्ता ( ) उर्दू बमानी गढ़े का निषान, गोल निषान, दाँतों से काटे का निषान।

चिक्कन (स्त्री) ऐसी ज़मीन जिसके ऊपर की सतह गाद की बनी हो जिसमें बीज न फूटे, इस क़िस्म की मिट्टी षिमाली हिन्द और पंजाब में मुल्तानी मिट्टी नाम से मअ़रूफ़ है।

चकला (पु0) दरबारे अवध की क़दीम इस्तिलाह, सूबे का एक छोटा हिस्सा तअ़ल्लुक़ा या तहसील।

चकलेदार (पु0) चकले का नाज़िम, अफसरे माल।

चक नामा (पु0) चक के क़ब्ज़े की सनद। **देखें** चक।

चकनौट (स्त्री) चिकनी मिट्टी की ज़मीन जिसमें संगरेज़ह न हो, षिमाली हिन्द में दो आबे के इलाक़े की ज़मीन जो हर क़िस्म की पैदावार के लिए निहायत अच्छी होती है।

चुकौता (पु0) कर्ज़े की बेबाक़ी, वाजिब उल अदा रक़म की बिल्कुल्लिया अदाई। **2.** खेत के लगान की शरह। **3.** महसूल करोड़ गीरी, महसूल दरआमदो बरामद, ज़रे रूसूमे जुंगी। **देखें** चुकारा।

चखर/चकर (पु0) दले हुये चने या बाज़ दूसरे दालों के छिलके। **2.** चने के पौधों की जड़ें जो खेत में लगी रह जाये।

चिखराई (स्त्री) खेत से जड़ें और घास निकलवाने की उजरत।

चखोर्नी (स्त्री) खेत का कूड़ा करकट निकालने और साफ़ करने का अ़मल जो बोने से पहले तैयारी के तौर पर किया जाये।

चिला (पु0) धान का छिलका।

चिल्वन (स्त्री) उर्दू लफ़्ज़ चिलमन का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में सूराख़दार छाज को कहते हैं जो खलियान बरसाने के मौक़े पर हवा देने को इस्तेमाल किया जाता है। **देखें** झपका।

चम्बू (स्त्री) पहाड़ के दामन की ऐसी नषेबी ज़मीन जहाँ कुछ अर्सा बरसात का पानी खड़ा रहे और मौसमे बहार में चावल की काष्त के लायक हो जाये।

चना (पु0) एक मषहूर अनाज, इसकी काष्त के लिए ज़मीन को ज़ियादा हल चलाने की जुरूरत नहीं, नवतोड़ ज़मीन में बो दिया जाता है।

कहावत

रार न माने बिंती, जना न माने जोत।
जाट न जाने गुन, खरा चना न माने बाह।।

चिंचर (स्त्री) देखें चाँचर।

चंद बिजार (पु0) नख़लिस्तान, रेगिस्तान या शोरीली अराज़ी के दरमियान क़ाबिले काष्त क़त्अ़ अराज़ी जिसमें कुदरती चष्मा हो।
चंदरी बट (स्त्री) आबपाषी या पनेरी के लिए खेत की छोटी–छोटी चौकोर कियारियों में बाँट।
चँदोली (स्त्री) देखें मुठिया।
चँदेली (स्त्री) अमरावती, इलाक़ा ए बरार की निहायत उ़मदा और आला क़िस्म की रूई।
चँधेली (स्त्री) देखें गुँधेल।
चंडवाना (क्रिया) देखें खुटाना।
चुंरा/चुनियारा (पु0) चने का खेत, चनेल, चनियाबा और उमरा भी कहते हैं।
चँगूरन (स्त्री) देखें कपटा।
चुंगी (स्त्री) ज़रई पैदावार के शहर में दाख़ले और बिकने का महसूल जो सफाई और इंतिज़ामी ज़ुरूरत के लिए लिया जाये। चूँकि यह महसूल एक आदमी के उठाने के लायक बोझ में से एक मुट्ठी भर के लिया जाना दस्तूर पाया इसलिए काष्तकारों की इस्तिलाह में चुंगी नाम पड़ गया। अढ़तिया का मुआवज़ा जो तकदारी का दिया जाये।
तहबाज़ारी ( ) देखें चुंगी।
राहदारी ( ) देखें चुंगी।
चुंगीख़ाना (पु0) चुंगी वसूल करने की चौकी, चुंगी के कारिंदे की बैठक।
चनेल (पु0) देखें चुंरा।
चौ (स्त्री) देखें फार।
चौपाल (स्त्री) गाँव का पंचायती मकान जिसमें गाँव के मुआ़मलात फैसल हों यानी पंचायत ख़ाना।
चौपना (क्रिया) ढोल या डोरी से नहर का पानी उछालकर ऊँची ज़मीन पर पहुँचाना।
चौताल (स्त्री) देखें पूलच।
चौथ (स्त्री) ज़मीन की पैदावार का चौथा हिस्सा जो बतौर खिराज अदा किया जाये।
चौधरी (पु0) गाँव की तिजारत पेषा बिरादरी और खुसूसन बनियों का सरकर्दा पंजाब में बोला जाता है।
चौर (पु0) जंगल के घने दरख़्तों के झुंड में कोई खुला मैदान। **देखें** कछार।
चौरासी पंचात (स्त्री) देखें पंचात।
चौस (स्त्री) चार मर्तबा हल चलाया हुआ खेत।
चौसिंघा (पु0) देखें चौ गड्डा।
चौकड़ात (स्त्री) पंचायती मुक़दमे में राय देने वाली चार पंचों की एक मजलिस, पंचात के मुखिया या रुक्न।
चौकी (स्त्री) चौकीदार के बैठने या रहने की महफूज़ जगह या कोठरी।
चौगड्डा/चौगड्डम (पु0) चार खेतों की हदें मिलने या मुक़ाम या वह निषानी जो उस चौहद्दी को ज़ाहिर करें।
चौहद्दी ( ) देखें चौगड्डा।
चौखा/चौका ( ) देखें चौगड्डा।
चौमेढ़ा ( ) देखें चौगड्डा।
चौमासिया (पु0) वह **हाली** जो ख़रीफ़ की फ़सल या सिर्फ़ बरसात के लिए नौकर रखा जाये।
चौम्ता (पु0) देखें चौगड्डा।
चौंताली (स्त्री) घास की एक क़िस्म जिसके ढोडे में से एक चौथाई रेषा और तीन चौथाई बीज निकलता है।
चौंट (स्त्री) तैयार खेती की सिर्फ बालें तोड़ लेने का तरीक़ा। **देखें** ऊपर छुंट।
चौंची (स्त्री) गेहूँ और जौ की बाल में एक जरासीमी बीमारी जिससे बाल बाँज हो जाती है यानी उसमें दाना पैदा नहीं होता।
चौहन (स्त्री) हल की फार की चोबी पुष्ती जिसपर फार चढ़ी रहती है फार को **चौ** भी कहते हैं और यही चौहन की वजह तस्मिया है। यह तलैटी ज़मीन की खुदाई में बड़ी मदद देती है। **देखें** हल।
खौंपा ( ) देखें चौहन।

चोही (स्त्री) खेत का ऐसा किनारा जहाँ हल की नोक न पहुँचे।

चिहिल/चिहलकारी (स्त्री) चिकनी मिट्टी की ऐसी आली ज़मीन जो बगैर हल चलाये बोई जाये। **2. आली ज़मीन** जिसमें सेल जुरूरत से ज़ियादा हो।

पनियाई ( ) देखें चिहिल। चिहलारी।

चहला/चहील (पु0/स्त्री) संस्कृत चकेला बमानी दलदली अराज़ी। उर्दू चहला बमानी पानी में तरबतर, नाक़ाबिले काष्त।

चीकड़ ( ) कीचड़। गवाँरी इस्तिलाह।

चैत (पु0) गर्मी के दूसरे महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारह मासा।

चेभर (स्त्री) लफ़्ज़ चीप से मुष्तक़ है। वह क़त्अ अराज़ी जिसमें पानी देर से जज़्ब हो और नमी का असर ज़ियादा दिनों तक रहे।

तराई ( ) देखें चेभर।

चीकट (स्त्री) देखें चिकटी।

चेना (पु0) एक क़िस्म का अनाज जिसको बाज़ मुक़ाम पर **कोदों** कहते हैं। उसकी काष्त के लिए बड़ी मेहनत और सिंचाई की जुरूरत होती है। **2.** एक क़िस्म की घास जो गर्मी के मौसम में चारे के लिए बोई जाती है।

कहावत

चेना है मोरे जी का लेना, सोला पानी देना।

अस्सी अस्सी का बैल मरत है बालम मेरे नगीना।

आयीं चिड़ियाँ सब चुग गयीं, हाथ में रह गया पैना।

छाँटा देना (क्रिया) बाजरे की पौध की हल से निराई करना यानी जड़ों की घास निकालना।

छपका/छपकी (पु0) देखें झब्का/झब्की।

छपर बंद (पु0) काष्कारों की इस्तिलाह, मुराद वतनी काष्तकार यानी जो जिस गाँव की ज़मीन जोते वहीं घर बना कर रहे।

छिटाव (पु0) धान का छिलका निकालने का अ़मल।

उड़ा ऊनी ( ) भूसे से अनाज को अलाहिदा करने का अ़मल।

छुट गोयीं (स्त्री) कमज़ोर और कंधा डालू बैलों की जोड़ी जो हल खींचने से जी छोड़ दे। **2.** वस्त हिन्द की मुक़ामी बोलियों में **गोयीं** साथी और हम उम्र दोस्त को कहते हैं।

छुटवा/छिटवा (पु0) देखें बखेर।

छःकड़ (पु0) सेर की पैदावार में ज़मीनदार का 1/4 हिस्सा हक़्के अराज़ी।

छूछ (स्त्री) मकई के भुट्टे की दाना निकली हुई गुल्ली।

छौर (पु0) अनाज के पौधों के डंठल और पत्ते जो चारे के काम आये। बाजरे, जुवार के टूटे कटे डंठल।

छोरना/छेल्ना (क्रिया) धान या बाज़ तरकारियों की पौध को कियारी से निकालकर खेत में लगाना। **देखें** रोपना।

छोला (पु0) चने का पौदा और ढोड़ा।

कहावत

पड़े ओला बढ़े छोला।

छोल्ना (क्रिया) खेती के सूखे और ज़ायद पत्ते काट छाँटकर निकालना, पौदों की सफ़ाई करना। **देखें** छोरना।

छोल्नी (स्त्री) ईख, बाजरे और जुवार की पौद के सूखे और ज़ायद पत्ते काटने की छोटी दराँती।

छेदा (स्त्री) देखें धनौरा और सुरसुरी।

छीमी (स्त्री) हष्रातुल अर्ज़ के अंडे जो अनाज के पौदों या खेतों में परवरिष पाकर बच्चे निकालते और खेती की बरबादी का वाअ़िस होते हैं। जैसे टिड्डी, कमली वग़ैरह के ख़ोल या अरहर की फली।

छींट (स्त्री) देखें बिखेर।

छींटा (पु0) किसी एक जिंस की खेती के दरमियान दूसरी जिंस के बीज की बिखेर।

जैसे धान में अलसी, गेहूँ में जौ या चना वगैरह। **देना** वगैरह के साथ बोला जाता है।

छींटना (क्रिया) देखें रूपना और रुपना।

छैंवाँ (पु0) गन्ना बोने का एक ख़ास क़िस्म का हल।

छेवल (पु0) देखें ढाका।

हुबूब (स्त्री) लफ़्ज़ अबवाब का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। गाँव के मुष्तरिका अख़राजात का महसूल जो लगान के साथ घर या खेत पीछे लिया जाये। जिसमें नज़राना, सरबराही, चौकी दारह, ख़ैरात और पटवारी के अख़राजात शामिल होते हैं।

हुजूरे तहसील (स्त्री) मालगुज़ार जागीर जो रास्त ताज से तअल्लुक़ रखे। यह दरबारे अवध की इस्तिलाह है।

हक़्क़े भैंट (पु0) ओहदा दाराने माल का शष्माही नज़राना जो मालगुज़ार हर फ़सल पर अदा करे।

हक़दार (पु0) देखें क़दीमी या मौरूसी काष्तकार।

हक़्क़ियत (स्त्री) हक़दारी, मिलकियत, काष्तकारी इस्तिलाह में ज़मीन पर मालिकाना क़ब्ज़ा। किसी चीज़ पर फ़ितरी या क़ानूनी तसर्रुफ।

षिकमी ( ) ग़ैर मारूसी और मौरूसी।

तअल्लुक़दारी ( ) ज़मीनदारी, पट्टीदारी और रइय्यत।

हवलदार/हवालदार (पु0) अनाज को खलियान से ज़मीनदार के कोठे तक पहुँचाने की निगरानी करने वाला। ज़मीनदार या सरकार का मुलाज़िम या नुमाइंदा।

ख़ाकी (स्त्री) वह क़तअ अराज़ी जिसकी काष्त का दारोमदार बारिष पर हो और वहाँ आबपाषी का ज़रिया न हो। मुराद ऐसी अराज़ी जो पानी के धारे से ऊँची यानी दरिया के चढ़ाव की तरफ़ की ज़मीन जिसमें आल न रहे इसको बाँगर भी कहते हैं।

ख़ालिसा (स्त्री) वह इलाक़ा जिसका लगान मुल्क की जुरूरियात के लिए मख़सूस और सरकार के क़ब्ज़े और मिलकियत में हो।

लगानी इलाक़ा ( ) देखें ख़ालिसा।

ख़ाम (पु0) काष्तकारी इस्तिलाह में वह खेत या ज़रई इलाक़ा जिसकी माल गुज़ारी बक़ाया रहने से सरकारी क़ब्ज़ा और काष्त में हो।

~तहसील (स्त्री) वह रक़म मालगुज़ारी या लगान जो सरकार के ज़ेरे काष्त इलाक़े से ता अदाई रक़म बक़ाया और वापसी इलाक़ा वसूल हो।

~निकासी (स्त्री) किसी मुल्क या इलाक़े की ज़रई और दीगर कुल पैदावार।

खिरमनगाह (स्त्री) देखें खलियान।

खरीफ़ (स्त्री) देखें असाढ़ी और साऊनी।

~ज़ब्ती (स्त्री) खरीफ़ की फस्ल की ज़ेली पैदावार अज़ क़िस्म तरकारी वगैरह जो तादाद में तक़रीबन पैंतालीस क़िस्म की होती है।

~निजकारी (स्त्री) ख़रीफ की फसल की खूराकी पैदावार अज़ क़िस्म ग़ल्ला वगैरह जो तादाद में तक़रीबन सोलह क़िस्म की होती है।

खस्रह (पु0) गाँव के पटवारी का खेत वारी रजिस्टर जिसमें हर खेत की पैमाइष, लगान, क़िस्मे ज़मीन, पैदावार और उस काष्तकार का नाम जो बंदोबस्ते अराज़ियात उस पर काष्त करता है।

~तक़सीमे जिंस ( ) ज़बती और कंकूत वगैरह अलाहिदा अलाहिदा ज़ेली ख़सरे कहलाते हैं।

पैमाइष ( ) देखें

खुद काष्त (स्त्री) देखें सेर।

खोईद (स्त्री) कच्ची खेती यानी वह खेती जिसमें अनाज के दाने दूधिया हों।

दाख़िल खारिज खेवट (स्त्री) पटवारी का रजिस्टर जिसमें काष्तकारों के नाम और उनकी तब्दीली का अ़मल बाक़ाइदा लिखा जाता है।

दाख़िली खेड़ा (पु0) वह खेड़ा या गाँव जो किसी बड़े क़स्बे या मौज़े के इलाक़े या तहत में हो।

दाल (स्त्री) दाल्वा, संस्कृत बमानी तक़सीम करना। **दो पाखा बीज** वह बीज जिसकी गिरी या मग़ज़ जुड़वाँ यानी दो बराबर के टुकड़ों से जो इस्तिलाहे आम में दाल कहलाते हैं मुरक्कब हो, इसके मुक़ाबले में एक दाना बीज मटर या मटर्वा कहलाता है। **देखें** मटर।

दाफ़चा (पु0) खेत के रखवाले की खेती में बनी हुई बैठक। **देखें** मचान।

अड्डा ( ) देखें दाफ़चा या मचान।

दाना बंदी (स्त्री) खड़ी खेती का बिस्वे वारी तख़मीना लगाने का तरीक़ा।

दानपत्तर/दानपतरा (पु0) इनायत नामा ए जागीर, सनदे जागीरे इनाम, जो मज़हबी खिदमत के लिए अता की जाये।

दानपत्तरदार (पु0) मज़हबी ख़िदमत के मुआवज़े की जागीर की सनद रखनेवाला।

दाँती (स्त्री) खेती काटने का क़ौस की शक्ल दाँतोंदार हथियार। नेपाली और दीगर पहाड़ी इलाक़ों में दाव और कुकरी कहलाता है।

दराँती ( ) देखें दाँती।

दाँसा (पु0) देखें दाँती और हसिया।

दाऊदी (पु0) षिमाली हिन्द में बहुत सफेद और उमदा क़िसम के गेहूँ को कहते हैं। जिसतरह दकन में **जलाली** कहलाती है। यह लफ्ज़ या जो दऊती का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ या किसी जागीरदार दाऊद खाँ नामी से मौसूम हो गया है।

दादन/दौन (स्त्री) देखें दायीं।

दाहिया/ढाहिया (पु0) वह काष्तकार जो जंगल काटकर नव तोड़ क़तअ़ ज़मीन पर काष्त और क़ब्ज़ा रखता हो।

दायीं (स्त्री) खलियान रौंदने वाले बैलों की जोड़ें जो एक जुए के अंदर जुड़ी हों। मुराद खलियान रौंदने का अ़मल। **2.** वह रस्सी जो खलियान रौंदने वाले बैलों को बराबर बाँधने और बीच की कड़ी से जोड़े रहे। बैलों का खलियान रौंदना या खलियान पर चलना।

कहावत

मर्द का भारी लाऊनी।
बर्द को भारी दायीं।

दबारा (स्त्री) नद्दी या नाले की ज़मीन जिस पर बरसात में पानी फैल जाये ऐसी ज़मीन दो फ़सली और काष्त के लिए अच्छी होती है।

दबहरी/दब्हरी (पु0) बीज को मिट्टी में दबाने वाला, हल्की क़िस्म का छोटा हल जिसमें फार की जगह तख़्ता लगा होता है जो बोने के बाद खेत मे फेरा जाता है जिससे बीज पर मिट्टी चढ़ जाती है।

दख़ीलकार (पु0) देखें मौरूसी काष्तकार।

दरइजारह (पु0) छोटे पैमाने पर इंतज़ाम काष्तकारी जो बड़े इंतज़ाम के तहत हो। छोटा ठेका। **देखें** इजारादार।

दरबंदी (स्त्री) फ़सल की हर क़िस्म की पैदावार की क़ीमतों (षर्हे तबादला या नर्ख फरोख़्त जिंस) का तअय्युन। **2.** फसली पैदावार की आमदनी या महसूल की फर्द।

दरपटनी (स्त्री) देखें पट्नी।

दुर्जी (स्त्री) दो रेज़ी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** दो रेज़ी।

दुर्खी (स्त्री) एक क़िस्म का कीड़ा जो नील की पौद में पैदा होता और उसको बरबाद कर देता है।

दरिया बरआमद (स्त्री) वह क़तअ़ अराज़ी जो दरिया की मिट्टी जमने और जमा होने से पैदा हो जाये। खेती के लिए निहायत उमदा होती है।

दरिया बरआर ( ) देखें दरिया बरआमद।

दरिया बुन्ना ( ) देखें दरिया बरआमद।

दरिया बुर्द (स्त्री) देखें चक्कत।

दावत ख़ानी (पु0) दाऊद ख़ानी का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** दाऊदी।

दलदली (स्त्री) देखें भास।

दुमबाली (स्त्री) देखें जेली।

दुमसा (पु0) वह बीज जो जड़ ज़मीन में छोड़कर खुद फुटाव की सूरत में बाहर निकल आये यानी ज़मीन की नमी से जड़ बढ़कर ज़मीन में और दाना निकलकर ऊपर आ जाये।

दम्का (पु0) पहाड़ी टीला जो मज़रूआ अराज़ी के बीच में वाक़े हो।

दँतोला/दंताऊली (पु0) देखें दाँती।

दँतोई (स्त्री) देखें ढंठोली।

दँतियाला (पु0) खेत की जड़ें खोदने और घास साफ करने का हल जिस की फार दाँतेदार होती है। **देखें** हल।

दँतेला (पु0) देखें दँतियाला।

दुंयाला (पु0) दँतेला और दँतियाला।

दंदेला ( ) देखें दँतियाला।

दूब (स्त्री) बारीक पत्ती की ज़मीन से मिली मिली जाल की तरह फेंकने वाली एक क़िस्म की घास, यह घास कई क़िस्म की होती है और काष्तकारों में इसके मुंदर्जा ज़ेल नाम मषहूर है। पाँदा, छेतू, खोतिया, गंदाली, घुरदूब और बनदूबिया।

कहावत

नानक नन्हा ही रहे जैसी नन्ही दूब।
और घास जल जायेंगे दूब सूब की सूब।

दोबहा (पु0) दो मर्तबा हल चलाया हुआ खेत।

दोचस (पु0) देखें दोबहा।

दूधा (पु0) अनाज का नया बनता हुआ दाना जिसमें सफेद रस भरा हो।

दोरसा/दोरस (स्त्री) देखें दोमट।

दूरी (स्त्री) देखें घटावन।

दोरेज़ी (स्त्री) तम्बाकू और नील की ऐसी पौद जो एक मर्तबा कटने के बाद जड़ में से दोबारा फूटकर बढ़ जाये यानी एक पौद से दो फसलें निकलें। बाग़बानों की इस्तिलाह में **दुमरेज़ी** कहते हैं और उर्दू रोज़मर्रा में बोला जाता है।

दोसाहा/दोसाई (स्त्री) दो फ़सली वह अराज़ी जिसमें दो फ़सलें पैदा हों।

दूसर (पु0) दोबहा।

दो फ़सली (स्त्री) देखें दो साहा।

दो गुद्दा (पु0) वह जुवार का दरख़्त जिसकी फाँट में दो शाखें और हर शाख़ में एक भुट्टा निकले।

दो लैरिया (पु0) देखें दो गुद्दा।

दूमट (स्त्री) रेत मिली हुई चिकनी मिट्टी की नर्म ज़मीन जो खेती के लिए निहायत उमदा होती है और आल की ज़ियादती की वजह से गेँहूँ बहुत अच्छा पैदा होता है अगर रेत की मिक़दार साठ फीसद या उससे ज़ियादा हो तो मिलाऊनी और बाँगर के नाम से मौसूम होती है।

दिहात/देहात (पु0) फ़ारसी लफ़्ज़ देह की जमअ़, हिन्दी गाँव मुराद, किसानों की छोटी सी बस्ती जो खेतों के दरमियान बना ली जाये।

देहतर (स्त्री) गाँव के इलाक़े की ऐसी चरागाह या जंगल जिसमें गाँव के मवेषी चरने के लिए छोड़ दिये जायें जिससे उस चरागाह का गाँव की मिलकियत होना साबित हो।

देहिल (स्त्री) देखें भास और दलदली ज़मीन। तारीख़ मिरातुल कुलूब के मुसन्निफ़ ने देहली की वजहे तस्मिया देहिल लिखी है।

दहौतरा (पु0) दस फीसद लगान जो पैदावार पर लिया जाये।
दही रेत (स्त्री) गाँव का दस्तूरी महसूल। **देखें** अब्वाब और मलबा।
दियारा (पु0) वह क़तअ़ ज़मीन जो दरिया के पानी की मिट्टी जमकर सतहे आब से ऊँची और क़ाबिले काष्त हो गयी हो ऐसे क़तआ़त कहीं कहीं चालीस चालीस मील लम्बे और दो मील चौड़े निकल आते हैं और खेती के लिए निहायत उमदा होते हैं।
देसमुख (पु0) गाँव का सरदार या सरे गिरोह।
दयारस ( ) देखें दियारा।
डेल्टा ( ) देखें दियारा।
धारा (पु0) देखें गाँव खर्च या फस्ल आबपाषी भाग छः पृ0 125।
धार धौरा (पु0) दरिया के पानी के अ़मल से बनी हुई अराज़ी जो पानी की धार से लगी हुई हों। 2. पानी की रौ से बना हुआ क़तअ़ ज़मीन जो पानी की धार से कटकर अलाहिदा हो जाये और पानी की धार उनके दरमियान हद्दे फ़ासिल बन जाये। 3. दरिया बरआमद ज़मीन का लगान।
धामन (स्त्री) एक क़िस्म की घास जो चारे के लिए बहुत उमदा होती है।
धान (पु0) छिलका चढ़ा हुआ चावल। एक मषहूर अनाज जिसकी हस्बेज़ेल किस्में मषहूर है। **1. जंगली क़िस्म का धान** तनी, कोदो, पलहारी, अंजना। **2. औसत दर्जे का धान** जेठी, साठी, कुवारी, अनन्धी, तिलोक चंद। **3. उमदा क़िस्म का धान** जड़हन, लायन, अर्वा जिसकी सबसे मषहूर क़िस्में हंस राज, कमवार, महसिया, लटेरा, बिनासपती या बासमती, साँधर, सुहागमती। **4. सागर के इलाक़े के मषहूर धान** मालती, अंतर बेल, तनसेल, देवधन, धराहन वग़ैरह है।
घास (स्त्री) हरस और नागल के जोड़ में फँसी हुई चोबी मैंख़।
धान खेरी (स्त्री) धान की काष्त के लायक चिकनी मिट्टी की नषेबी ज़मीन जिसमें पानी की तरी रहे।
धाँग (पु0) अनाज की बालों का बुर्जीनुमा बनाया हुआ अम्बार। **लगाना** के साथ बोला जाता है।
धाव (पु0) देखें धसन।
धबास (स्त्री) बस्ती के क़रीब की ज़मीन जिसमें खाद डाली जाती रही हो। हर क़िस्म की खेती के लिए निहायत उमदा होती है।
धपैना (पु0) संस्कृत धाप बमानी जाना, दौड़ जाना। किसानों की इस्तिलाह में गाँव से इतनी दूरी जहाँ आदमी बगैर दम लिए दौड़ता हुआ चला जाये। कोस का 1/4 हिस्सा।
धरावट (पु0) वह खेत जिसकी पैदावार का अंदाज़ा पैमाइष के बजाये, तख़मीने से लगाया जाये।
धुरकट/धौरकट (स्त्री) पेषगी लगान जो काष्तकार ज़मीनदार को जेठ या असाढ़ के महीने में अदा करें।
धर बातर (स्त्री) वह अराज़ी जो खैरात या मज़हबी रसूम के अखराजात के लिए दी जाये।
धरना छः (स्त्री) देखें धारा।
धरोर/धरवट (स्त्री) ज़मानत की रक़म जो अदाई ए लगान के इतमीनान को पेषगी जमा कराई जाये।
धरौकी (स्त्री) पैदावार की आँक या तख़मीना जो बटाई के वक़्त झगड़े की सूरत में कराई जाये।
धरोहर (स्त्री) देखें धरोर।
धरयाना (क्रिया) अनाज को भूसे से जुदा करना। **देखें** उड़ाना और बरसाना।
सुरैतना ( ) उड़ाना और बरसाना।

धड़का (पु0) देखें उचटा।
धड़ल्ला (पु0) खेत से जंगली जानवरों को भगाने का डरावा जो शोर मचाकर या किसी चीज़ को बजाकर किया जाये।
दुहाई ( ) देखें धड़ल्ला।
खटका ( ) देखें धड़ल्ला।
धड़वत/धड़ौत (स्त्री) देखें धरवर।
धसन (स्त्री) दलदली ज़मीन या ऐसी पोली ज़मीन जो पानी पड़ने से नीचे को बैठे। ऐसी ज़मीन खेती के लिए मुफीद नहीं होती।
दहान ( ) देखें धसन।
दबाव ( ) देखें धसन।
धन बयास (स्त्री) धान की पौद लगाने को तैयार किया हुआ खेत।
धनकुर (पु0) धानकुर, धान का फुटाव।
धनकोदवा (स्त्री) धान और कोदों मिलवाँ बोया हुआ खेत। **2.** धान और कोदों मिला हुआ।
धनमार (स्त्री) देखें झाबर।
धनौरा (पु0) देखें सुरसुरी।
धनहा (पु0) देखें धन बयास।
धौरा (पु0) देखें बरा।
धौरकट (स्त्री) देखें धुरकट।
धौस/धौसा (पु0) खेत या खेतों के दरमियान रेत का टीला।
धोका (पु0) देखें पचका।
धौला (स्त्री) सफेद छिलके की ईख।
धून ( ) चीड़ की क़िस्म का **गंदा**। एक क़िस्म का गोंद।
धौंगा (पु0) देखें जेली।
ढाब (स्त्री) एक क़िस्म की घास।
कूस ( ) देखें ढाब।
डाबर (स्त्री) नषेबी ज़मीन जहाँ बरसात का पानी भर जाये या दरिया का पानी चढ़ आये।
डाकर (पु0) देखें रौसली।
डामर (पु0) साल के दरख़्त का गाँद या राल।
धुमना ( ) देखें डामर।
धूना ( ) देखें डामर।
डाँट (स्त्री) देखें गुँधेल।
ढाँड (स्त्री) खेत की हद की मुँडेर। आड़, बंजर पथरीला टीला; भूड़। **देखें** डोल या डोला।
ढ़ब्सी (स्त्री) वह ज़मीन जो पानी के चढ़ आने से तहे आब रहा करे।
डबहा (पु0) दलदली ज़मीन। **देखें** भारन।
डंठौली (स्त्री) वह खेत जिसमें फ़सल की पैदावार कटने के बाद पौदों की जड़ों के डंठल लगे हुये हों।
डंठली ( ) देखें डंठौली।
डोडा (पु0) कपास का टैंट। घौंटी, ऊपर का खोल जिसमें रूई बंद रहती है।
डौराहा (पु0) रास्ता बताने वाला, साथी मुसाफिर।
डौल/डौला (पु0) देखें ढाँड।
दमचा ( ) देखें डौल/डौला।
डहर (स्त्री) गैर आबाद गाँव। ज़मीने ग़ैर मज़रूआ। **देखें** खादर।
डेल (पु0) रबीअ़ की फसल के लिए तैयार किया हुआ खेत।
डेहा (पु0) देखें डोल।
ढ़ाका/ढ़कोला (पु0) ढ़ाक का जंगल या बन।
ढब्वा (पु0) खेत के रखवाले का झोपड़।
ढ़द्दा/ढ़ड्डी (स्त्री) नषेबी ज़मीन।
ढ़ोरा/ढ़ोला (पु0) एक क़िस्म का कीड़ा जो चने के दाने में सूराख कर देता है।
ढ़ौंडा/ढ़ोडा (पु0) वह खेती जिसकी बालें पौदों की किसी बीमारी की वजह से भरें नहीं उनमें बीज न जमे और बाल बिखर जाये। **2.** उर्दू रोज़मर्रा में लफ़्ज़े ढोड़ा बमानी टूटा फूटा, नाकारा और खस्ता हाल। **होना, बनना** के साथ बोला जाता है।

कहावत

बोये ये धान हो गया ढोड़ा।
अब क्या खायेगा लौंडा।

ढाँड़ी (स्त्री) देखें ढैंड़ा।

ढ़ई/ढ़ोई (स्त्री) मिट्टी का ढेर, जो खेत या किसी ज़मीन की हद ज़ाहिर करने को बतौर हद्दे फ़ासिल बना दिया जाये। **2.** तालाब का मिट्टी का पुष्ता या ढीहा **3.** उर्दू **ढई देना** बमानी उड़कर बैठ जाना या किसी जगह रह पड़ना, जगह से न टलना।

ढीमा ( ) देखें ढई/ढोई।

ढेरी (स्त्री) देखें भास या धसन।

ढील बाँस/ढीलवाँस (पु0) हिन्दी में ढैंड़ा ऐसे खोल या ग़िलाफ़ को कहते हैं। जिसमें बीज बनता और बढ़ता है। जो आमतौर से ढोड़ा कहलाता है। काष्तकारों की इस्तिलाह में चने के ख़ोल को कहते हैं। जिसके बढ़ने और फूलने को दाने की उमदगी ख़याल की जाती है।.....

कहावत

तेरा बास न बतास तेर आँचल क्योंकर ढोला।
पूत न भतार तेरा ढैंड़ा क्योंकर फूला।।

ढैंड़ा ( ) देखें ढेलबास/ढेलवाँस।

थूँथी ( ) देखें ढ़ेलबास/ढ़ेलवाँस।

ढ़ैंकर (पु0) ढेर का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। खेत झाड़ने को झाड़ी की बनाई हुई बुहारी या झाड़ू।

ज़ेलीकाष्कार (पु0) देखें षिक्मी काष्तकार।

रापर (स्त्री) देखें बंजर।

रापड़ (स्त्री) देखें खापर।

राजकाल (पु0) वह मंगाई या गिरानी जो हुकूमत के तर्ज अ़मल या सरकारी ज़ुरूरियात की फराहमी से पैदा हो।

रारी (पु0) खेत की ज़मीन हमवार करने का बेलन जो हल में लगाकर चलाया जाता है। इसलिए उसको हल भी कहते हैं।

गुरारी ( ) देखें रारी।

रास (स्त्री) फसल का हासिल, खलियान, धन, इस्तिलाह में खेतों से लाकर जमा किए हुए अनाज के ढेर को कहते हैं।

राकड़ (स्त्री) रेगड़ का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** रेगड़।

राम बटाई (स्त्री) ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान सेर की पैदावार की मसावी तकसीम।

राँगरू (स्त्री) देखें रेगड़।

रानी (स्त्री) खुद रौ पौदे या निबातात जिसका बीज ज़मीन में महफ़ूज़ रहता और अपनी फ़सल पर फूट निकलता है।

राय रंगा (पु0) एक क़िस्म का बीज या फल जो हिन्दुओं में मुतबर्रक समझा और रोज़े में खाया जाता है।

रबीअ़ ज़ब्ती (स्त्री) रबीअ़ की फसल की ज़ेली पैदावार जो तक़रीबन पन्द्रह क़िस्म की होती है जिसमें कुसुम, ख़रबूज़ा और लहसुन, पियाज़ बतौर ख़ास है। **होना, बनना** के साथ बोला जाता है।

~निज (स्त्री) रबीअ़ की फसल की ख़ास पैदावार जो क़रीब दस क़िस्म की होती है जिसमें गेहूँ, जौ, चना, सरसों और बाज़ दालें ख़ास हैं।

रित्कर (स्त्री) दरिया की रेत से पैदा हुई ज़मीन।

रतोआ (पु0) पौदों की बीमारी जो तरी की कस्रत से होती है उससे पौदे का डंठल अंदर से सुर्ख और खोखला हो जाता है और फिर पत्ते और बालें सुर्ख सफ़ूफ़ से भर जाते हैं।

तरी छुवेस ( ) देखें रतोआ।

पक मेनिया ( ) देखें रतोआ।

रतौन (स्त्री) रतौन गन्ने की पौद के लिए मख़सूस इस्तिलाह है। **देखें** दो रेज़ी।

रजिस्टर जमा बंदी (पु0) पटवारी का रजिस्टर जिसमें ज़मीन की पैदावार,

काष्तकार का नाम खेत मअ़ रक़बा और लगान का तफस्सुली अंदराज होता है। इसमें नम्बरदार से शुरूअ़ करके काष्तकार तक सिलसिला बसिलसिला अंदराज होत हैं। **देखें** जमाबंदी।

रसौना (पु0) बारिष से पहले धान की बोनी करने का अ़मल।

रसूम पटवारी (स्त्री) पटवारी का मुक़र्ररिह और रवाजी हक़ जो काष्तकार या ज़मीनदार अदा करता है।

रइय्यत (स्त्री) वह काष्तकार जो किसी गाँव का बाषिंदा और उसी गाँव की ज़मीन काष्त करता हो, इनको मुख़्तलिफ़ नाम से मौसूम किया जाता है। जैसे **देखें** जनमी या वतनी, सुख बासी, पैकाषी, थाली, पाही, षिक्मी और जनमकार बतौर ख़ास है।

रखवाला/रखवारी (पु0) खेती का निगेहबान चौकीदार जो उसको जानवरों और चोरों से बचाने के लिए मुक़र्रर हो।

बसेर्वा ( ) देखें रखवाला।

अगोरिया ( ) देखें शहना।

रखौत/रखैल (स्त्री) महफूज खेती जो किसी खास जुरूरत के लिए लगी रखी जाये और आखिर फ़सल या जुरूरत के वकत काटी जाये।

रूपना (क्रिया) पनेरी से पौद निकालकर खेत में लगाना। **देखें** पनेरी।

रूम्पना (क्रिया) उर्दू बमानी निखारना, साफ करना, बाज़ बीज पहले किसी छोटी कियारी में एक जगह बोये जाते हैं और फिर उनके पौदों को उखेड़कर दूसरी जगह खेत वगैरह में लगाया जाता है। बाज़ पौदों की फितरत ही है कि वह जब तक पलटे न जायें यानी एक जगह से उखेड़कर दूसरी जगह न लगाये जायें वह बहुत कम फलते हैं। **2.** यह लफ़्ज़ धान की पौद को बदलने के लिए ख़ास तौर से बोला जाता है। **देखें** रूप्ना।

रौरी (स्त्री) इसको बाज़ मुक़ामी बोलियों में बेलन का **हँगा, बेलना, घेरी** और **कोल्हू** भी कहते हैं। **देखें** रारी, हँगा और हल।

रोज़नाम्चा (पु0) पटवारी की फ़र्दे जमा व ख़र्चे यौमिया।

रौसली (स्त्री) वह क़त्अ़ अराज़ी जिसपर दरिया की रौ आने से रेत की तह जम गयी हो और इस वजह से खेती के लायक़ न रही हो।

रूख (पु0) हरे पौदे और दरख़्त।

कहावत

रूख बिना न नगरी सो है।
बिन बर्गन न कडियाँ।।
पूत बिना न माता सो है।
लाख सोने में चिड़िया।।

रौखर (स्त्री) देखें रौसली।

रूखिया (पु0) वह क़त्अ़ अराज़ी जिस पर दरख़्तों के झुंड हों।

रौंधना (क्रिया) देखें गाहना।

रुहकानी (स्त्री) रूख़ानी का ग़लत तलफ़्फुज़। मुराद खेत की सतह हमवार करने वाला तख़ता। रूख़ानी बढ़ई के एक औज़ार का नाम है। **देखें** भाग एक।

रेत (स्त्री) देखें चट्टी।

रेत्वा (पु0) ऐसी ज़मीन जिसकी मिट्टी में रेत की मिक़दार ज़ियादा हो और पानी जल्द जज़्ब होकर सतह से बहुत नीचे उतर आये। **देखें** रौसली।

रेगड़ (स्त्री) कंकरीली खुष्क ज़मीन, जिसमें पौदे की जड़ें खराब हो जायें। ऐसी ज़मीन में बारिष की ज़ियादाती के मौक़े पर ख़रीफ का अनाज बोया जाता है।

रैंड़ा (पु0) अनाज के पौदे में गाभ के उभार की अ़लामत या गाभ जिस के पत्ते में भुट्टा या बाल बंद होती है। **देखें** भाग चार।

ज़राअ़त (स्त्री) खेती बाड़ी या जिंसे खूराकी की पैदावार का फ़न।

साठिया (पु0) धान की एक अद्ना क़िस्म जो महीने या साठ दिन में तैयार हो जाता है और यही उसकी वजह तस्मिया है।

कहावत

साठी होए साठ रोना।
जब पानी बरसे रात दिना।।

सार (पु0) वह खेत जिसमें दोनों फ़सलें बोई जाती हो।

साली (स्त्री) साल भर की खिदमत का मुआवज़ा जो दोनों फ़स्लों के ख़त्म पर काष्तकार या ज़मीनदार गाँव के कमेरों यानी लोहार, बढ़ई और कुम्हार वगैरह को अनाज या नक़दी अदा करें।

साँसला (पु0) छिदरा बोया हुआ खेत। **2.** छिदरी बोनी जिसमें पौदे मुतफ़र्रिक़ और एक दूसरे से अ़लाहिदा अ़लाहिदा हों।

साँखी (स्त्री) देखें पंचउंगला, पंच अंगोरा और जेली।

सावन (पु0) बरसात के दूसरे महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारहमासा।

कहावत

सावन पुर्वा बहे, भादों बहे पछियावन।
हर बैलाँ को बेचकर, लड़कन तो जियाऊँ।।

साऊनी (स्त्री) सावन में बोई जाने वाली जिंस या सावन की खेती। **देखें** फस्ले खरीफ़।

साइर (पु0) सरकारी आमदनी जो लगान के अलावा जंगल की पैदावार, इजारादारी और अष्या दरआमदों बरआमद के महसूल से हासिल हो, जंगल की पैदावार में जलाने की लकड़ी, लाख, रेषम और शहद और इजारदारी में बंद, घाट और माहीगीरी और दरआमदो बरआमद जंगल की पैदावार में जलाने की लकड़ी। लाख, रेषम और शहद इजारादारी में बंद, घाट और माहीगीरी और दरआमदों बरआमद में मुलकी पैदावार के तबादले का कर शामिल है।

साया (पु0) साअ़त, किसी काम के इब्तिदा करने की मुबारक घड़ी।

सपाट (पु0) सतह हमवार किया हुआ खेत।

सत नजा (पु0) मुख़्तलिफ क़िस्म का मिला जुला अनाज जो मुख़्तलिफ़ खलियानों के बिखरे हुये दाने समेटकर एक जगह जमाकर लिया जाये। आमतौर से गाँव के कमेरों को दे दिया जाता है।

सटकना (क्रिया) मूँग, माष और अरहर की फलियों को छड़ से पीटकर दाने निकालना या झड़ना।

सिचन (स्त्री) नमक की कियारियाँ बनी हुई ज़मीन जो नमक बनने को मुतवातिर सींची जाती रहे।

सरारथ बर्त (स्त्री) बादषाह की तरफ से अ़ता की हुई मषरूत उल ख़िदमत मौरूसी जागीर।

सुधकार (पु0) ज़मीन का वह महसूल जो काष्त करने पर लिया जाये। **2.** ग़ैर मुस्तक़िल लगान जो ज़मीन के इस्तेमाल पर लिया जाये।

सरासरी (स्त्री) वह खेती जो बिला तअ़य्युन लगान की जाये और पैदावार पर लगान मुक़र्रर हो।

सरावल (पु0) सरबराहेकार, गाँव वालों की मुष्तरिका जुरूरियात का इस्तिज़ाम करने वाला। **2.** सरकारी ओहदेदारों के क़यामों–तअ़ाम के सामान की फराहमी का मुंतज़िम।

सरावन (पु0) खेत के ढेले तोड़ने और ज़मीन हमवार करने का हल। **देखें** हल, खत्ती और कोठी।

सिराही/सीराई (स्त्री) सेर की काष्त में ज़मीनदार का हक़।

सरपत (पु0) ईख के ऊपर के पत्ते जो चोटी पर होते हैं। गेहूँ, मकई और जुवार के पत्ते जिनमें भुट्टा या बाल निकलती है। **2.** सरकंडे या काँस का तुर्रा।

सरपंच (पु0) गाँव के मुखिया या ज़मीनदार का हक़ जो फसल पर मुक़र्रिरा जिंस या रक़म की सूरत में बतौर नज़राना दिया जाये।

सरहद्दा (स्त्री) वह जगह जहाँ कई खेतों की हद मिलती हो।

सरखत (पु0) मालिके ज़मीन और काष्तकार के दरमियान क़ौलो क़रार की तहरीर। **करना** के साथ बोला जाता है।

सरदिही (पु0) गाँव के मुखिया या ज़मीनदार का हक़ जो फ़सल पर मुक़र्रिरा जिंस या रक़म की सूरत में बतौर नज़राना दिया जाय।

सरदेषमुखी (स्त्री) गाँव के सरे गिरोह का हक़्के वसूल मालगुज़ारी या हक़के इजारादारी वसूली लगान।

सुरसुरी (स्त्री) अनाज का कीड़ा जो गेहूँ और इसी क़िस्म के दूसरे अनाज को छेदता और मग़ज़ खाता है। **लगना** के साथ बोला जाता है।

सरकन (स्त्री) दलदली ज़मीन या ऐसी रेतीली ज़मीन जो ऊपर के दबाव से नीचे सरक जाये।

सरैना (पु0) खेती तैयार होने पर काष्तकार का अपने ज़मीनदार को बतौर पहल कुछ अनाज और चारा नज़र देना जो उसके हक़ के अलावा मददे खर्च समझा जाता है।

सफेदपोष (पु0) आसूदा हाल काष्तकार जो गाँव में आबरूदार समझा जाता हो।

सुखबासी (पु0) गाँव का तीन पुष्ती वतनी काष्तकार जिसके क़ब्ज़े में कोई अराज़ी मुसतक़लन ज़ेरे काष्त रही हो यानी मौरूसी काष्तकार।

सुलाऊ (पु0) अनाज के दाने में कीड़े का बनाया हुआ सूराख या सुला हुआ अनाज, घुन खाया हुआ अनाज जिसमें सूराख़ पड़ें हों।

सलाई (पु0) मकई के दरख़्त का कीड़ा।

सुल्तानी पंच (पु0) गाँव की पंचायत का सरकारी नुमाइंदा।

समा (पु0) अच्छी पैदावार का ज़माना। **2.** फ़िज़ा, फ़स्ल, मौसम।

सिमार (स्त्री) **देखें** पनभार, सीलमार।

समाल (स्त्री) सँभाल का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में हल के जुए की मेख़ जो जुए को सहारे रहे, मुराद ली जाती है।

सुम्रा (पु0) वह खेत जिसके तूल और अर्ज़ में हल चलाया गया हो। **देखें** दोजस।

समई (स्त्री) सँभाली का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में क़ीफ़नुमा तल्वार जो तुख़्म रेज़ी के लिए अनाज के दानों को जमा रखे।

संदेसिया (पु0) गाँव की पंचायत का क़ासिद, पयाम्बर, ख़बरिसाँ, इत्तिला देने वाला।

सुंडी (स्त्री) सुरसुरी का दूसरा तलफ़्फुज़। **2.** एक क़िस्म का कीड़ जो अनाज के दाने को अंदर से खाकर खोकला कर देता है। **देखें** सुरसुरी।

संकलप (स्त्री) मज़हबी ख़िदमत के औज़ मामूली लगान पर दी हुई अराज़ी।

सँवारा (पु0) खेत में दोबारा हल चलाकर ज़मीन को पोला और हमवार करने का अमल।

सुवाती (स्त्री) शुरू जाड़े की बारिष जो रबीअ़ की फसल के लिए निहायत मुफ़ीद होती है। इस बारिष से गेहूँ और चना खूब फैलता है।

कहावत

एक पान जो बरसे सुवाती।

कुर्मी पहरे सोने की पाती।।

सुवामी (पु0) बड़ा ज़मीनदार, गाँव का सरकरदह। **2.** पटेल, मुक़द्दम और नम्बरदार।

सवाना (पु0) बीज जो फसल पर सवाया देने के वादे पर क़र्ज़ लिया जाये। **2.** धौरा, बरा, हद, इहाता। गाँव की सरहद के खेत **3.** गाँव के रक़बे के अतराफ़ का सर हद्दी इलाक़ा या हद का निषान। **देखें** धौरा।

सवाई (स्त्री) ग़ैर मज़रूआ अराज़ी मसलन, सड़क, मदरसा वग़ैरह जो बंदोबस्त के वक्त सरकारी लगान से मुस्तस़ना हो। **2.** ज़मीन के लगान का इज़ाफा। **देखें** सवाना।

सोइरमुखी (पु0) जुवार का भुट्टा जो ऊपर से नुकीला और नीचे से फैला हुआ हो।

सूइर मुंदकी (स्त्री) देखें पेरिया।

सोई (स्त्री) बीज के फुटाव की नोंक या सलाई का उलटकर कुकड़ा जाना यानी चकराकर घुंडी बन जाना जो ऊपर की मिट्टी के पप्ड़ाने या फुटाव की राह में कंकर वग़ैरह के आ जाने से होता है और इस सूरत में अंदर ही अंदर घुटकर खराब हो जाता है। **देखें** कल्ला, कल्हा या मुरकना।

सुहागा (पु0) ज़मीन हमवार करने का भारी तख़ता जो हल में लगा दिया जाता है और यही उस हल की भी वजह तस्मिया है यानी खेत की सतह हमवार करने का हल। **देखें** हैंगा।

सुहाई (स्त्री) खेत से घास और कटी हुई फ़सल की जड़ें निकालने और सफ़ाई करने का अमल। **करना** के साथ बोला जाता है।

सहपट्नी (स्त्री) देखें पटनी।

सेही (स्त्री) गेहूँ के पौदे का कीड़ा जो बाल को खराब कर देता है।

सहेरिया (स्त्री) सेहर, सील बमानी नमी का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में रबीअ़ की फसल की ऐसी खेती को कहते हैं जो बगैर आबपाषी सिर्फ ज़मीन की सील से तैयार हो जाये। **2.** बहुत उमदा आली ज़मीन।

सेहर ( ) देखें सहेरिया।

सहेल/सुहेल (पु0) ज़मीन हमवार करने का हल। **2.** खेत में हल चलाने की बेगार जो ज़मीनदार अपने काष्तकार से रवाजन एक रोज़ अपनी सेर के लिए ले।

सी (स्त्री) खेत में हल से बनाई हुई वह नाली या नालियाँ जिनमें बीज बोया जाता है।

सियारा (पु0) सियारेह का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में वह तख़्ता जिसको बोनी के बाद खेत में चारों तरफ फेरा जाये ताकि बीज पर मिट्टी आ जाये और नालियाँ पुर हो जायें।

सयावड़ (पु0) सियाह कपड़े का धोका जो जंगली जानवरों के भगाने को खेत में बना दिया जाये।

सयाहा (पु0) रजिस्टर अंदराजाते आमदनी की खतौनी करने वाला मुलाज़िमे तहसील।

सयाहा नवीस (पु0) माल गुज़ारी की आमदनी की खतौनी करने वाला मुलाज़िमे तहसील।

सीत (स्त्री) उर्दू सेत बमानी हतेली और तलवों का पसीना। काष्तकारी इस्तिलाह में ज़मीन की सील जो सतह से किसी क़दर नीचे को क़ायम रहे जिससे पौदा नषोनुमा पाता रहे। **2.** शुरू जाड़े की ओस जिससे ज़मीन नम हो जाये और गेहूँ चने की पौद परवरिष पाये।

सीत्वारी (स्त्री) दरिया के किनारे की ऐसी जमीन जिसमें सतह के नीचे पानी का असर रहे। **देखें** सेत।

सैर (स्त्री) लम्बा चौड़ा तख़्ता, जो हल में लगाकर बोनी के बाद खेत में सब तरफ फेरा जाये।

सीर (स्त्री) ज़मीनदार की निज जोत या खुदकाष्त अराज़ी जो बेलगान हो या वह अराज़ी जिसको ज़मीनदार बारह बरस तक खुद या अपने मुलाज़िम से काष्त कराता रहा हो। निज जोत या खुद काष्त को बारह बरस के बाद सरकारी काग़ज़ात में सीर लिखा जाने लगता है।

सीरदार (पु0) निज जोत या खुदकाष्त अराज़ियात का मुंतज़िम।

सेल (स्त्री) बीज बोने का क़ीफ़नुमा ज़र्फ़ या हल। **देखें** माला।

सेला/सिल्ला (पु0) अनाज की बालें जो कटाई के बाद खेत में गिरी पड़ी रह जाये और बाद में समेटी जाये। **देखें** गुंधेल, नागल और हरस में जड़ी हुई चोबी मेख़ या हल।

सैलाबी (स्त्री) वह क़तअ़ अराज़ी जिस पर दरिया का पानी चढ़ आया करे।

सैंडू (पु0) साँड और संडे का गँवारू तलफ़्फ़ुज़। काष्तकारी इस्तिलाह में गहरी खोद करने वाला भारी क़िस्म का हल।

सौंक (स्त्री) संस्कृत संकू बमानी काँस के तुर्रे की सरकी या सलाई।

सैंगरा/सैंगरी (पु0) ज़रई पैदावार की फली या फलियाँ, जिसतरह बाल भुट्टा और ढोडा कहलाते हैं। सेंगरी भी वैसी ही एक इस्तिलाह है जो बाज़ फलियों के लिए बोली जाती है।

सिँघाड़ी/सिँघाड़िया (पु0) वह तालाब जिसमें सिँघाड़ा बोया हुआ हो।

सेऊ (स्त्री) हल्के हल से खेत की मामूली खोद जिसमें सतह की मिट्टी पलट जाये।

सीवार/सीवाल (स्त्री) बहुत ज़ियादा सीली हुई ज़मीन जो पानी की रौ चढ़ने से हो गयी हो और इसमें रेत भी आ गयी हो ऐसी ज़मीन में पानी की ठंड बैठ जाने से आम खेती के लायक़ नहीं रहती।

सेऊन (पु0) अनाज के पौदे का कीड़ा जो पौदे के डंठल में पैदा होता और उसको अंदर से ख़राब कर देता है।

सेहून/सेनहुन (पु0) गेहूँ का दाना जो पूरा न बने और बाल के अन्दर सूख कर काला हो जायें ज़मीन की कमज़ोरी से दाने में नमू की कुव्वत नहीं रहती और वह कच्चा ही सूख जाता है।

शादियाना (पु0) शादी बियाह के मौक़े की नज़र जो काष्तकार अपने ज़मीनदार को नक़दी या गल्ले की सूरत में पेष करे।

शामिलात (स्त्री) गाँव की मुष्तरिका अराज़ी इसमें जंगल, चरागाह, नद्दी, नाले की ज़मीन और सड़क वगैरह शामिल हैं।

पट्टी (स्त्री) गाँव की मुष्तरिका पट्टी। **देखें** पट्टी।

शामी (पु0) खेती का शरीक, शामिलात का हिस्सेदार, बाज़ मुक़ाम पर शमाली कहते हैं।

शाहना/शाहनाह (पु0) देखें शहना।

शिजरह (पु0) देखें खस्रह।

शुदकार (पु0) सुधकार का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। काष्तकारी इस्तिलाह में खेत के बजाये खेती की पैदावार पर लगान लेने का तरीक़ा जो ख़ाली ज़मीन पर न लिया जाये। **देखें** सुधकार।

शरबती (पु0) गेहूँ की एक उमदा क़िस्म जिसका दाना भूरा और आबदार होता हो।

शटरह लगान (पु0) शरहे लगान का ग़लत तलफ़्फ़ुज़।

षिकमी काष्तकार (पु0) मौरूसी काष्तकार का काष्तकार जो बावजूद मौरूसी हो जाने के ज़ियादा लगान देने वाले के मुक़ाबले में बेदखल किया जा सकता है

जबकि उसका सिवाये काष्तकारी के दूसरा कोई हक़ ज़मीन पर न हो।

रइय्यत ( ) देखें षिकमी काष्तकार।

असामी ( ) देखें षिकमी काष्तकार।

शोर (स्त्री) वह ज़मीन जिसमें नमक या शोरे का जुज़ ज़ियादा होने की वजह से काष्तकारी के लायक़ न हो।

शहना (पु0) खेत के रखवाले या चौकीदार का खिताब जो दिल जोई और हिम्मत अफज़ाई के लिए ऐसे ख़िदमतों या कमेरों को सफेदपोषों की तरफ से दिया जाता है जैसे मेहतर, बेहिष्ती वगैरह।

षिवदज (पु0) बग़ैर तुख्म या तरीक़े तवल्लिदों तनासुल, पानी के अज़्ज़ा से मिट्टी में पैदा हो जाने वाले कीड़े।

सददोई (स्त्री) लगान का दो फीसदी हक़्क़े कानून को जो उसकी ख़िदमत के बदले दिया जाये या बंदोबस्त टोडरमल।

तुर्रा (पु0) मकई के दरख़्त का फूल। **देखें** झुंडा।

अ़क़द बंदी (स्त्री) ज़मीनदार और काष्तकार के दरमियान तकमीले मुआ़हिदा ए ज़मीन।

अ़मल पट्टा (पु0) वह सनद या इजाज़तनामा जिसकी रू से मुस्ताजिर मालिक की तरफ से गाँव में काष्त कराने और लगान वसूल करने का मजाज़ हो।

~दस्तक (पु0) देखें अ़मल पट्टा।

~सनद (पु0) देखें अ़मल पट्टा।

ग़रक़ी (स्त्री) वह ज़मीन जिस पर दरिया के धारे का पानी आया जाया करे। **देखें** सैलाब, धारी।

ग़ैर मुमकिन (स्त्री) वह ज़मीन जो क़ाष्त के लायक़ न बनाई जा सके। **देखें** बंजर, ऊसर, पठार।

फ़ालीज़ (स्त्री) फ़ारसी लफ़्ज़ पालीज़ का उर्दू तलफ़्फुज़। ख़रबूज़ा, तरबूज़ और ककड़ी वगैरह की खेती।

फ़र्दे बाग़ात (स्त्री) पटवारी का रजिस्टर जिसमें मेवेदार दरख़्तों के खेतों का अंदराज होता है या वह क़त़अ़ अराज़ियात जिस पर बाग लगे हों।

फ़सलाना (पु0) गाँव के कमेरों का हक़्क़े ख़िदमत जो हर फ़सल के ख़त्म पर यानी शष्माही दिया जाये।

फ़सल ख़रीफ़ (स्त्री) शुरू बरसात में बोई और ख़िज़ाँ में काटी जाने वाली फसल। **देखें** असाढ़ी।

~रबीअ़ (स्त्री) शुरू जाड़े में बोई और बहार में काटी जाने वाली फसल। **देखें** कुआरी।

~रजिस्टर (पु0) पट्वारी का रजिस्टर जिसमें फसल की कुल पैदावार दर्ज की जाती है।

फ़ोता (पु0) लुग़वी मानी थैली, काष्तकारों की इस्तिलाह में महासिले लगान या रक़मे लगान जो सरकारी ख़जाने में जमा हो मुराद ली जाती है।

क़बूलिय्यत (स्त्री) तहरीरी क़ौल या क़रार जो काष्तकार ज़मीनदार को पट्टे के बदले दे यानी पट्टे की शरायत की मंजूरी का वसीक़ा।

क़दीमी रइय्यत (स्त्री) मौरूसी या मीरासी काष्तकार। **जनमकार** वह काष्तकार जो गाँव का छप्परबंद (वतनी) और अपना खेत रखता हो।

क़रिया (पु0) देखें खेड़ा।

क़िस्मवार जमा बंदी (स्त्री) गाँव के पटवारी के रजिस्टर में हर क़िस्म की मुक़ामी पैदावार का अलाहिदा अलाहिदा तफ़सील वार अंदराज।

क़स़बा (पु0) गाँव से बड़ी बस्ती जिसमें आबादी के लिहाज़ से रोज़मर्रा की जुरूरियाते जिंदगी का कारोबार होता हो। अरबी में छोटे शहर को कहते हैं।

क़स्बा बेचिराग़ (पु0) वह क़स्बा जो कारोबार के बंद होने और आबादी न रहने से वीरान हो गया हो।

कातिक (पु0) जाड़े के पहले महीने का हिन्दी नाम, इस महीने में बारिष होने को किसान खेती के लिए बहुत नुक़सानदेह समझा जाता है।

कहावत

भैंस जाये कटड़ा बहू आ जाई धई।
समाँ वह कुलक्षन जानिये जो कातिक बरसे मैंह।।

कटड़ा ( ) देखें कातिक।

धई ( ) देखें कातिक।

कटाई (स्त्री) तैयार खेती काटने का अ़मल।

काछी (पु0) तरकारियाँ बोने वाले किसान को कहते हैं।

कुंजड़ा ( ) तरकारियों का कारोबार करने वाला मुराद लिया जाता था।

काष्तकार (पु0) खेती बाड़ी करने वाला मज़दूर, कारोबार की मुद्दत और नौइय्यत के एतबार से काष्तकार के मुख़्तलिफ़ उर्फ़ ज़मीनदारों में मषहूर है जैसे दख़ीलकार मौरूसी, षिकमी वगैरह।

मुज़ारेअ़ ( ) देखें काष्तकार।

काल (पु0) पैदावार की खराबी। फ़सल का बिगाड़ जो कमयाबी जिंसे खूराक का सबब हो। इसके चार बड़े सबब होते हैं। **1.** कसरते बारिष **2.** क़िल्लते बारिष **3.** बेवक़्त बारिष **4.** और पौदा खाने वाले कीड़ों की कस्रत उनमें एक राजकाल भी कहलाता है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

कहावत

चैत जो नौ दिन बिजोली होये।
तादेष काल हलाहल होये।।

क़हेत ( ) देखें काल।

काला बंजर (पु0) वह क़तअ़ अराज़ी जो पहाड़ी इलाक़ों में कुछ अर्सा बिला काष्त छोड़ दी जाये ताकि ज़मीन की कुव्वत बहाल हो।

काम्प (स्त्री) ज़मीन की सतह पर पानी का गाद की जमी हुई पपड़ी जो बीज के फुटाव को रोक दे। यह सूरत पानी की रौ से हो जाती है और बोये हुये खेत को नुक़सान पहुँचाती है क्योंकि बीज का फुटाव इसकी तह के नीचे मुरक जाता है। **देखें** सोई मुरकना।

कामिल (स्त्री) चिकनी मिट्टी की बग़ैर रेत मिली नषेबी और ढालू ज़मीन गन्ने और गेहूँ की काष्त के लिए निहायत उमदा होती है इस ज़मीन को आबपाषी की जुरूरत नहीं हो और इसके कुयें का पानी बहुत अच्छा होता है। बस्ती से क़रीब का ऐसा क़तअ़ अराज़ी तराई कहलाता है और तीन क़िस्म का होता है।

देहर ( ) देखें कामिल।

झील ( ) देखें कामिल।

कान (पु0) हल की खोद को चौड़ा करने के लिए फार के ऊपर आड़ी बंधी हुई लकड़ी की छोटी खूँटियाँ।

काँबर (स्त्री) मटियार यानी ऐसी ज़मीन जिसकी मिट्टी में चूने और रेत के अज्ज़ा बहुत कम या बिल्कुल न हो, जल्द खुष्क और सख़्त हो जाने वाली चिकनी मिट्टी की ज़मीन जिसमें हल मुष्किल से चले।

काँटी (स्त्री) हल की फार की नोंक या ज़मीन में धँसने वाला नुकीला हिस्सा। खेत के अतराफ़ ख़ारदार झाड़ी की बाड़।

नामी ( ) देखें काँटी।

काँजी (स्त्री) चावल की पीच या माँड़।

काँजी हौज़ (पु0) काष्तकारों की इस्तिलाह में खेती को ख़राब करने वाले आज़ाद छूटे हुये ढोरों के बंद करने का सरकारी बाड़ा जिसमें उनको क़ैद रखकर मालिक से तावान लिया जाता है।

काँड़ल (स्त्री) वह ज़मीन जिसमें लम्बी पत्ती की खुद रौ घास जो षिमाली हिन्द में बँडू कहलाती है, पैदा हो और खेती के काम न आये।

काँडह (पु0) देखें चकनौट।

काहना (पु0) लफ़्ज़ गाहन का जो हिन्दी में गाहना लिखा और बोला जाता है, का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** गाहन।

कायर (पु0) काली मिट्टी का खेत।

कायो (पु0) देखें पाखली या हल।

कबाड़ (पु0) खेत की घास, जड़ें और खुद रौ निबातात वग़ैरह जिसको हल चलाने से पहले साफ करना पड़े।

कुब्ड़ी (स्त्री) खलियान को उलट पलट करने की दो शाखा छड़ या आँकड़ेदार लकड़ी।

कुबसा (स्त्री) सियाही माइल भूरे रंग की मुख़्तलिफ क़िस्म की मिट्टी मिली हुई क़त़अ अराज़ी, पैदावार में दोमट मिट्टी से अच्छी समझी जाती है।

कसेटा ( ) देखें कुबसा।

कबीसा (स्त्री) सागपात और मामूली क़िस्म की छोटी जड़वाली तरकारियाँ बोने की ज़मीन जो ऊपरी हल चलाकर बो दी जायें। इसकी गहराई में पौदे की जड़ गल जाती है।

कप्टा (पु0) चावल की पौद को खराब करने वाला एक क़िस्म का कीड़ा।

कप्सा (स्त्री) कबीसा की क़िस्म की ज़मीन जिसके अज्ज़ा में गाद और कंकर इस तरह मिले जुड़े होते हैं कि पौदा जड़ नहीं पकड़ता। दकन में **मुरम** कहलाती है।

कपसैंटा ( ) कपास का वह खेत जिसमें से कपास चुन ली गई हो और उसके दरख़्त के ठुंड लगे हुये हों।

कुताला (पु0) कुदाल का ग़लत तलफ़्फुज़। खेत की निलाई करने का एक क़िस्म का कुदाल की वज़अ़ का लम्बे फल का फावड़ा। इसका चलन दकन में है और उससे दूब घास भी खोदी जाती है।

कुत्वार/कटवार (स्त्री) किसी बड़े मज़ारेअ़ का ज़ेली या ज़िम्नी मज़रेअ़ यानी किसी बड़े पैमाने की काष्तकारी के तहत ज़िम्नी काष्तकारी।

कटकीनेदार (पु0) जेली या जिमनी काष्तकार।

कटनवारी (स्त्री) काटने के लायक़ तैयार खेती। 2. वह जंगल जो ईंधन या दूसरी जुरूरत के लिए काटा जाने वाला हो।

कटेल (स्त्री) देखें बंजर।

कठफाँवरी (स्त्री) देखें दँतियाला और पन चंगोरा।

कुठ्ला (पु0) कोठी का इस्मे मुसग़्ग़र। अनाज महफूज़ रखने की जगह। **देखें** कोठी।

कहावत

जो ढेले हाये तोड़ मरोड़।
ताको गठला दूँगी भोर।
जो करेगा मरी कान।
ताका आवे कठ्ला हान।।

कठिया (पु0) सख़्त दाने का सुर्ख़ रंगत का गेहूँ।

लाल्या/लालिया ( ) देखें कठिया।

कुठिया (स्त्री) देखें कोठी।

कजलीबन (पु0) अँधेर या जंगल यानी ऐसा घना जंगल जिसमें दरख़्त शाख दर शाख़ एक दूसरे से मिल गये हों।

कच्ची ज़मीन (स्त्री) वह पर्ती अराज़ी जो लगान पर न हो और जुरूरतमंद को आर्ज़ी तौर पर किराये पर दे दी जाती हो।

कछार/कचार (पु0) दरिया के किनारों की ऊँची ढालवाँ ज़मीन। दरिया की तराई की वजह से उस पर घनी झाड़ी छोटे पौदे और दरख़्त पैदा हो जाते हैं। जिससे वह

खेती के लायक़ नहीं रहती। **2.** कछ बमानी कोना, किनारा या बग़ली पाखा।

कछाली (स्त्री) देखें काँटी या हल।

कछवारा (स्त्री) काछियों का खेत जो हरी तरकारियाँ बोने के लिए मख़सूस होता है।

बाड़ी ( ) देखें कछवारा।

कछवी केवल (स्त्री) ऐसी ज़मीन जिसमें खेती के लिए पानी की ज़ियादा जुरूरत हो पलाई से नर्म और दोनों फसलों के लिए कारआमद हो जाती है।

भरकी ( ) देखें कछवी केवल।

कछियाना (पु0) काछियों यानी सब्ज़ी फरोषों का मुहल्ला या बाज़ार।

कुर (पु0) लफ़्ज़ कर का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में मुराद हल वाले की ख़ास उजरत जो किसी पैदावार की एक चौथाई होती है।

कर (पु0) महसूल दरआमद। **देखें** अब्वाब।

कुरा (पु0) देखें कुल्ला या कुल्हा।

कुर्रा (पु0) कुरले का दूसरा तलफ़्फुज़ कुल्ला। **देखें** कुरा।

कुर्सीनामा (पु0) षिजरा काष्तकारान। **देखें** खेवट।

करकट (पु0) संस्कृत कुरकुटा बमानी घान, कूड़ा जो झाड़ू देकर निकाला जाये। काष्तकारों की इस्तिलाह में खलियान के आस–पास बिखरा हुआ भूसा मुराद लिया जाता है। उर्दू में कूड़े के साथ बोला जाता है।

कुरखेत/करखेत (पु0) खेती के लिए तैयार करके छोड़ा हुआ खेत।

करम (पु0) खेत की पैमाइष का साढ़े पाँच फुट का एक पैमाना।

करजंवा (पु0) जौ या गेहूँ के बाल की एक बीमारी जिससे दाना सूखकर सियाह हो जाता, खाक़ बन जाता है। इस क़िस्म की एक बीमारी गन्ने के जड़ में भी हो जाती है जिससे तना खराब हो जाता है और इसके अंदर सियाह फफूँद लग जाती है।

कुरहल (पु0) धान बोने के लिए तैयार किया हुआ खेत। **2.** काली मिट्टी की ज़मीन।

कुरी (स्त्री) अरहर की फली। **देखें** कौंस।

कुरीआ (स्त्री) गन्ने की बीमारी जिसमें उसका तना खुष्क और सियाह हो जाता है।

करेबाद (स्त्री) क़रीब आबाद का ग़लत तलफ़्फुज़। गाँव के क़रीब की ऐसी ज़मीन जिसमें खाद ज़ियादा पड़ी हो। तरकारी, पोस्त, नील और तम्बाकू की काष्त के लिए निहायत उमदा हो। **देखें** धबास।

करेल (पु0) एक क़िस्म की बे बर्ग झाड़ी जिसकी शाखें निहायत सब्ज़ और फूल सुर्ख़ होते हैं ज्यों ज्यों धूप तेज़ और गर्मी ज़ियादा होती है, खूब फलती है। इसकी जड़ें ज़मीन को ख़राब कर देती है।

कड़ाड़ा (पु0) देखें तेर्वा।

कुड़ाड़ी (स्त्री) देखें परथिया।

कुड़ना (क्रिया) कुड़ाई करना, निलाई करना। खेत के पौदों की जड़ों से घास निकालना और मिट्टी पोली करना।

कहावत

तीन कियारी तेरह कोड़।
तब भड़के ऊख की पोर।।

कसारी (पु0) मसूर के दाने की शक्ल चपटी वज़अ का बीज। **2.** मुहद्दब शक्ल का बीज, गोल वज़अ का मटर कहलाता है।

किसान (पु0) खेती बाड़ी करने वाला मज़दूर।

कहावत

नींद आलस करसान (किसान) को खो दे।
चार (यार) को खोदे हाँसी।।
घना बियाज साहूकार को खोदे।
चोर को खोदे खाँसी।।

कस्सी (स्त्री) खुरपे से छोटा बीज बोने और पौदों की जड़ें निकालने का औज़ार। **देखें** खुरपा।

कुसया (पु0) गन्ने के खेत में नालियाँ बनाने का एक क़िस्म का हल। तिलंगी ज़बान में कुस, नाली या चूल को कहते हैं। जो दो लकड़ियों के जोड़ के लिए बनाई जाये। काष्तकारों की इस्तिलाह में कुसया गहरी नाली बनाने वाले हल का नाम हो गया।

कुकड़ी (स्त्री) कंदी, मकई के भुट्टे की गुल्ली जो पत्ते में लिपटी हुई तने पर नमूदार हो। **2.** गेहूँ और जौ की बाल का उभार।

कुलत्थी (स्त्री) गवार की क़िस्म की निबाता, जो चारे के लिए बोई जाती है।

कल्ला/कुल्हा (पु0) दालवाले अनाज के बीज का फुटाव जो सुई की शक्ल फूटता है। काष्तकारो में खुसूसन जुवार और अमूमन हर क़िस्म के अनाज के फुटाव को कहते हैं। **निकलना, फूटना** के साथ बोला जाता है।

कल्लर (स्त्री) रूखर। **देखें** ऊसर।

किलवाई (स्त्री) खेत की जड़ें साफ करने और ज़मीन हमवार करने का एक क़िस्म का भारी हल जो दो या तीन फार का होता है।

पंधनी ( ) देखें किलवाई।

कलियार (स्त्री) देखें कछार।

कमाटची (पु0) देखें भूमियार।

कमला (पु0) एक क़िस्म का लम्बे रोयें वाला कीड़ा जो छोटे पौदों और नर्म शाखों को बड़ी तेजी से खाकर सफाया कर देता है।

कमीन चारी (स्त्री) गाँव के कमेरों का हक़्के खिदमत जो फसल पर अदा करना जुरूरी होता है।

कमीनी बाज (पु0) रक़मे नुजूल या इसी क़िस्म का गाँव के मुष्तरिका अखराजात का मामूली महसूल जो गाँव के सन्नाओं या गैर काष्तकार कमेरों से वसूल किया जाये।

कन (स्त्री) काष्तकार और ज़मीनदार के दरमियान खेती की पैदावार की तक़सीम का तरीक़ा।

कनाल (पु0) ज़मीन की पैमाइष के एक पैमाने का नाम जो 1/8 एकड़ के मसावी होता है पूरे पैमाने की तक़सीम हस्बेज़ेल है।

एक करम = 5 1/4फुट

एक मरबा करम = एक सरसाही

1 सरसाही = एक मुरला

20 मुरला = एक कनाल

8 कनाल = एक एकड़।

कंता (स्त्री) दरियाए जमुना के किनारे की अदना क़िस्म की ज़मी खाद।

कंजास (स्त्री) देखें खाद।

कुंजड़ा (पु0) देखें काछी।

कंजवा (पु0) देखें झिरी।

कंद/काँद (स्त्री) संस्कृत कंदा बमानी गाँठदार जड़ जैसे शकर कंद, ज़मीनकंद गुट्ठी।

कंदर/कुंदरा (पु0) वह क़तअ़ अराज़ी जो पानी की रौ की काट से बचकर ऊपर को उभरती रहे और रौ के रास्ते में एक टीला बन जाये जिससे पानी की रौ का एक रास्ता बन जाये।

कुंदी (स्त्री) गेहूँ की बाल का उभार। **देखें** कुकड़ी।

कंधार (स्त्री) धान के खेत में पानी भरने के बाद हल्का सा हल चलाने का अ़मल।

कुंडवा (पु0) देखें करंजवा।

कुंडियाँ (स्त्री) कुंडियाँ बज़ाहिर घुंडियाँ का ग़लत तलफ्फुज़ है जो काष्तकारी इस्तिलाह में बाल या गुल्ली में दानों के इब्तिदाई उभार को कहते हैं।

दब्रा ( ) देखें कुंडियाँ।

त़लआ़ ( ) देखें कुंडियाँ।

गुबार ( ) देखें कुंडियाँ।

कुनुस (स्त्री) बीज की फली अमूमन और दालों की फली खुसूसन फली तिलंगी में एक कुस है जिसके मानी ऐसी नाली या चूल जिसके अंदर कोई चीज़ फँसा दी जाये यानी जमाकर जोड़ मिला दिया जाये यहाँ मुराद बीज का गिलाफ़ या थैली जिसमें बीज जमा रहे।

कनसूआ (पु0) गेहूँ, जौ, जुवार और इसी क़िस्म के बाज़ दीगर बीजों का नया निकला हुआ फुटाव। **2.** गन्ने के एक कीड़े का नाम जो उसके फुटाव और पौद को खा जाता है।

कुनुसी (स्त्री) हल की चौपड़ खोदने यानी पहली नालियों पर दूसरी आड़ी नालियाँ खोदने या बनाने का अमल। **2.** चावल की पौद की एक बीमारी का नाम। **करना** के साथ बोला जाता है।

किंक (पु0) चावल का चूरा जो धान साफ़ करने में निकले।

किंकी ( ) देखें किंक।

किंकराई/ककराई (स्त्री) कंकरीली मिट्टी की ज़मीन।

कंकूत (स्त्री) खड़ी खेती की पैदावार का तख़मीना जो हिस्सादारों में तक़सीम के लिए किया जाये। **2.** खड़ी खेती की पैदावार की तक़सीम का तरीक़ा जो लफ़्ज़ बटाई की ज़िद है। **देखें** आँक।

कंगनी (स्त्री) अनाज की जिंस की बारीक दाने की एक अदना क़िस्म।

कहावत

ऊँचे चढ़के बोली कंगनी, सब नाजों में हूँ चाँदनी।
कुछ घी गुड़ मू में पड़े टूटे हार कमर के जुड़े।।

कुनेड़ (स्त्री) हल से बंती हुई नाली के मुतवाज़ी दूसरी नाली का निषान डालने वाली, हल में लगी हुई खूँटी। **2.** बुवाई का हल। **देखें** हल।

कुवार (पु0) बरखारुत का चौथा यानी आखिरी महीने का हिन्दी नाम। **देखें** बारहमासा।

कुवारी (स्त्री) वह ज़मीन जो बहुत ज़ियादा तर और नर्म या बहुत ज़ियादा खुष्क़ और सख़्त होने की वजह से काष्त के क़ाबिल न हो। **देखें** फ़सले रबीअ़।

कोएँड़ (पु0) देखें कुनेड़।

कूत (स्त्री) बकार, दरकटी और बटाई। **देखें** कंकूत।

कोथ (स्त्री) लफ़्ज़ गूद का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह में अनाज के पौदे में बाल, तुर्रा या भुट्टा निकलने का उभार मुराद ली जाती है। **2.** बाज मुक़ामी बोलियों में औरत की छाती के उभार होने की किनायतन गोद आना कहते है।

कोटर (पु0) ऐसा पौदा जिसके तने को कीड़े ने अंदर से खाकर खोकला कर दिया हो। **होना** के साथ बोला जाता है।

कोठारी (पु0) अनाज का ज़ख़ीरा रखने वाला आजिर यानी आइंदा फसल या बवक़्त जुरूरत काम में लाने के लिए अनाज को कोठों में भरकर महफूज़ रखे।

कोठी (स्त्री) अनाज का ज़ख़ीरा रखने की बंद और महफूज़ जगह जो हस्बे जुरूरत मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बना ली जाती है। **2.** ज़मीन के ऊपर बनी हुई यह जगह अमूमन कोठी कहलाती है और ज़मीन के अंदर बनी हुई को इस्तिलाह में खत्ती कहते हैं।

कोदों (स्त्री) अनाज की जिंस की एक अदना क़िस्म जिसका छिलका सख़्त होता और उतारने में बड़ी मेहनत लेता है।

कहावत

कूटे कोदाँ उड़ी भूसी।

नेवला मर गया अपनी खुशी।।

कूरा (पु0) गदरी या तैयारी पर आई हुई गेहूँ वगैरह की बालें।

कोरिया केवल (स्त्री) चका केवल से दूसरी क़िस्म की ज़मीन इसका रंग ज़र्दी माइल होता है और इसमें तरख़न कम होती है। **देखें** चका केवल।

कूड़ (पु0) देखें कूँड़।

कूसा (पु0) हल का आहनी फल जो ज़मीन में नाली खोदता है। **देखें** कुसिया और फार।

कोस्ली (स्त्री) दाल वाले बीजों का फुटाव जिसमें दाल के दोनों हिस्से पत्ते की शक्ल बनकर ..... ऊपर निकल आते हैं यानी पूरा बीज बाहर निकल आता है।

कोसम (पु0) एक क़िस्म का जंगली दरख़्त जिसपर लाख का कीड़ा परवरिष पाता है।

कोल (स्त्री) अनाज की गदरी यानी तैयारी पर आई हुई बाल जिसके दाने होला बनाकर खाये जा सकें।

कौली (स्त्री) दो खेतों के दरमियान हद्दे फासिल या अलामते तक़सीम। उर्दू में लफ़्ज़ कौली इंसानी जिस्म के वस्ती हिस्से का जो सीने के ढाँच और ताँगों के हिस्से के बीच होता और उर्फ़े आम में कमर कहलाता है **कौली भरना** मुराद कमर में हाथ का अलबेट डाल देना।

कोल्हू (पु0) ज़मीन हमवार करने का बेलन की शक्ल का हल। **देखें** हँगा।

कोम्टी (स्त्री) देखें भूमिया।

कून (स्त्री) देखें कुंसी।

कौंस (स्त्री) अरहर की फली।

कौंड़ (पु0) बीज बोने को हल की नोंक से बनाई हुई नाली।

कूनिया (पु0) खेत की पैदावार का तख़मीना करने वाला।

आँको ( ) देखें कूनिया।

कोहा (पु0) लफ़्ज़ कोहान का मुख़फ़्फ़फ़। **देखें** कल्ला।

कुहरा (पु0) सर्दी के मौसम में शब के वक़्त फ़िज़ा के आबी बुखाराता का धुँवा।

कीच (स्त्री) खेत की मिट्टी जो पानी से घुल गयी हो और हल चलाने के लायक न रही हो।

कहावत

जैसू से तैसू मिले, मिले नीच से नीच।
पानी में पानी मिले, मिले कीच से कीच।।

खापट (स्त्री) धुंए के रंग की मिट्टी वाली ज़मीन जो बारिष में लेई की तरह नर्म और धूप में लोहे की तरह सख़्त हो जाये, लावे की ज़मीन। इस क़िस्म की ज़मीन की सतह जल्द खुष्क हो जाती है और पानी सतह से कुछ नीचे जमअ़ रहता है जो पौदों की जड़ों को खराब कर देता है।

खापड़/खापड़ खोड़ (स्त्री) टीलों वाली ज़मीन जो खेती के लायक न हो। अमूमन बंजर रहती है।

खाद (स्त्री) पौदों की गिज़ा जो हैवानी फुज़ले और बाज़ निबाताती व जमादाती अज्ज़ा से तैयार की जाती है। **डालना, देना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

खादर (स्त्री) नषेबी ज़मीन जिसमें बरसात का पानी इधर उधर से आकर जमा हो जाये, पानी जज़्ब होने के बाद क़ाबिले काष्त और अच्छी क़िस्म में शुमार होती है।

भदभदा ( ) देखें खादर।

खारोग (स्त्री) वह पड़ती खेत जो आने वाली फस्ले ख़रीफ़ में गन्ने की काष्त के लिए तैयार करके छोड़ दिया गया हो। **देखें** पालोच।

खाला (पु0) पहाड़ी नाले की राह की ज़मीन जिसको कभी–कभी पानी की रौ काटती रहे इस लिए इस मुक़ाम की खेती को

नुक़सान का खतरा रहता है। **देखें** कछार।

खालू (पु0) अनाज के दाने जो खूँदने पर छिल्के या खोल के अंदर से न निकलें। खोल में अटके हुये दाने।

खपड़ा (पु0) हर क़िस्म का मिला जुला गेहूँ का अंबार जिसमें अदना, आला सुर्ख, सफेद सब तरह के दाने मिले हों।

खताना (क्रिया) खेत में खाद देने का एक तरीक़ा जो ढोरों या भेड़, बकरी के गल्लों को खेत में रैन बसेरा कराकर किया जाता है।

खत्ती (स्त्री) बाज़ मुक़ामी बोलियों में **सरावन** और **तलगंज** भी कहते हैं। **देखें** कोठी।

खत्तियाँ (स्त्री) ऐसे फल या तरकारियाँ जो साल भर तक खराब न हों।

खत्वारी (स्त्री) खाद बनाने का गढ़ा या मुक़ाम।

ढलाव ( ) देखें खतवारी।

खत्ता ( ) देखें खादर।

खेतज (स्त्री) खेत में हल चलाने और खेती का काम शुरू करने की पूजा।

आख तीज ( ) देखें खेतज।

खुटाना (क्रिया) हल की फार की नोक तेज कराना।

खट पाँवड़ी (स्त्री) देखें पचअंगड़ा, पन चंगोरा।

खुटकना (क्रिया) बढ़ने वाले पौदों की ऊपर की कोंपल तोड़ना ताकि वह घना बने। **देखें** बधियाना।

खजूरा (पु0) एक मर्तबा का बरसाया हुआ अनाज जिसमें भूसा बाकी हो।

खदेली (स्त्री) ऐसा क़तअ़ अराज़ी जहाँ खाद पड़ी रही हो या बचाई जाती रही हो। तरकारियों की काष्त के लिए बहुत उमदा होता है।

खुरा (पु0) देखें आड़ बंद।

खुरपा (पु0) पौदों की जड़ों में से घास निकालने और ज़मीन पोली करने का औज़ार। खुरपे के दस्ते को इस्तिलाह में **बंटा** और आहनी मुंह को **सुरपल** कहते हैं।

खुरपाई (स्त्री) पौदों की जड़ों से घास निकालने और ज़मीन पोली करने का अ़मल।

खुरपना (क्रिया) खुरपे से पौदों की जड़ों की घास निकालना।

खुरपी (स्त्री) खुरपे का इस्मेमुसग्ग़र।

खर्सा (पु0) गर्मारुत, धूप काला।

खुरेल (स्त्री) खेती के लिए नई ज़मीन तोड़ने का अ़मल। **2.** खेती के लिए पड़ती ज़मीन में पहली मर्तबा हल चलाना। **करना** के साथ बोला जाता है।

खलार (स्त्री) देखें कछार।

खल्कीरात (स्त्री) तारों भरी रात।

खलिया (पु0) गाँव में बसने वाला कमेरा।

परचार ( ) देखें खलिया।

खिल्या (स्त्री) नवतोड़ ज़मीन जिसमें पहले साल बीज बोया गया हो और दूसरे साल के लिए तैयार की जा रही हो।

खलियान/खलिहान (पु0) कटे हुये अनाज का ढेर जो दाना निकालने को इकट्ठा किया गया हो। **2.** अनाज खोदने की जगह।

आफर ( ) देखें खलियान।

खलीहानी (स्त्री) गाँव के कमेरों का गुज़ारा या हक़्क़े ख़िदमत जो फसल पर अनाज समेटने के वक़्त दिया जाये।

खन (स्त्री) खेती के लिए ज़मीन की खुदाई का अ़मल। काष्तकारों की इस्तिलाह।

खुंटाहल (पु0) उर्दू लफ्ज़ खंडले का ग़लत तलफ्फुज़। मुराद ऐसा हल जिसके आहनी फल की नोंक घिसकर मोटी हो गई हो।

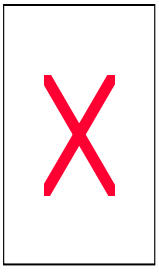

खुंट्ना (क्रिया) खुटकने का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** बधयाना।

खंडा/खंदा (पु0) खेत में हल की नोंक की खुदाई का निषान यानी वह नाली जो बीज बोने को हल की नोंक से बनाई जाये। **2.** टूटा हुआ चावल जो धान साफ करने में टूट जाये।

खंडवा (पु0) एक कीड़ा जो गेहूँ की बाल को खा जाता है। **2.** गेहूँ के पौदे की एक बीमारी जिससे बाल में भूरी या सियाह ख़ाक पैदा हो जाती है।

खुंडा (पु0) देखें खुंडा।

खूटन (स्त्री) वह खेत जिसमें कटी हुई खेती की जड़ें लगी हुई हों।

खूराँट (पु0) (खुर आट) ढोरों के खुरों के निषान जो खेत की हमवार बनाई हुई सतह पर ढोरों के चलने से पड़ जायें और जमाये हुये बीजों को नुक़सान पहुँचाये।

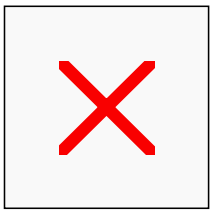

खोला (पु0) घास खोदने का एक क़िस्म का फावड़ा जो खुरपे की वज़अ़ का लम्बे और खड़े दस्ते का होता है।

खूँट (पु0) बीज का सूईनुमा फुटाव।

रवोन्द्र (पु0) खलियान के अतराफ बिखरा हुआ अनाज जो बैलों के खोदने से इधर उधर फैल जाये।

खेत्रपाल (पु0) खेत का रखवाला।

खेतगाम (पु0) खेत रहन बिल क़ब्ज़।

खेतौनी (स्त्री) गाँव के खेतों के अन्दराजात की बही।

खेती (स्त्री) काष्तकारी, अनाज उगाना, जुरूरते जिंदगी का सबसे अहम पेषा। **मसल है–**

उत्तम खेती मद्दम बान (ब्योपार)
नखत चाकरी भीक नदान (लाचार)

खेती भवानी (स्त्री) खेती की देवी।

खेडा (पु0) किसी क़सबे के इलाक़े में किसानों की छोटी बस्ती।

परह ( ) देखें खेड़ा।

खेवट (स्त्री) पटवारी की सरकारी बही जिसमें गाँव के हर ज़मीनदार के हिस्से का खेत। पट्टी लगान और अबवाब सरकारी तौर पर लिखे जाते हैं। **2.** रक़मे लगान जो गाँव का हर पट्टीदार अपने अपने हिस्से की अदा करे।

खेवटदार (पु0) खेवट रखने वाला, पट्टी का शरीक।

गाटा बंदी (स्त्री) गाँव की तक़सीम बतरीक़ खेत बाट जिसके खेत मुख़्तालिफ़ गाँव के हुदूद में आ गये हों।

गाज (स्त्री) कीच यानी पानी देकर ऐसी नर्म की हुई मिट्टी जिसमें धान की पौद लगाई जा सके।

गागली (स्त्री) सागपात, खाने जोगी, सब्ज़ी।

गाँठ (स्त्री) गन्ने या मकई के दरख़्त के तने की हर पौद का निषान।

त़बई बंद ( ) देखें गाँठ।

गाँडल (स्त्री) एक क़िस्म की लम्बी पत्ती की घास जिसकी जड़ खुष्बूदार होती और ख़स के नाम से मअ़रूफ़ है।

गाँव (पु0) किसानों और दीगर ज़राअ़त पेषा कमेरों की छोटी बस्ती।

गाँवाँ पंचात (स्त्री) देखें पंचात।

गाँवबत (स्त्री) तकसीमे तअ़ल्लुका। **देखें** तअ़ल्लुका।

गावंटी (पु0) गाँव की बनी हुई अष्या, गाँव वालों की सिनअ़त्, देही सिनअ़त।

गाँव ख़र्च (पु0) गाँव के आम और मुष्तरिका अख़राजात मसलन, मेहमान नवाज़ी, खैरात, चौकीदार वग़ैरह की मुष्तरक रक़म जो एक आना फी रुपया या एक सेर फी मन के हिसाब से जमा की जाती है।

धरना छः ( ) देखें गाँव ख़र्च।

गाँव कामाँ (पु0) गाँव के मामूली मुष्तरक काम या मुक़र्ररिह ख़िदमतें।
बेगार ( ) देखें गाँव कामा।
गाहन/गाहना (पु0) इस की एक दूसरी क़िस्म **मसेरा** कहलाती है जिसमें दाँते नहीं होते। **देखें** दँतियाला या हल।
गाहना (क्रिया) खलियान रौंदना। बैलों का खलियान रौंदने का अ़मल।
गपसा (स्त्री) कबसा का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** कबसा।
गट्टा/गट्ठा (पु0) जरेब या बीगे का बीसवाँ हिस्सा या तीन गज़।
गठावन (स्त्री) देखें दौरी। दायीं के बैलों के गले की लम्बी रस्सी।
गट्ठी (स्त्री) देखें कंद।
घटवाँस (पु0) गट्टे का बीसवाँ हिस्सा। **देखें** गट्टा।
गजर (स्त्री) दलदली ज़मीन। **2.** वह खेत जिसमें गेहूँ की बोनी में जौ का छींटा भी दिया गया हो।
गजरौत (स्त्री) गाजर का गंदना या पत्ते।
गुजई (स्त्री) देखें गोजनी।
गदन (पु0) दाँतोंदार फारवाला हल। **देखें** दँतियाला।
दंदेला ( ) देखें दँतियाला।
गराई (स्त्री) रेत और सुर्ख़ मिट्टी मिली हुई ज़मीन।
गरब (स्त्री) लफ़्ज़ ग़र्क़ का गवाँरू तलफ़्फुज़। काष्तकारी इस्तिलाह में पौदों की जड़ों की गहरी खुदाई मुराद ली जाती है और उसके मुक़ाबिल निराई ऊपरी कुरेद को कहते हैं। नवाहे देहली में बिधाना या बेधना कहलाता है।
गुरबना (क्रिया) खुरेना का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** खुरपना।
गिर्दावर (पु0) गाँव का सरकारी निगराकार या नाज़िर।
गुरदचना/गुरूदचना (स्त्री) गाँव के मज़हबी पेषवा की बे लगान जागीर।
गरी (स्त्री) बीज का मग़ज़ जिसमें फुटाव महफ़ूज होता है।
गुड़ाई (स्त्री) नये पौदों की जड़ों पर मिट्टी चढ़ाने का अमल खुसूसन गन्ने की पौद पर। **2.** पौदों की जड़ों से घास निकालने का अ़मल।
गुड़ना (स्त्री) नमक की मअ़दन वाला क़त़अ़ अराज़ी।
गुड़वाही (स्त्री) हल की फार का पिछला मोटा हिस्सा जो तलैटी में जड़ा रहता है।
गुड़ैत (पु0) गाँव का चौकीदार या हरकारह।
गुड़ैती (स्त्री) गाँव के हरकारे का हक़्क़े ख़िदमत।
गुल्ली (स्त्री) बाजरे या मकई के दानों की डंडी या डंठल।
गाम ( ) देखें गुल्ली।
गंभीर (स्त्री) आला क़िस्म की ज़रख़ेज ज़मीन।

कहावत

देस मालवा गहीर गम्भीर।
ढग ढग रोटी पग पग नीर।।

गुंठा (पु0) देखें गट्टा। **2.** बाल के अंदर रहा हुआ दाना।
गंज (पु0) अनाज की मंडी, ग़ल्ला फ़रोषों का बाज़ार।
गंजीख़ाना (पु0) अनाज का कोठा। **2.** घास जमअ़ रखने का मुक़ाम।
गुंछा (पु0) लफ़्ज़ गूंज का ग़लत तलफ़्फुज़। काष्तकारी इस्तिलाह में खुरपे के फल की दस्ती मुराद होता है।
गंदल/गंदना (पु0) मूली, शलजम वग़ैरह जड़वाली तरकारियों का ढंठल जिसमें बीज लगता हो।
गंधार (पु0) देखें गाहन।

गुंधेल (स्त्री) हरस और नागर के जोड़ पर फंसा हुआ चोबी फन्ना जो डाँट होता है। **2.** एक क़िस्म की खुष्बूदार घास। पहले लफ़्ज़ की असल गूँधना और दूसरे की गंधी हो सकती है। **देखें** हल।

गँडावन (स्त्री) दायीं के बैलों को बाँधने की रस्सी।

गनकट/गनकटा (पु0) गन्ने का खेत काटने वाला मज़दूर जो शक्करसाज़ी के कारख़ाने में गन्ने की पोरियाँ करे।

गंगाजली (स्त्री) देखें खपड़ा।

गंगबरार (स्त्री) ज़मीन जो गंगा की धार से कटकर पानी से अ़लाहिदा निकल आये।

गंगाषक्सत (स्त्री) ज़मीन जो गंगा की धार से कटकर बह गई हो और उस जगह नषेब हो गया हो।

गोभ (स्त्री) गाभ का दूसरा तलफ़्फुज़ मुराद वह नया फुटाव जो पौदे की जड़ में निकलकर उसको कमज़ोर कर दे यानी उसके बढ़ने को नुक़सान पहुँचाये।

गोभी/गोबी (स्त्री) एक क़िस्म की तरकारी जो अपने फूल के लिए मषहूर है। बंदगोभी या करमकल्ला और गाँठ गोभी भी इसी किस्म से है।

गोफया/गोफना (पु0) ढेला फेंकने का रस्सी का लंगर। **चित्र गोफया**

गोजरा (पु0) देखें गोचनी।

गोचना (पु0) देखें गोचनी।

गोचनी (स्त्री) गेहूँ और चना या जौ और चना मिला हुआ अनाज।

गैंचनी ( ) देखें गोचनी।

जौ चनी ( ) देखें गोचनी।

गूढर (पु0) खेत की घास, जड़ें और झाड़ी का समेटा हुआ अम्बार।

आकन ( ) देखें गूढर।

घूर ( ) देखें गूढर।

गोरट (स्त्री) रेतीली ज़मीन।

गोड़ा/गाँडा (पु0) गाँव के अतराफ़ की खाद वाले क़तअ़ अ़राजियात जो तरकारी की काष्त के लिए निहायत उमदा होते है लेकिन इनमें निगरानी की बड़ी ज़ुरूरत होती है।

कहावत

राँघड़ यारी डोम पहचान।
गोड़े की खेती कुषाल न जान।।

गोएँड ( ) देखें गोड़ा।

गूड़ाई (स्त्री) देखें गुड़ाई।

गोखरू (पु0) ज़मीन पर फैलने वाली एक क़िस्म की निबातात जिसका बीज तिखौंटा काटोंदार होता है इसकी कसरत खेती को खराब कर देती है।

गूलर (पु0) कपास का कच्चा और बंद ढोड़ा।

गोहानी (स्त्री) खाद मिली हुई ज़मीन जिसपर ढोर चराये और छोड़े गये हों। जिनके पेषाब और गोबर से ज़ियादा खदेली हो गयी हो।

गोहारी ( ) देखें गोहानी।

गोइंद (स्त्री) देखें गोहानी।

गोयीं (स्त्री) हल में जोते जाने वाली बैलों की जोट। **2.** खेती बाड़ी का शरीककार। सूबा–ए मुतवस्त में गोयीं हमराही और हमउम्र दोस्त को कहते हैं।

गहाई (स्त्री) गाहने का अ़मल। **2.** गाहने की उजरत। **देखें** गाहना।

गँडा (पु0) खेत की ज़मीन हमवार करने का लकड़ी का भारी बेलन गँडा बमानी गोल तकिया और गैंडोली बमानी एंडवी भी आता है।

गेहूँ (पु0) एक मषहूर अनाज जिसकी हस्बे जेल क़िस्मे मारूफ़ है। **1.** दाऊदी **2.** शरबती **3.** मुंरिया या मुरली **4.** बिधा या कठिया **5.** जलाली **6.** पीसी **7.** लालिया **8.** पोटिया **9.** गंगाजली **10.** खपड़ा।

कहावत

आगे गेहूँ पीछे धान।
उसको कहते हैं बड़ किसान।।

घामी (स्त्री) घाम बमानी धूप और गर्मी जो बारिष न होने से पैदा हो।

इमसाके बाराँ ( ) देखें घामी।

घाई (स्त्री) गाहने का अमल। **देखें** गाहना।

घरामी (पु0) वह शख़्स या मुज़ारेअ़ जो गाँव में अपना घर रखता हो। **2.** पेषावर छपरबंद।

घरपंटी/घर पट्टी (स्त्री) ज़मीन पर मकान बनाने का महसूल।

घर दूआरी (स्त्री) गाँव की ख़ाना शुमारी, घर गिनाई।

घुड़ाई (स्त्री) काली राई।

घुमाऊ (पु0) एक जोट बैल से, एक दिन की जुताई या हलाई।

घुन (पु0) अनाज का कीड़ा, आमतौर से गेहूँ, चने, मूँग के कीड़े को कहते हैं। **लगना** के साथ बोला जाता है। **देखें** सुरसुरी।

कहावत

जैसू को तैसू मिले सुनरे राजा भेल।
लोहे को घुन खा गयो लाँड ले लियो चील।।

भाबी ( ) देखें घुन।

पाथा ( ) देखें घुन।

धूला ( ) देखें घुन।

घना जंगल (पु0) ऐसा जंगल जिसमें दरख़्त एक दूसरे से मिले हुये बराबर बराबर हों।

घना दरख़्त ( ) वह दरख़्त और पौदा जिसमें शाखें और पत्ते ज़ियादा भरे हुये हों।

घनदार पौदा ( ) देखें घना दरख़्त।

घुंडा (पु0) बाल या भुट्टे का उभार।

~जमना ( ) बाल या भुट्टे का पैदा होना।

घोर बरार (पु0) गाँव की सफाई का महसूल जो हर शख़्स से उसकी हैसियत के मुताबिक लिया जाता है।

घाँगा सुवार (पु0) पानी पर पैदा होने वाली घास या कंजाल।

घाँगी/घुँगी (स्त्री) एक क़िस्म का कीड़ा जो गेहूँ की बालों और चने के पौदे को नुकसान पहुँचाता है।

जोई ( ) देखें घाँगी।

जुरई ( ) देखें घाँगी।

गिंधर/गिंदर ( ) देखें घाँगी।

घेरी (स्त्री) एक क़िस्म का बेलन जिससे खेत की ज़मीन हमवार की जाती है। **देखें** हँगा।

घेगरा (पु0) चने का तैयार ढोडा। **2.** कपास का ढोडा। **देखें** ढँड़ा।

चंगा ( ) देखें घेगरा।

पलोद ( ) देखें घेगरा।

घँटी (स्त्री) देखें ढँड़ा और ढोडा।

लाभ (स्त्री) खेती की पैदावार ख़ालिस मुनाफ़ा जो तमाम अख़राजात निकालकर बचे।

लागू (पु0) गहरी हलाई। **देखें** अदाई।

लान (पु0) देखें लाँग।

लाँग (पु0) फौरी यानी तुरत की कटी हुई खेती का अम्बार।

लावा (पु0) खेत काटने वाला मज़दूर।

लाऊनी (स्त्री) फसल की कटाई का ज़माना। **देखें** जमाबंदी।

लाहड़ा (पु0) बाजरे की एक क़िस्म।

लाई (स्त्री) खेत काटने वाले मज़दूर की उजरत जो कटे हुये अनाज की पोलियों का पाँच फीसद होती है।

लबदा/लबेदा (पु0) खलियार हमवार करने या बीज बोने के बाद ज़मीन बराबर करने का एक क़िस्म का तख़्ता जो हल की तरह ज़मीन पर फेरा जाता है।

लप (पु0) देखें मौरूसी हरेस।

लट्ठा (पु0) जरेब का दसवाँ हिस्सा। **2.** अंग्रेज़ी और रियासती इलाकों के दरमियान सरहद की मीनार या निषान।

3. दो ज़मीनदारों के दरमियान हद्दे फ़ासिल की अलामत।

लघूआ / लखूआ (पु0) गेहूँ के पौदे की एक बीमारी का नाम जिससे पौदा ठिठुर जाता है।

लगान (पु0) किराया अराज़ी मज़रूआ या महसूल ज़रई पैदावार।

लगता (पु0) कर। **देखें** लगान।

लग्गा / लग्गी (पु0) घास खोदने का एक क़िस्म का फावड़े की क़िस्म का औज़ार। **देखें** खोला।

लम्बरदार (पु0) नम्बरदार का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** सदर माल गुज़ार। सरकार का मुक़र्रर करदह नुमाइंदा काश्तकारान।

लोटन (पु0) खेत को हमवार और मिट्टी को पोला करने का हल्की क़िस्म का हल।

लौंद (पु0) हर तीसरे साल एक ज़ायद महीने का हिन्दी नाम।

लोनी / नोनी (स्त्री) शोरीली ज़मीन जो खेती के काम न आये।

लहार (पु0) देखें लाई।

लैलवा (स्त्री) तिलंगी नील बमानी पानी का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। ऐसी ज़मीन जिसमें पानी सत्हे ज़मीन से चार पाँच फुट नीचे निकल आये जिसकी वजह से मिट्टी हर तरफ से दहे और कुँआ न खुद सके।

मार (स्त्री) पहाड़ के दामन की कंकरीली और काली ज़मीन जो रूई की काश्त के लिए बहुत उमदा होती है लेकिन अगर पानी ज़ियादा बरसे तो बेकार रहती है। 2. पहाड़ के दामन का ऐसा क़त्अ़ अराज़ी जो ऊपर के पानी की रौ का गुज़रगाह हो।

मासा (पु0) महीना, माह, काश्तकारों से साल के हर महीने में खाने की कोई न कोई चीज़ मुज़िरे सेहत समझी जाती है जिसको हर महीने के साथ बयान किया है जो हस्बेज़ेल है।

चैत—गुड़, बैसाख—तेल, जेठ—पंह यानी सफर, असाढ़—बैल यानी बैल गिरी, सावन—मर्सा माठा, भादों—दही, कुवार—करेला, कातिक—मही, अगहन—ज़ीरा, पूस—धनिया, माख—मिसरी, फागुन—चना।

इन मासा में यह सब तगे।
जो नर नारी सुख को भजे।।

माख / माह (पु0) जाड़े के आखिरी महीने का हिन्दी नाम। **देखें** मासा।

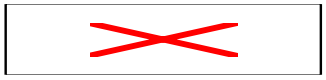

माला (स्त्री) देखें सैल या आँकरी।

औरना ( ) देखें आँकरी और माला।

बूझकठी ( ) देखें आँकरी और माला।

कूढ़ ( ) देखें आँकरी और माला।

नारू / नला ( ) बीज बोने की बाँस की बनी हुई क़ीफ़ की शक्ल की लम्बी नली। **देखें** माला।

नजारू ( ) देखें नारू और माला।

पनरौथा ( ) माला का निचला सिरा। **देखें** माला।

मालगुज़ार (स्त्री) सरकार को महसूले अराज़ियाते मज़रूआ या लगान अदा करने वाला।

मालगुज़ारी (पु0) ज़रई महसूल, लगान, कर।

मान (पु0) जंगल साफ किया हुआ क़त्अ़ अराज़ी जो इब्तिदा में मामूली काश्त के काम आये।

माँज / माँझा (स्त्री) दरिया की बहाकर लाई हुई मिट्टी का बनाया हुआ क़त्अ़ अराज़ी।

सैलाबी ( ) देखें माँज।

मटियार ( ) वह सैलाबी क़त्अ़ अराज़ी जिसमें रेत के बजाये चिकनी मिट्टी ज़ियादा हो।

बिजार ( ) वह सैलाबी क़तअ़ अराज़ी जिसपर रौ का पानी बहता रहे और कभी कभी दोनों फसलों में से कोई फसल न बोई जाये, ऐसी ज़मीन का महासिल कम और सालाना होता है।

दोसाल ( ) वह सैलाबी ज़मीन जिसमें रौ के पानी का रास्ता तब्दील होने से काष्त होने लगे इस ज़मीन का लगान शष्माही होता है।

पह ( ) वह सैलाबी ज़मीन जिसपर पानी की रौ आने का खतरा न रहे।

मार ( ) आला क़िस्म की काली मिट्टी की ज़मीन।

काबर ( ) काली मिट्टी की हल्की ज़मीन।

मांझी/मंझी (स्त्री) देखें गंधेल।

माँची/माँछी (स्त्री) हल का जुवा।

माहोन (पु0) कपास के पौदे का कीड़ा।

माहतू/महंतू (पु0) महंत का गँवारू तलफ़्फ़ुज़, गाँव का मुखिया, सरपंच। **देखें** सरपंच।

मपाई (स्त्री) सपाट ज़मीन।

मटर (पु0) बेदाल वाला बीज। **देखें** बटाना।

कालोन ( ) **देखें** मटर या बटाना।

किराव ( ) **देखें** मटर या बटाना।

कुलाई ( ) **देखें** मटर या बटाना।

दाल्वा ( ) दालों यानी दो पाखों वाला बीज।

कसारी ( ) मसूरी की वज़अ़ का बीज।

मटियार (स्त्री) सियाह माइल भूरे रंग की ज़मीन जिसके अज्ज़ा निहायत बारीक और गुथवाँ होते हैं और इस वजह से पानी के अज्ज़ा उसमें जमा रहते हैं और जब ओस पड़ती है तो बुखारात बनकर ऊपर आते हैं। पौदों की जड़ें उसमें से रतूबत जज़्ब करती है ऐसी ज़मीन में कीमियावी कुव्वत और पानी जज़्ब करने की ख़ास खासियत होती है और उसके वज़न से दुगनी पानी की सील इसमें रहती है पानी इसमें निहायत आहिस्ता जज़्ब होता है। इस क़िस्म की ज़मीन की कई क़िस्मे मुख़्तलालिफ़ नामों से मौसूम की जाती है। जिसमें दोमट, बाँगर, कपसा दोरस, करेल, खलार, चकनौट और टिकार ख़ास हैं।

मुठिया (स्त्री) हल पकड़ने का खूँटा जो हलवाले के हाथ में रहता है। **देखें** हल।

हत्ती ( ) **देखें** मुठिया।

मुजदा (स्त्री) रेत और मिट्टी मिली हुई ज़मीन।

मझार (स्त्री) गोइंद की क़िस्म की ज़मीन। **देखें** गोइंद।

मचान (पु0) खेत में रखवाले के बैठने की बनी हुई पाड़।

मचकोतर (स्त्री) देखें गँधेल।

महाल (स्त्री) गाँव का ऐसा हिस्सा जिसकी मालगुज़ारी सौ रुपये या उससे ज़ायद हो। एक जुदागाना हक़ीक़त और इस्तिलाह में महाल कहलाती है। सौ रुपये से कम मालगुज़ारी का हिस्सा अलाहिदा हक़ीक़त नहीं रखता बल्कि किसी महाल के तहत होता है। एक महाल में कई पट्टियाँ होती हैं। गाँव की तक़सीम सौ रुपये मालगुज़ारी से कम की नहीं होती।

मदारा ( ) सुर्ख़ी माइल रंग का चना।

मज़कूरी (पु0) लगान वसूल करने वाला सरकारी पयादह। रियासत हैदराबाद और दकन के बाज़ बड़े शहरों में सम्मन की तामील कराने वाले अदालती पयादे को कहते हैं।

मुरबीज (पु0) देखें अबीज।

मरित बर्त (स्त्री) वह जागीर जो राजा या हुकूमत की तरफ से मुलकी मुहाफिज़ यानी फौजी ख़िदमत अंजाम देने वाले के वारिस को दी जाये।

मुरकट (स्त्री) गेहूँ और जौ वग़ैरह की पक्की बालें तोड़ने या काटने का अ़मल।

भगोट ( ) देखें मुरकट।क

मुरकी (स्त्री) गेहूँ और जौ वगैरह की गदरी बाल जो होला बनाने के क़ाबिल हो गयी हो।

मुर्खा (पु0) अफ़ीम के पौदे की बीमारी।

खुर्खा ( ) देखें मुर्खा।

मिर्खन (स्त्री) देखें किंक या किंकी।

मुरम (स्त्री) देखें कपसा।

मुरंड (पु0) देखें झरी।

मरौत बिरित/मरौट बिरित (स्त्री) बेलगान जागीर जो सिपाही के जंग में मारे जाने के बाद उसके वारिस को गुज़ारे के लिए अ़ता की गयी हो। **देखें** बर्त।

मिड़वाना (पु0) देखें मड़ोड़ी।

मड़ोड़ी (स्त्री) काष्तकारी नज़राना जो तक़ारीब के मौक़अ़ पर काष्तकार ज़मीनदार को दे। **2.** मामूली रक़म जो फी बीगा या खेत ज़मीनदार को दी जाये।

मज़रूआ (स्त्री) खेती बाड़ी की ज़मीन या खेत।

मुस्ताजिर (पु0) वह शख़्स जिसको कसनी जागीर या इलाक़े की काष्तकारी कारोबार एक मुक़र्रिह मुद्दत के लिए दिया गया हो।

जमोगदार/जमअ़ गुज़ार ( ) गाँव को ठेके पर लेने वाला मालगुजार।

मिस्सी (स्त्री) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गिरे पड़े अनाज और दालों का मजमूआ़ जिसके आटे की ग़रीब किसान रोटी पका लेते हैं। **2.** खाद मिली हुई नर्म ज़मीन।

मिसन/मीसान ( ) देखें मिस्सी। **प्रयोग 2।**

मसीना (पु0) दालें और दूसरी क़िस्म का अदना क़िस्म का मोटा अनाज। फसले ख़रीफ की पैदावार।

मुआ़फ़ी (स्त्री) लगान मुआफ़ जागीर। **देखें** अढंड।

मुक़द्दम (पु0) गाँव का मुखिया जो ज़मीनदार का क़ायम मुकाम हो और इस ख़िदमत के एवज़ (इवज़) लगान माफ कुछ अराज़ी रखता हो। **2.** ज़मीनदार का कारकुन, मुअ़म्मद या कामदार। **3.** तअ़ल्लुक़ेदार का मातहत या ज़मीनदार। बंगाल में मंडल और पंजाब में चौधरी बोला जाता है।

मिकरार (पु0) मकई बोने का खेत।

मंडल ( ) देखें मुक़द्दम।

मुखिया (पु0) गाँव का बड़ा आदमी, सरदार, सफेदपोष, क़ायद, सरगुरू, लम्बरदार, बिरादरी का चौधरी। **देखें** सरपंच।

मलबा (पु0) संस्कृत मला बमानी समेटा हुआ कूड़ा, मुराद गाँव का मामूली महसूल चंदा जो खेत या घर पीछे लिया जाये और गाँव के मुष्तरिका अख़राजात मसलन मेहमान नवाज़ी, ख़ैरात, सरकारी ओहदेदार की तवाज़ेह, सरकारी ओहदेदारों की सरबराही के नुक़सान और दीगर आम जुरूरियात में ख़र्च किया जाये। **देखें** गाँव खर्च।

मुम्रज (स्त्री) ज़र्द मिट्टी की ज़मीन।

पेवरी ( ) देखें मुम्रज।

मँड़वा (पु0) बाजरे की क़िस्म का अनाज जो मुतवातिर खाने से सेहत को नुक़सान पहुँचता है।

कहावत

ऊँचे चढ़ के बोले मँड़वा।
सब नाज में मैं हूँ भड़वा।।
आठ दिन जो मुझे खाये।
भले मर्द से उठा न जाये।।

मुंदरी (स्त्री) खुर्पे की शाम। **देखें** खुर्पा।

मुंडा (पु0) बीगे का एक चौथाई हिस्सा। **2.** गन्ने का खेत जिसमें से फ़सल कट चुकी हों और जड़ें बाक़ी हों।

कहावत

साढ़ी में साढ़ी बोई, बाड़ी में बाड़ी।
मुंडे में धान बोये, थूकूँ तेरी ढाड़ी।।

मुंदवार (पु0) खलियान के ऊपर का साइबान।

मुंरिया (पु0) गेहूँ की एक क़िस्म।

मैतीनामा (पु0) काष्तकार या ज़मीनदार के मरने का इत्तिलाअ़ नामा या ऐलान उसके वारिसों के नाम जिनके नामों का सरकारी काग़ज़ात में अंदराज ज़रूरी होता है।

मूदी (स्त्री) वह खेत जिसमें पिछली फसल रूई बोई जा चुकी हो।

मोढ़ा (पु0) गन्ने का पुरानी जड़ से निकला हुआ पौदा।

मौरूसी काष्तकार (पु0) वह काष्तकार जो किसी अराज़ी को एक ख़ास कानूनी मुद्दत से अपने क़ब्ज़ा ए काष्त में रखता हो और जब तक सरकारी लगान अदा करता रहे, ज़मीन से बेदख़ल न किया जा सके। मौरूसी काष्तकार सरकारी लगान के अलावा ज़मीनदार को भी कुछ देता रहे ऐसे काष्तकार को आगरा और अवध की इस्तिलाह में लप या लप्पा कहते हैं।

~हरीस (पु0) पुराना काष्तकार या हल रखने वाला यानी किसान पेषा।

मूड़ (पु0) गन्ने या पान की पौद लगाने को खेत में बनाई हुई नालियाँ या बरहे।

बरहे ( ) देखें मूड़।

मूसख़ोरी (स्त्री) जंगली चूहे की खायी और ख़राब की हुई खेती। जैसे किड़खाई खेती।

मूसलाधार बारिष (स्त्री) निहायत ज़ोर की और लगातार बारिष।

मौज़अ़ (पु0) काष्तकारों की छोटी बस्ती जिसमें बाज़ार न हो। असली और दाख़ली के साथ बोला जाता है।

मूल/मूली (स्त्री) संस्कृत बमानी जड़। एक क़िस्म की तरकारी जिसकी जड़ लम्बी गाव दुम होती और वही उसकी असल और वजह तस्मिया है। इसी क़िस्म की दूसरी जड़ गाजर कहलाती है।

कहावत

कुवार करेला, सावन मूली, चैत मास गुड़ खावे।
पैसा वारे गाँठ का रोग बसा बन जाये।।

मूलूजा/मूँजा (स्त्री) जड़वाली तरकारी जैसे मूली, गाजर, शलजम वग़ैरह। **देखें** मूल।

मूल्का (पु0) बीज का नुकीला फुटाव। **देखें** सूई।

मोंड़हा (पु0) अनाज की मंडी। **देखें** गंज।

मुहाल (स्त्री) बड़ी जागीर जो सनद के ज़रिए सरकार से अता हुई हो। **देखें** महाल और तअ़ल्लुक़ा।

मुफ़रद ( ) देखें मुहाल।

महावट (स्त्री) ख़िज़ाँ के मौसम की बारिष जो सर्दी के आखिरी महीनों में दो एक मर्तबा बरसाती है और गेहूँ या रबीअ़ की फ़सल के लिए निहायत मुफीद होती है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

मेहतर (पु0) गाँव के तेली या चमारों की बिरादरी का पंचायती नुमाइंदा।

महतू (पु0) देखें माहतू और मुक़द्दम।

मह्दार (पु0) काष्तकारी मज़दूर जो माहाना नक़द उजरत पाये बरखिलाफ़ **भाजीदार** जिस को फसल पर जिंस मिले।

महिन्द्रा/माहदार ( ) देखें मह्दार।

मुहली (पु0) हल में नया जोता हुआ बैल। इसे अल्हड़ भी कहते हैं। **देखें** भाग 5।

महो (पु0) कपास की नई पौद का कीड़ा जो अपने जिस्म के माद्दे से उसको ढक लेता है जिसकी वजह से पौदा बढ़ने नहीं पाता। यह कीड़ा महावट के महीने में मर जाता है।

महोबिया (पु0) हल्का ज़र्दी माइल रंग का चना।

मुहे खुंटी (स्त्री) नील के पौदे की जड़ जो ज़मीन में छोड़ दी जाये जिससे दूसरे साल की पौद पैदा हो।

मयार (स्त्री) ऊसर की क़िस्म की ज़मीन जो क़ाबिले काष्त बनाई जा सके। **देखें** झाबर।

मयावी (स्त्री) खेत को हमवार करने का हल। **देखें** सरावन।

मैरा/मैंरा (पु0) हैंगे की क़िस्म का खेत को हमवार करने का दो मुतवाज़ी लकड़ियों को जोड़कर बनाया हुआ हल।

मैरूआ ( ) देखें मैरा या मैंरा।

मीरासी (पु0) देखें मौरूसी काष्तकार।

मैड़ा (पु0) मैरा का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। ढेला फोड़ मामूली हल। **देखें** मैरा।

मिलान ख़सरा (पु0) पटवारी का रजिस्टर जिसमें हर क़िस्म की अराज़ियात, जंगल, पड़ती, तालाब, आबादी वग़ैरह दर्ज रहती है।

मेखड़ा (पु0) माघ के महीने की बारिष। **देखें** महावट।

मैंड़ (स्त्री) खेत की हद बंदी की मुंडेर।

मैंढ़ी (स्त्री) खलियान के बीच में गड़ी हुई बल्ली या खम जिससे दायीं बाँधी जाती है। दायीं का खम। **देखें** दायीं।

नाधना (क्रिया) नये बैल सधाने के लिए हल में जोतना। **2.** जोतना या हल चलाना। इसे हलखेव भी कहते हैं।

हल खेव ( ) देखें नाधना।

नाधी/नधा (पु0) देखें जोगरा।

नार (स्त्री) गेहूँ के पौदे का खुष्क ढंठल। **2.** गुंछा। **देखें** खुरपा।

नारू (पु0) देखें माला।

नासी (स्त्री) देखें काँटी, हल और फार।

नाका (पु0) बस्ती में दाख़िले की राह, चौराहा, चुंगी वसूल करने वालों का ठिकाना।

नागफनी (स्त्री) एक क़िस्म का काँटोंदार दरख़्त जो एक दफा ज़मीन में पैदा होकर बड़ी मुष्किल से ज़ाया किया जाता है। जिस ज़मीन में पैदा हो जाता है वह खेती के काम की नहीं रहती।

चप्पल सैंड ( ) देखें नागफनी।

नागर (पु0) ज़मीन की गहरी खुदाई का बहुत भारी क़िस्म का हल। आमतौर से गन्ने का खेत तैयार करने उसकी पौद बोने के काम आता है। **2.** हल की वह लकड़ी जिसमें फार की तलैटी और हरस जुड़ा होता है। **देखें** हल।

नागल (पु0) देखें नागर।

नाल (स्त्री) देखें माला।

नाऊ (स्त्री) आबपाषी के क़ाबिल नषेबी ज़मीन जिसमें खेती हो सके।

नाइक (स्त्री) संस्कृत नाइकः। काष्तकारों की इस्तिलाह, मुराद बंजारों का सिरेगिरोह।

नाई (स्त्री) देखें वैरना।

निबोनी ( ) आलाते कषावर्ज़ी की दुरूस्ती की उजरत। **देखें** हलैती।

निपान (पु0) वह खेत जिसमें पानी की आल न रही हो और पौदों की नमू या बढ़ना रुक जाये।

नजारा (पु0) नजा अनाज के दानों को कहते हैं। यहाँ मुराद वह ज़र्फ़ है। जिसके ज़रिये अनाज का बीज बोया जाता है। **देखें** माला।

निजजोत/निचजोत (स्त्री) देखें सेर।

निचाट (पु0) बेचिराग़, ग़ैर आबाद या उजाड़ गाँच जिसको किसी वजह से किसानों ने छोड़ दिया हो।

निराई/निलाई (स्त्री) खेत के पौदों की जड़ों से घास और जंगली पौदे निकालना और जड़ की मिट्टी पोली करना।

कहावत

भली जात कुर्मी की खुरपी हाथ।

अपनों खेत निरावे पी के साथ।।

नरबीज (स्त्री) देखें बिजमार।

नरमट (स्त्री) चिकनी मिट्टी की नर्म ज़मीन।

नरहेल (पु0) देखें आड़बंद।

नरहेली ( ) देखें आड़बंद।

नरेली (स्त्री) देखें जोगरा।

नज़ूल (पु0) शहर की वह अराज़ियात जो आबादी की मुष्तरिका मिलकियत हों और जिसका इंतज़ाम आबादी के नुमाइंदों के सुपुर्द हों। इसमें नद्दी, नाले, पुल, सड़क वगैरह की अराज़ियात भी शामिल है। **2.** नुज़ूल का किराया।

नक़्षा जिंसवारी (पु0) पटवारी की फ़र्दे पैदावार या रजिस्टर इजनास।

नक़्षी (स्त्री) दरिया के किनारे की काष्त का लगान जो ज़मीनदार को फ़स्ल दरफ़स्ल अदा किया जाता है और अगर तुग्यानी के सबब फ़सल खराब हो जाये तो ज़मीनदार लगान तलब करने का मजाज़ नहीं, किसान चाहे तो खेत छोड़ दे और लगान न दे।

नकासी ख़ाम (स्त्री) वह लगान जो काष्तकार से सरकार को रास्त वसूल हो या आरज़ी तौर पर काष्तकार को लगान की अदायगी का जिम्मेदार बनाया जाये।

नकूआ (पु0) बीज के अंदर छुपा हुआ सूई की नोंक की कष्ल का फुटाव जिससे जड़ बनती है।

निकोनी (स्त्री) पोस्त की पौदे की जमाई यानी कियारी से खेत में मुंतक़ली।

निलाई (स्त्री) देखें निराई।

निलो (पु0) अनाज की गाड़ियों की झड़न। **2.** मुख़्तालिफ़ क़िस्म के अनाजों के मिलवाँ दाने जो अनाज की मंदी में गिरे पड़े जमा कर लिये जायें।

नम्बरदार (पु0) देखें लम्बरदार।

नवआबाद (पु0) देखें नवतोड़।

निवान (स्त्री) अच्छी पैदावार का खेत।

कहावत

जिसका ऊँचा बैठना जिसका खेत निवान।
उन वैरी क्या करें, जिनका मीत दीवान।।

नवबरार/नवलेव (स्त्री) दरिया के बहाव की मिट्टी से बनी हुई ज़मीन। जिसे **डेल्टा** भी कहा जाता है।

नवतुमकार (पु0) मौरूसी काष्तकार। **देखें** जनकार।

नवतोड़ (स्त्री) ग़ैर मज़रूआ अराज़ी जो ज़राअ़त के लिए पहली मर्तबा काम में लाई जाये। **देखें** नव आबाद।

नवरूप (स्त्री) नील के पौदे की पहली बार की शाखें जो रंग निकालने को काटी जाये।

नव लफ (पु0) पुराने गन्ने की आँख से फूटा हुआ पौदा। **2.** गन्ने का फुटाव।

नवलेव/नवलेवा (स्त्री) देखें नवबरार और खादर।

नेनार/नोनाई (स्त्री) देखें नोनचा।

नोनचा (स्त्री) वह क़त़अ़ अराज़ी जिसमें नमक के अज्ज़ा ज़ियादा हों और नाक़ाबिले काष्त रहे, आमतौर से ऊसर कहलाती है।

नोना मिट्टी ( ) देखें नोनचा।

नोनी/नोनेर (स्त्री) देखें नोनचा।

नवहर (पु0) नया हल, नुकीली फार का हल।

नहरी ज़मीन (स्त्री) वह क़त़अ़ अराज़ी या अराज़ियात जिसकी आबपाषी नहर के पानी से हो।

नहला/नहरा (पु0) वह क़त़अ़ अराज़ी जो नद्दी या नाले के पानी की रौ की ज़द में हो यानी जिसमें पानी चढ़ आता हो।

नेगी (पु0) गाँव का कमेरा जिसका मुक़र्ररिह हक़ उसकी ख़िदमत के औ़ज़ मुक़र्ररिह वक़्त पर दिया जाता है। रस्मी और रवाजी अ़ताया पाने वाला गाँव का कमेरा।

नेमोना/निमूना (पु0) चने का कच्चा ढोडा जिसमें दाना न बना हो।

वतर आना (क्रिया) देखें ऊटआना या ऊद आना।

वतनी कुर्सी (पु0) देखें मौरूसी काष्तकार और जनमकार।

वैर/वेड़ना (स्त्री) बाज़ मुक़ामात पर ओरना कहते हैं। **वेड़ना, पैरना** का दूसरा तलफ़्फ़ुज़ है।

वैरना (पु0) बोआई का हल, इस हल को नाई इस वजह से कहते हैं कि इसमें बीज बोने की नै जो आमतौर से माला और दूसरे नामों से मौसूम है लगी होती है और यही उसकी वजह तस्मिया है।

चित्र वैरना

हापर (स्त्री) गन्ने की पौद की कियारी।

हाथी/हाथिया (पु0) बरसात के मौसम का आखिरी महीना, कुवार के महीने की बारिष जो फ़स्ल रबीअ़ की काष्त के लिए ज़ुरूरी होती है।

हार (स्त्री) वह क़तअ़ अराज़ी जो मवेषी चराने को छोड़ दिया जाये। **2.** गाँव से दूर फ़ासिले पर का खेत। **3.** खुष्क रेतली ज़मीन।

हारी (पु0) देखें हाली।

कहावत

जिसका होये बरहमन हारी।
उसके लिए तिल गये और उन मारी।।

हाड (पु0) हल का वह हिस्सा जिसमें हत्थी, तलैटी और फार होती है। **देखें** हल।

जाँगिया ( ) देखें हाड़।

हाला (पु0) सरकारी लगान जो बाइक़सात वसूल किया जाये। यह देहली की इस्तिलाह है।

हाली (पु0) खेत में हल चलाने वाला मज़दूर किसान।

हिबरा/हिब्सा (स्त्री) देखें मास।

हथउठवा (पु0) मज़हबी इग़राज़ के ख़र्च का मुक़र्रिरा दान जो किसान फसल पर अदा करे।

हराई/हलाई (स्त्री) खेत में हल चलाने का अ़मल।

हरिज्ना/हरजिंसी (पु0) वह खेत जिसमें सिवाये चावल के हर क़िस्म की जिंस पैदा हो।

हरछुटान (पु0) खेत की हलाई ख़त्म होना या पूरी हो जाना।

हरस/हंस (पु0) हल के जुवे की बल्ली। **देखें** हल।

हरेस/हलेस ( ) देखें हरस/हंस।

हरसज्जा (पु0) साझी या शरीक का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। हल और खेती का शरीक।

हरसूत (पु0) खेत में हल की नोंक से खुदी हुई। **2.** हल की नोंक का निषान।

हरसोदिया (पु0) हर सालिया व काष्तकार मज़दूर जो हस्बे मुआ़हिदा साल भर को काम पर लगाया जाये।

हरकारा (पु0) (हल कार) खेती बाड़ी के हर क़िस्म के काम की चौकसी करने वाला मुलाज़िम।

हरकट (स्त्री) चारे के लिए काटी हुई खेती।

चरकटी ( ) देखें हर कट।

हरघटेट/हल घटेट (स्त्री) गाँव की मज़रूआ ज़मीन।

हस्त (स्त्री) देखें हाथी।

हलवाहा (पु0) देखें हाली।

हरमानी (स्त्री) गन्ने का रस निकालने के कोल्हू की मरम्मत की उज़रत।

हिरन खुरी (स्त्री) खेती को नुक़सान पहुँचाने वाली एक क़िस्म की खुद रौ निबातात इसके लिए पत्ते हिरन के खुर की शक्ल के होते है और यह उसकी वजह तस्मिया है।

हरोत (स्त्री) हल चलाई या हलाई का ज़माना।

हरवई (स्त्री) हाली की उजरत पेषगी अदा की जाये।

हरैती (स्त्री) हल की मरम्मत की उजरत। **देखें** बनौनी।

हलैती ( ) देखें हरैती।

हरैना (पु0) बक्खर की आहनी पट्टी जो हल के वज़न को सहारने के लिए आड़ी लगी होती है इसको **आख़ला** भी कहते हैं जिसपर हल का धुरा टिका रहता है।

हफ़्त गानः (पु0) पटवारी के खातों और रोज़ नामचों का मजमूई नाम, जो हस्बे ज़ेल है। 1.फेहरिस्ते पैमाइष 2.जमाबंदी। 3.सयाहा 4. बही खाता 5. बुझावट 6. रोज़नामचा 7. जिंसवार।

हासिया (पु0) खेती काटने का औज़ार।

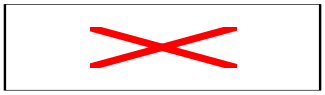

हल (पु0) खेती की ज़मीन खोदने और मिट्टी पलटने को काष्तकारी का सबसे ज़ुरूरी आलःएकार जो हस्बे ज़ुरूरत बनाया और मुख़्तलिफ़ नामों से मौसूम किया जाता है। हिन्दी भाषा में अ़वाम अक़सर अल्फ़ाज़ के तलफ़्फ़ुज़ में हर्फ़े लाम (ल़) को (र) से और (व) को (ब) से बल देते हैं। चुनाँचा हल और उससे मुतअल्लिक़ा इस्तिलाहात को अक़सर जगह हर और पेरना को वेरना बोलते सुना । इसलिए जिस मुक़ाम पर जैसा सुना वैसा ही लिख दिया। हल के दो हिस्से होते हैं एक जूए वाला हिस्सा जो इस्तिलाह में हरस या हरेस हम, लुड़ या हल कहलाता है। इसके सिरे पर जो जूआ होता है उसको माँची और हरेरी भी कहते हैं। दूसरा फार वाला हिस्सा इसको इस्तिलाह में पटन्नू, नागल या नागर, हाड़ और बाज मुक़ामात पर अगवाई, अंकोरी, जाँकिया और ढाड़ी या ढ़ाँड़ी कहते हैं। हर और नाँगल को जोड़ने वाली चोबी मैंख़ इस्तिलाह में गँधेल और औग, पाथू, पछवाँसी, जोत, चंधेली, सैली, माँझी या मंझी मछकोतर वग़ैरह नामों से मौसूम करते हैं और उसके नीचे का चोबी पुष्तीदान इस्तिलाह में धाँस और फन्ना कहलाता है। **नागल** और नागर का अहेम हिस्सा आहनी फार है जिसको चौ और कोसा भी कहते हैं और उसकी पतली नोंक जो ज़मीन खोदती है पाँस, ताँसी, काँटी और कछाली कहलाता है। गावदुम लकड़ी को जिस पर फार जड़ी होती है। चूहन, काँटी, और कछाली कहलाता है। गावदुम लकड़ी को जिसपर फार जड़ी होती है। चूहन, कुड़ाड़ी, खूपा, खोद और घुड़ कहते हैं। वह केला या जोब जो चोहन को नागर से जोड़े रहता है अगवासी कहलाता है। **कान** खोद को चौड़ा करने वाली हल की फार की नोक के क़रीब लगी हुई मैंख़। **पाखली**, **कायो** या **रूख़ानी** राहें हमवार करने का हवन में लगा हुआ तख़्ता। **परथी** मुतवाज़ी परहे बनाने का हल में लगा हुआ ख़तकष।

हल की क़िस्में 1. हैंगा या तहफारा कटी हुई खेती की जड़ें और खेत की खुद रौ निबातात साफ़ करने वाला हल। इस हल को पंचनकूरा, पंधी, दुम्बाला, दँतेला या दँताऊला, दँतियाला, कठ फावड़ी, गदन और लग्गा भी कहते हैं। **देखें** दँतियाला। **2. बक्खर** बुंदेलखण्ड में और दकन में कुसिया, सैंडू गहरी खुदाई करने वाला भारी क़िस्म का हल आमतौर से हल के नाम से मारूफ़ है। **3. लोटन** जिसको सरावन, सुहागा, सुहेल या सुहाल, गाहन, मैरा या मेरूआ मयावी वग़ैरह नामों से मौसूम किया जाता है यह हल दो मुतवाज़ी लकड़ियाँ जोड़कर बनाया जाता

है जो खेत के ढेले फोड़ने और गड़हे बराबर करने का काम देती है जब लकड़ियों के बजाये किसी क़िस्म का बेलन लगाया जाता है तो उसका नाम कुरारी, रौरी या रारी, घेरी, कोल्हू या ढँकली होता है। **4. पतेला या पटेला,** पतरी या पतौरी, पड़ौठा, खेत की ज़मीन हमवार करने का हल जिसमें एक भारी तख़्ता घिस्से की वज़अ का लगा होता है। **5. बैरा या बैरना, नाई, कोएँड़** बीज बोने का हल इसकी एक क़िस्म छँवा कहलाती है जिससे ईख बोई जाती है। **6. दिबिहरी** बीज डालने के बाद नालियों को बराबर करने का हल्का हल।

कहावत

एक हल कतिया दो हल काज।
तीन हल खेती चार हल राज।।
दोहल राव, अठ हल राना चार हल का बड़ा किरण।
दो हल खेती एक हल बाड़ी एक बैल से भली कोरी।।

हलाइता/हराइता ( ) हल चलाने की रुत, खेत की हलाई शुरू करने का वक़्त। इसे हरोत, हरैनी, हल सौत, हल खेव, हरैत भी कहते हैं।

हल बरार (पु0) देखें हल बंदी।

हल बंदी (स्त्री) हल का किराया या मुआवज़ा ए– इस्तेमाल। **2.** हल पीछे मुक़र्रिरा लगान अराज़िये मज़रूआ।

हलमोक (पु0) दूसरे के खेत पर ज़बरदस्ती क़ब्जा जमाना।

हलसाझा (पु0) मुषतरक खेती या खेती की हलाई।

हरसाझन ( ) देखें हल साझा।

हल सारी (स्त्री) देखें हल बंदी।

हल घटेट (पु0) वह खेत जिसमें खेती होती हो।

हलवाहा (पु0) देखें हाली।

हंसराज (पु0) अर्वा चावल की एक क़िस्म। **देखें** धान।

होरा (पु0) देखें होला।

होला (पु0) तैयारी पर आया हुआ अनाज का दाना या बालें वग़ैरह जिसकी कटाई शुरू कर दी जाये और जो भूनकर खाने के क़ाबिल हो गया हो। **बनाना** के साथ बोला जाता है।

हेठा (पु0) देखें इहेठा।

हेरावल (स्त्री) ढोरों या भेड़ बकरी के गल्लों को खेत में रात बसर कराने का तरीक़ा जिससे खेत को खदियाना मंजूर होता है क्योंकि इस तरह जानवरों का गोबर पेषाब खेत में हर तरफ फैल जाता है।

हेमंत (स्त्री) हेमा बमानी सर्दी मुराद मौसमे सरमा यानी फस्ले रबीअ की पैदावार।

हैंगा (पु0) खेत की जड़ें साफ करने का हल। **देखें** हल।

दूसरी फस्ल पेषा बाग़बानी

आक (पु0) आख और आँख का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** आँख।

आख (स्त्री) देखें आँख।

आलान (पु0) बेल चढ़ने का सहारा। बेल फैलने को बाँस वग़ैरह का बनाया हुआ सहारा मंढ़वा।

आँकड़ा (पु0) देखें लग्गी या लग्गा।

आँख (स्त्री) गन्ने, बाँस और इसी क़िस्म के दरख़्त की पोर पर नये पौदे के फुटाव का निषान जो आँख की शक्ल का होता है और यही उसकी वजह तस्मिया है इसी आँख से नया पौदा फूटता है इसी लिए उसको पौदे का बीज समझा जाता है। **निकलना, फूटना** के साथ बोला जाता है।

अद्गदरा (पु0) तैयारी पर आया हुआ फल।

उकसा (पु0) छोटे पौदों की जड़े गलने की बीमारी जो पानी की ज़ियादती से पैदा हो जाती है। **लगना** के साथ बोला जाता है।

प्रयोग बारिष की ज़ियादती से पौदे उकस गये।

उकस्ना (क्रिया) बीज के फुटाव का बीज से बाहर उभरना या निकलना।

अखवा (पु0) आँख का इस्मे मुसग़्गर। **देखें** आँख।

अम्रई (स्त्री) देखें अम्रय्याँ।

अम्रय्याँ (स्त्री) आम की सरे दरख़्ती या आमों के दरख़्तों का बग़ीचा।

हिन्दी गीत

झूला किन डालो है अम्रय्याँ।
बाग अंधेरी ताल किनारे, दरला छंकारे
बादर कारे बरस लागीं, बूँदें फनियाँ फनियाँ
झूला किन डालो है अम्रय्याँ।

अंतर (स्त्री) क़तार दर क़तार लगे हुये पौदों की कियारी। **2.** पौदों की बाक़रीना क़तार।

अंटा (पु0) बे तुख़्म दरख़्त या बूटों की पौद लगाने के तरीकों में का एक तरीक़ा जिसमें शाख़ को काटकर ज़मीन में दबाने के बजाये उसको कल्ला फूटने के निषान पर बनी हुई मिट्टी थोपकर ऊपर से केले की छाल या मिट्टी का ज़र्फ बाँध दिया जाता है जब उसमें जड़ें निकल आती हैं तो शाख़ को काटकर ज़मीन में लगा दिया जाता है। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

अंडकी (स्त्री) आम की पाल का गट्ठा। **देखें** पाल।

अंखौड़ा (पु0) देखें अखवा।

अंगसा (पु0) देखें आँख।

ओट (स्त्री) जानवरों से बचाने के लिए छोटे दरख़्तों के अतराफ़ आहनी या ईंट का बनाया हुआ जंगला।

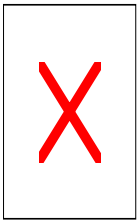

एरू (स्त्री) दकन में खाद को एरू कहते हैं। **देखें** खाद।

बारअंबा (पु0) अम्रई का लगान।

बारबटाई (स्त्री) मालिक और कारकुनों के दरमियान बाग़ के फलों की तक़सीम का तरीक़ा।

बाग़ (पु0) फूलों और फलों के दरख़्तों के परवरिष का मुक़ाम। **बनाना, लगाना, उजड़ना** के साथ बोला जाता है।

बाग़बाड़ी (स्त्री) बागीचा जिसमें फूल और तरकारी के पौदे लगाये जायें।

बाग़बान (पु0) बाग़ का रखवाला या निगेहबान।

बागम (स्त्री) बाग़ का गँवारू तलफ़्फुज़, मुराद बाग लगाने लायक़ क़तअ़ अराज़ी। **2.** आबपाषी की उमदा ज़मीन।

बाहनी करना (क्रिया) फुलवारी की कियारी को पौदे लगाने के लिए तैयार करना।

बच्चादानी (स्त्री) फूल के अंदर या नीचे फल बनने की जगह।

बिर्वा (पु0) नया और कम उम्र पौदा।

कहावत

होनहार बिर्वा के चिकने चिकने पात।

बिर्वाही (स्त्री) छोटे पौदों का चमन या कियारी।

बुड़िया (स्त्री) आग या मदार के दरख़्त का बीज जिसके चारों तरफ रुई के से लम्बे–लम्बे रेषे लगे होते हैं।

पथोरा के महलों की हो कोई आग की बुड़िया।
बने आके वह बूढ़े और बड़े नद्दाफ़ का जूड़ा।।
(इंषा)

बक्कल (पु0) दरख़्त की मोटी और सख़्त छाल। **निकलना, उड़ना** के साथ बोला जाता है।

बगोलिया (पु0) पौदों की एक बीमारी जिसमें पत्तों और शाखों पर सफेद फफूँदी की तरह का माद्दा पैदा हो जाता है जिससे पौदा जल जाता है। **लगना** के साथ बोला जाता है।

बल्लूती पत्ता (पु0) बल्लूत़ के दरख़्त के पत्ते के मुषाबा पत्ता।

बंद गोभी (स्त्री) देखें गोभी।

बौ (स्त्री) तुरई और कद्दू के क़िस्म की बेलों का डोरे की शक्ल का रेषा जो पत्तों के साथ शाख़ से घुंघराया हुआ निकलता और बेल के चढ़ने को सहारा ढूँढ़ता और उसको लिपट जाता है।

बूटा/बूँटा (पु0) छोटी क़िस्म का खुषवज़अ पौदा।

बूटी (स्त्री) ज़मीन से लगी फैलने वाली निबाताती पौदा।

बौरी (स्त्री) फल का घुंडीनुमा उभार या जमाव जो फूल के बीच में या उसके नीचे बनना शुरू हुआ हो। **जमना, लगना और बैठना, झड़ना** के साथ बोला जाता है।

बहार (स्त्री) बसंत रुत, दरख़्तों में नये पत्ते और फूल निकलने का ज़माना, निबातात के जोषे नमू का वक़्त। **आना** के साथ बोला जाता है।

बीज गड्डा (पु0) पौदों की सर दरख़्ती लगाने को तैयार किये हुये गड़हे। **2.** ख़ास क़िस्म के पौदे का बीज बोने को बनाया हुआ गड्डा।

बेल (स्त्री) निबातात की वह सिंफ़ जिसको ऊपर उठने को सहारे की ज़ुरूरत हो यानी सहारा लेकर ऊपर चढ़े। **चढ़ना, छाना** के साथ बोला जाता है।

बेल बूटा (पु0) पौदा और बेल।

बेलचा (पु0) देखें भाग एक पेषा बेलदारी पृ0

बैज़ा ख़ाना (पु0) देखें बच्चादानी।

बैज़ावी पत्ता (पु0) अंडे की वज़अ का दोनों सिरों पर दबा हुआ और बीच में से चौड़ा पत्ता।

भाँडी (स्त्री) एक क़िस्म का परवाना जो फितरतन फूलों का गुबार एक फूल से दूसरे फूल में मुंतक़िल करता है।

पाबेल करना (क्रिया) पौदों की कियारियों की खोद। पौदों की जड़ों के पास की मिट्टी पोली करना और पलटना ताकि ऊपर की मिट्टी नीचे हो पौदे को नई गिज़ा मिले।

पाल (स्त्री) बाज़ गदरे फलों को अ़मूमन और आम को खुसूसन सूखी घास में रखकर पर्वरदा करना, पुख़्ता करना। **~उठना** भुस में रखे हुये गदरे आमों का तैयार हो जाना। **~पड़ना** गदरे आमों को गर्मी पहुँचाने के लिए सूखी घास में रखना ताकि पुख़्ता हो जाये। **2. मुहावरा** गर्मी में घुट जाना। **~डालना** गदरे आमों को सूखी घास में रखना। **~खोलना या निकालना** पाल के आमों को घास से अलाहिदा करना। **3.** खाई की दरमियान क़ाबिले ज़राअ़त अराज़ी।

पाँखी (स्त्री) कियारियों की नालियों में से मिट्टी निकालने का तिकोनी शक्ल का दस्तेदार औज़ार।

चित्र पाँखी।

पत्ता (पु0) दरख़्त की बहार की शक्ल। **फूटना, निकलना** के साथ बोला जाता है।

बर्ग ( ) देखें पत्ता।

वरक़ ( ) देखें पत्ता।

पत्ती (स्त्री) पत्ते का इस्मे मुसग़्गर।

पद

आता नहीं कुछ समझ में अपनी।
कहिये उन्हें फूल या कि पत्ती।।

पत्रानुमा पत्ता (पु0) दो धारी तलवार की शक्ल का लम्बा पत्ता। जैसे सुखदास, नर्गिस वग़ैरह के पत्ते।

पतझड़ (स्त्री) दरख़्त के पुराने पत्ते झड़ने की कैफ़ियत जो आमतौर से मौसमे ख़िज़ाँ में होती है।

मौसमे खिज़ाँ ( ) देखें पतझड़ का मौसम। सर्दी का आख़िरी ज़माना।

पतौरा (पु0) घने पत्तों का दरख़्त।

पतियाना (क्रिया) दरख़्त में मामूल से ज़ियादा पत्ते निकलना और फूल फल कम आना। **प्रयोग** इस साल आम दरख़्त पतिया रहा है। इस लिए फूल नहीं है।

पट्टा (पु0) मामूली से बड़ी कियारी का थाव्ला। **~खींचना** कियारी की हद बंदी करना, मुँडेर बाँधना, बड़ी कियारी।

पटेला (पु0) कियारी की ज़मीन हमवार करने का तख़्ता।

पठार (स्त्री) ऐसा क़त्अ़ अराज़ी जिसकी सत्ह की मिट्टी के क़रीब चट्टान हों और बड़ा दरख़्त न लग सके।

परथी (स्त्री) कियारी में बीज बोने का पतली नोंक का खुरपे की वज़अ़ का औज़ार।

परौंदा (स्त्री) ज़र्द मिट्टी की ज़मीन जिसमें फलदार पौदे अच्छी तरह न फलें।

पंजानुमा पत्ता (पु0) ऐसा पत्ता जिसके किनारों में हाथ की उंगलियों से मुषाबा गहरे कटाव हों।

पंजगाला (पु0) कियारियों को साफ करने का पंजषाखा औज़ार।

पंखुड़ी (स्त्री) फूल की पत्ती।

पनेरी (स्त्री) देखें पनेर, पेषा काष्तकारी पृ0

पोथ/पोट (स्त्री) गोल गाँठ की शक्ल की जड़ या गठीली जड़।

पोथी/पोथिया (पु0) गोल गठीली जड़ का पौदा।

पोटिया (पु0) देखें पोथी या पोथिया।

पौद (स्त्री) कम उम्र छोटे पौदे जो कियारी में मजमूई तौर पर लगे हुये हों। **लगाना** के साथ बोला जाता है। **~बदलना, पलटना, फेरना** नये पौदों को एक जगह से निकालकर दूसरी जगह जमाना।

पौदा (पु0) नया पैदा हुआ या छोटा दरख़्त जिसमें शाखें न निकली हों। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

पौधारी (स्त्री) पौद की कियारी। **देखें** पैरी।

पोर/पोरी (स्त्री) बाँस, गन्ने और इसी जिंस के दूसरे दरख़्तों के तने का दो गाँठों या जोड़ों के दरमियान का हिस्सा।

पियाला ए गुल (पु0) फूल के नीचे का वह हिस्सा जिसमें फूल की पंखुड़ियाँ या उनकी डंडी जमी होती है, फूल की पत्तियों का पियालानुमा गिलाफ़।

कुंडी/मुंडी ( ) देखें पियालाए गुल।

पेरी करना (क्रिया) पौदों या कियारियों की काट छाँट करना।

पेड़ (पु0) दरख़्त। दकन में झाड़ कहते हैं।

पेड़ पौदा (स्त्री) छोटे पौदों की जड़ों के चारों तरफ चढ़ाई हुई मिट्टी।

पेवंद (पु0) जोड़, बाग़बानों की इस्तिलाह में हम जिंस दरख़्तों में आला क़िस्म के दरख़्त की शाख को अद्ना क़िस्म के दरख़्त की शाख़ के साथ वस्ल कर देने के अ़मल को कहते हैं जो उमदा क़िस्म पैदा करने का एक तरीका है। **लगाना, बाँधना** के साथ बोला जाता है।

पेबंदी दरख़्त (पु0) पेबंद किया हुआ दरख़्त। **देखें** पेबंद।

फटकी (स्त्री) देखें खटका।

फल (पु0) दरख़्त का हासिल। **आना, लगना, उतरना, झड़ना, गिरना** के साथ बोला जाता है। हिन्दुस्तान के फल हस्बे ज़ेल है। आम, अनार, आड़ू, आलूचा, अंजीर, अरंड, खरबूज़ा, अनन्नास, अमरूद, बड़हल, बही, बेर, तरबूज़, जामुन, ख़रबूजा, खूबानी, रस भरी, सपाटू, सरदा, संतरा, सेब, शरीफ़ा, फ़ालसा, कट्ठा, कमरख़, करौंदा, खिरनी, केला, कटहल, गोदनी, लौकाट, लीची, लेमू, मीठा, नाख़, नारंगी, नाषपती, मोज़म बही।

फल पँख (पु0) वह पत्ता जिसमें केले की गाभ लिपटी हुई होती है।

फलदान (पु0) फल रखने का बर्तन।

फलकर (पु0) फलों का महसूल, बाग़ का लगान।

फलन (स्त्री) फल आने की हालत।

फलना (क्रिया) दरख़्त में फल लगना।

फुलवारी (स्त्री) फूलों की कियारी, फूलदार पौदे।

फुलंग/फुंग (स्त्री) बड़े और ऊँचे दरख़्त की चोटी यानी सबसे ऊँचा सिरा।

फूट (स्त्री) खरबूज़े के जिंस का एक फल।

पहेली

खेत में उपचे सब कोई खाये।
घर में होये तो घर बह जाये।।

फूल (पु0) उर्दू में जिस फूल को गुलाब कहते हैं। फ़ारसी में उसके लिए लफ़्ज़ गुल मख़सूस। उर्दू में फूल के लिए लफ़्ज़ गुल बोला जाने लगा। हिन्दुस्तान के मषहूर फूलों के नाम हस्बेज़ेल है इसमें बहुत नाम जो ग़ैर मारूफ़ हैं तर्क कर दिये गये हैं।

रविश की सफ़ाई पर बे अख़तियार।
गुले अष्रफ ने किया ज़र निसार।
चमन से भरा बाग गुल से चमन।
कहीं नरगिस व गुल कहीं यासमन।
चँबेली कहीं और कहीं मोतिया।
कहीं रायबेल कहीं मूगरा।
खड़े शाख़ शब्बू के हर जा निषान।
मदनबान की और ही आन बान
कहीं इर्गुवाँ और कहीं लालाज़ार।
कहीं जाफ़री और गेंदा कहीं
समाँ शब को दाऊदियों का कहीं
खड़े सर्व की तरह चम्पे के झाड़
कहे तू कि खुष्बुओं के पहाड़।
कहीं ज़र्द नसरीन कहीं नसतरन।
अजब रंग के ज़ाफरानी चमन।
रियाहीने सरसब्ज़ ताज़ा बहार।
वह फूली। हिना हर तरफ़ इत्रबार।
बनफ़षा कहीं सुंबुल तर कही।
कहीं सौसन और गुलबहार आफ़रीन।
चाँदनी के फूल रौषन चाँदनी के नूर से।
चाँदनी ऐसी कि तुम पत्तों को गिन लो दूर से।
वह सुर्ख़ी में सँभलके गुल बे अदील।
दिखाते हैं लुत्फे रियाज़े ख़लील।
वह सुर्से के फूलों की बू तेज़ तुंद।
जिसे सूँघते ही खुले ज़हने कुंद।
किरनफूल गौहर लिये बेषुमार।
दिखाता है चाँदनी के घुंघरू मदार।
वह सजन के वह सुर्ख घंगची के फूल।
अमलतास और माल कंगनी के फूल।

गुले रेहान (नियाज़बू) रात की रानी या गुले शब्बू, गुले आफताब या सूरजमुखी, गुले तस्बीह, गुले तुकमा, गुले फरंग, गुलेषाह पसंद, गुले नाफरमानी, गुले ज़मबक़, गुले महोबा या चकान, गुले मरजान, गुले मेहंदी, गुलनार, गुले अब्बास, गुल इष्क़े पेचा, गुले नौरंग, गुले चीन, गुले पहना या कहार, गुलेख़ार या भटकटैया। गुले अरकम, गुले सेवती, गुले केवड़ा, गुले निवाड़ा, गुले पयादा, गुले जोई, गुले ख़तमी, गुले सोरंजन, गुले यूसुफ, गुले नीलोफर। देहली के क़रीब क़स्बा महरौली में एक मेला बर्सात में लगता है जो फूलवालों की सैर के नाम से मषहूर है इस मेले की कैफ़ियत बाज़ कुतुबे अदब में दर्ज है।

ताज गुल (पु0) बाज़ फूलों के बीज का लम्बा रेषा जिसके सिरे पर घुंडी की शक्ल का ज़ीरा होता है।

तख़्ता (पु0) एक ही क़िस्म की दरख़्तों की बराबर लगी हुई पौद, मसलन गुलाब का तख़्ता, मोतिया का तख़्ता। **प्रयोग** बाग में जगह–जगह गुलाब और मोतिया के तख़्ते लगे हुये है।

तख़्ता बंदी (स्त्री) एक ही उम्र और एक ही क़िस्म के पौदों का मुक़र्रिरा जगह पर

लगाने का तरीक़ा। **करना** के साथ बोला जाता है।

तना (पु0) बड़े दरख़्तों का जड़ के ऊपर का लम्बा और मोटा हिस्सा जिसपर डाले डालियाँ और शाखें निकलती हैं।

तनावर दरख्त (पु0) तने वाले दरख़्त, बड़े क़िस्म के पेड़।

तहफारी (स्त्री) पौदों की जड़ें गोदने और बीज बोने का तीन फलों का खुर्पा।

चित्र तहफारी।

तहषाख़ा खुर्पा ( ) देखें तहफारी।

तीरनुमा पत्ता (पु0) नुकीला और लम्बोतरा पत्ता।

थावला/थाँवला (पु0) दरख़्त की जड़ के अतराफ़ पानी की रोक को मिट्टी का बनाया हुआ घेर।

थान ( ) देखें थावला।

थाली ( ) देखें थावला।

थला ( ) देखें थावला।

घेर ( ) देखें थावला।

हाला ( ) देखें थावला।

थल (पु0) देखें थावला।

थन/थनी (पु0) बेफूल दरख़्त के डाले का कल्ला जिसमें फल निकलता है। जैसे अंजीर और गूलर का थन अगर इसको तोड़ दिया जाये तो फिर इस जगह फल न निकले। **निकलना** के साथ बोला जाता है।

टपका (पु0) पक्का हुआ आम जो खुद ब खुद शाख़ से गिरने लगे। **लगना** के साथ बोला जाता है।

टट्टी (स्त्री) सदाबहार पौदों की क़तार जो चमन या कियारी के अतराफ़ बतौर बाड़ लगाई जाये। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

बाड़ ( ) देखें टट्टी।

टोटा/टाँटा (पु0) केले के दरख़्त का तना जिसमें से गेल निकल चुकी हो और जड़ में नई पौद फूटी हो।

टहना (पु0) तने में निकला हुआ छोटा तना जो उसकी मुख़्तलिफ़ समतों से निकलता और फैलता है।

टहनी (स्त्री) टहने का इस्मे मुसग़्ग़र।

ठुंड (पु0) तने या टहने का बे बर्ग व शाख़ सिरा।

ठंड मारना (क्रिया) पौदों को सरदी लग जाना, जिससे वह जल जाये।

पाला मारना (क्रिया) देखें ठंड मारना।

समरा (पु0) देखें फलकर।

जामिन/ज़ामिन (पु0) ज़ामन का ग़लत तलफ़्फुज़। फूल के अंदर या नीचे फल के जमने की महफूज़ जगह। **देखें** गाभ।

जटा (स्त्री) बरगद या बट के दरख़्त की डालों में लटकती हुई जड़। **2.** नारियल का रेषा।

जाबजा फूलों के गुंचे जाबजा बेलों के जाल।
जबजा खोले है बर्गद की जटायें अपने बाल।।

जड़ी (स्त्री) वह निबातात जिसकी जड़ ही उसका फल या बीज होता है।

जड़ीला (पु0) वह पौदा जिसमें जड़ें जालदार और ज़ियादा फैली हुई हों और अपने इर्द गिर्द के पौदों को नुक़सान पहुँचायें ऐसी जड़ों की ज़ियादती फूलों की कमी का बाइस (बाअ़िस़) होती हैं।

जुलखा (पु0) फल रखने की जाली या जाल।

जलना (क्रिया) पौदे या दरख़्त का सूख जाना।

जंदरा (पु0) देखें जबली काष्तकारी।

जेलन/झेलन (स्त्री) ज़ियादा फैले हुये दरख़्त की कमज़ोर शाखों को सहारने वाली लकड़ी जो बतौर आड़ लगाई जाये।

झारा (पु0) देखें भाग एक पेषा बेहिष्ती पृ0

झारी ( ) झारा का इस्मे मुसग़्गर।

झाँकड़ (पु0) पतझड़ हुआ दरख़्त या पौदा, पत्ते झड़ी हुई शाख़ें।

झुंड (पु0) गुंजान सर दरख़्ती बराबर बराबर लगे हुये दरख़्तों का तख़्ता।

झंडोला (पु0) घने पत्तों का दरख़्त या पौदा।

झोरा (पु0) बरहों की कियारी जिसकी मुंडेरों में ऐसा बीज बोया जाता है जिसको पानी से बचाना होता है। बीज को तरी पहुँचाने के लिए नालियों या बरहों में पानी देते हैं जिसकी सील मुंडेर में पहुँचती रहती है।

चटका (पु0) गर्मी के मौसम की तेज़ धूप जो पौदों को जला दे। **लगना, मारना** के साथ बोला जाता है।

चष्मा (पु0) **बाँधना, लगाना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** आँख।

चुली (स्त्री) घाई। **देखें** जेलन।

चमन (पु0) सदाबहार पौदों का छोटा बाग़ीचा।

चमन बंदी (स्त्री) चमन बनाने का तरीक़ा ए कार।

चम्का (पु0) **देखें** चटका।

चौपतिया पत्ता (पु0) चौ पखुंडी पत्ता इसी तरह दो पतिया और तह पतिया पत्ता भी कहलाता है।

चोटी (स्त्री) **देखें** फुंग।

चियाँ (पु0) इमली का बीज।

छाल (स्त्री) नया और कच्चा बक्कल। तने या शाख़ का झिलका। **देखें** बक्कल।

छत्ता (पु0) भिड़ो या शहद की मक्खियों का घर जो दरख़्त की शाखों में लगा लिया जाता है।

खोषा (पु0) फलों का गुच्छा।

दार्बस्त (स्त्री) **देखें** मंडवा।

कहूँ क्या मैं कैफियते दारबस्त।
लगाये रहें ताक वाँ मै परस्त।।

दब्बा (पु0) पौदे की शाख़ से नया पौदा पैदा करने को ज़मीन में दबाई हुई शाख़। बाज़ बेतुख़्म् पौदों की पौद पढ़ाने को उनकी शाख़ ज़मीन में दबा देते हैं जब इसमें जड़ें निकल आती हैं तो इसको दरख़्त से काट देते हैं। इसी तरीक़े को ज़मीनी और अंटे को अलौनी दब्बा कहते हैं। **देखें** अंटा।

दरख़्त (पु0) पेड़, झाड़, शजर। हिन्दुस्तान में बाहर से जो दरख़्त लाकर लगाये जाते हैं इनमें हस्बेज़ेल ख़ास हैं। **1.** सरू **2.** सनोबर **3.** चिनार **4.** सफेदा **5.** बेदमूला वगैरह।

दर्रे (पु0) कियारियों की मिट्टी की फटन जो खुष्की से पैदा हो जाये।

दुमरेज़ी (पु0) दो फस्ली दरख़्त यानी वह दरख़्त जिसमें साल में दो मर्तबा फल आये।

दंतेला पत्ता (पु0) कटावदार किनारों का पत्ता।

दो पतिया पत्ता (पु0) **देखें** चौपतिया पत्ता।

दूला/देवला (पु0) दालों वाला बीज जब वह फूटता है तो इसकी दोनों दालें पत्तों की शक्ल में फूट निकलती है।

डाला (पु0) **देखें** टहना। **प्रयोग** नीम का डाला गिरने से दीवार टूट गई।

डाली (स्त्री) डाले का इस्मे मुसग़्गर। **देखें** टहनी। **2.** डाल बरी, डाल मौनी। ताजा फलों भरी चंगेर जो फ़सल पर बतौर नज़राना मालिक को पेष की जाये या शादी बियाह की तक़रीब में दी जाये। **लगाना, देना, लाना** के साथ बोला जाता है।

डग (स्त्री) डंगाल, **देखें** लग्गी।

डग्गी/डंगी (स्त्री) डंगरिया। **देखें** लग्गी।

डंठल (पु0) घास की क़िस्म की निबातात की फूल की शाख़ जो पौदे के बहार पर आने के वक़्त पत्तों के बीच में निकलती

है। **2.** पोर वाला बे बर्ग और गूदेदार तना।

डाँगस (पु0) देखें लग्गी।

ढाल (स्त्री) देखें कतारा।

ढूला (पु0) देखें थावला।

रानी (स्त्री) खुद रौ पौदा, वह पौदे या निबातात जिनका बीज ज़मीन में महफूज़ रहता है और बरसात या अपने वक़्त पर खुद ब खुद फूट आता है।

रखवाला (पु0) बाग़ के फल फूलों का निगेह बानी करने वाला।

रग (स्त्री) पत्ते की गिज़ा की नाली जो उसके रस की नाली कहलाती है। **जैसे** हैवान के जिस्म में खून की नसें।

रनढक (पु0) वह दरख़्त जिसमें फल आना बंद हेा गया हो। **2.** वह दरख़्त या पौदा जिसमें फल फूल न आता हो।

रविष (स्त्री) बाग के अतराफ़ या चमन के दरमियान बनाया हुआ चहलक़दमी का रास्ता।

जुमुर्रुद की मानिंद सब्ज़े का रंग।
रविष पर जवाहर लगा जैसे संग।।

रूख (पु0) दरख़्त, पौदा, सब्जा।

कहावत

रूख बिना न नगरी सोहे बिन बरगन न कड़ियाँ।
पूत बिना न माता सोहे लाख सोने में जड़ियाँ।।
–जहाँ रूख नहीं वहाँ अरंड रूख–

ज़र (पु0) सुर्ख़ी माइल ज़र्द रंग का ज़ीरा जो गुलाब के फूलों के बीच में खुसूसन और बाज़ दूसरे फूलों में भी हेाता है। इसको ज़रे रेषा और ज़ीरा ए गुल भी कहते हैं।

ज़मीन बनाना (क्रिया) पौदों के लिए कियारियाँ तैयार करना, ज़मीन में खाद देना और दुरूस्ती करना।

जूरापल (पु0) झुर्रापन का ग़लत तलफ़्फुज़। पौदों को पत्तों की ऐंठ या सुकड़ापन जो चूनी की ज़ियादती से पैदा हो जाती और एक क़िस्म की बीमारी कहलाती है।

ज़ीरा (पु0) इसको शीरा ए गुल और ज़रे गुल भी कहते हैं मुख़्तालिफ़ क़िस्म के फूलों में मुख़्तलिफ़ वज़अ़ के दाने जो फूल के बीज में पंखुड़ियों के अंदर होते हैं। **देखें** ज़र।

साँखी (स्त्री) देखें जेलन।

सदाबहार पौदा (पु0) हमेषा फूल लाने वाला पौदा।

सरावन (स्त्री) देखें कुल्ला। **2.** आँख का फुटाव। **देखें** आँख।

सरदरख़्ती (स्त्री) बाग में लगाये हुये दरख़्त के तख़्ते। **प्रयोग** आम की सर दरख़्ती लगाये पाँच बरस हुये अभी तक फल नहीं आया।

सलाई (स्त्री) बाज़ फूल जिनमें ज़र के बजाये लम्बे रेषे और उनके सिरों पर ज़ीरा होता है उस रेषे को इस्तिलाह में सलाई कहते हैं।

सुहानी (स्त्री) देखें पटेला।

सीखड़/सुख आड़ (पु0) ढोड़े खुष्क करने का मंडवा जिसपर वह फैला दिये जायें या रख दिये जायें। पेषा कुम्हार में एक लफ़्ज़ जेकड़ है जिसका मफ़हूम लफ़्ज़ सीकड़ से मिलता है।

शाख (स्त्री) टहनी का फुटाव। टहनी में निकली हुई छोटी टहनियाँ।

तुर्रा (पु0) फूल की ज़ीरेदार सलाइयों का गुच्छा।

गुबार (पु0) ज़रे गुल की रफ़ी या वह बारीक और मुलायम रूआँ जो बीज के जमाव के ऊपर होता है। **आना, बन्ना** के साथ बोला जाता है।

ग़िलाफी पत्ती (स्त्री) फूल पंख, वह पत्ती जिसके अंदर कली लिपटी हुई निकलती है।

फूल पंख ( ) देखें गिलाफ़ी पत्ती।

गुंचा (पु0) आधी खिली कली। **देखें** कली।

फ़रास (पु0) षिगाफ़ जो गोंद निकालने के दरख़्त की छाल में लगाया जाये बाज़ जगह **अतल** और बाज़ जगह **छोटी माई** कहते हैं।

कुतुबनुमा पत्ता (पु0) वह पत्ता या पत्ते जिसके बीच में यानी मर्कज़ में डंडी होती है। जैसे कँवल का।

क़लम (स्त्री) बेतुख़्म पौदे की शाख़ जो नया पौदा पैदा करने के लिए दरख़्त से काटकर ज़मीन में लगा दी जाये। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

क़लमी दरख़्त (पु0) वह दरख़्त या पौदा जो क़लम से पैदा हुआ हो। **2.** वह दरख़्त जिसके छोटे पौदे शाख को उसी जिंस के किसी बड़े दरख़्त की शाख़ से मिलाकर बाँधने से पैदा हो। जब बड़े दरख़्त की शाख़ छोटे पौदों की शाख से वस्ल और एक जान हो जाती है तो उसको दरख़्त से काट दिया जाता है इसतरह छोटा पौदा बड़े दरख़्त की खुसूसियात का हामिल हो जाता है। ऐसे बनाये हुये दरख़्तों को पेवंदी या क़लमी दरख़्त और उनके फलों की पेवंदी फल कहते हैं।

काटी दरख़्त/काठिया दरख़्त ( ) वह तुख़्मी पौदा जिस पर उसी जिंस के बड़े दरख़्त का पेवंद दरख़्त बने।

काठिया फल (पु0) यह इस्तिलाह ख़ास तौर से आम के लिए जो उर्दू में तुख़्मी आम कहलाता है और आमतौर से ऐसे फलों के लिए बोली जाती है। जो तुख़्मी दरख़्त से पौदा होते हैं जिनको पेवंद बनाया जा सकता है।

काँटी (स्त्री) पौदों के अतराफ़ काँटोंदार लगी हुई ओट। **देखें** ओट।

काहना (क्रिया) फलों या फलियों से बीज निकालना।

कबाड़ (पु0) मुख़्तलिफ क़िस्म के जंगली खुद रौ पौदे और घास जो कियारियों में पैदा हो जाये। **साफ करना** के साथ बोला जाता है।

कतार (पु0) गोल शक्ल की बड़ी पक्की हुई इमली।

ढंगाल ( ) देखें कतार।

कच्ची बहार (स्त्री) मौसमी फूलों की पौद जो चंद हफ्ते या चंद महीने अपनी बहार दिखाकर खत्म हो जाये। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

कुरा (पु0) बेदाल वाले तुख़्म का नया फुटाव।

कड़का/काड़का (पु0) हिन्दी में लफ़्ज़ काड़ना बमानी किसी चीज़ को किसी चीज़ में से निकालना बोला जाता है। बागबानों की इस्तिलाह में कड़का से ऐसी **बहारी** जिससे दरख़्तों के पत्तों पर की धूल झाड़ी जाये मुराद ली जाती है।

कस्सा (पु0) थावले बनाने और कियारी की मिट्टी कुरेदने का मालियों का औज़ार।

कस्सी (स्त्री) कस्से का इस्मेमुसग़्ग़र।

कल्गी (स्त्री) फूल का बुर्रा। **देखें** तुर्रा।

कल्ला (पु0) दरख़्त या पौदे की नई शाख़ या कोपल के फुटाव का उभार जो पुरानी शाख़ में निकले। **फूटना, निकलना** के साथ बोला जाता है।

वह बूँटो पर कल्ले लगे फूटने।
अनादिल के छक्के लगे छूटने।।

~लगाना, चढ़ाना ख़ासकर गुलाब और बाज़ दूसरे पौदों में एक पौदे का कल्ला तराषकर दूसरे पौदे की शाख़ की झाल में षिगाफ़ देकर उस कल्ले को जमाकर बाँध देता, जिसतरह क़लम बाँधी जाती है।

कली (स्त्री) बंद गुंचा, सर बस्ता गुंचा।

कुंज (पु0) गुंजान सरदरख़्ती जिसमें धूप न छने।

कुंडी (स्त्री) देखें पियाला व गुल।

कोट (पु0) गेंदे और दूसरे गुच्छेदार फूलों की सबसे ऊपर की पंखुड़ी।

कोँपल (स्त्री) दरख़्त के नये पत्ते का फुटाव, टहनियों में नया फुटाव।

वह शाखों में कोँपल निकलने लगी।
दरख़्तों की सूरत बदलने लगी।

कूँडा (पु0) देखें गमला भाग तीन, पेषा कुम्हारी पृ0

कियारी (स्त्री) छोटे पौदे लगाने या बीज बोने का गज़ या दो गज़ मुरब्बअ़ क़तअ अराज़ी। कियारियाँ मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बनाई जाती है। **प्रयोग** चमन में हर तरफ खूबसूरत कियारियाँ बनी हुई है।

खाद देना (क्रिया) फूलों के पौदों की जड़ों में खाद फेलाना।

खटका (पु0) परिंदों को डराने और उड़ाने के लिए फलदार दरख़्तों पर बाँध कर लटकाया हुआ खोखले बाँस का टूटा या टीन का डब्बा, जिसको उसके ज़रिये हिलाकर टहने से टकराते हैं ताकि आवाज़ पैदा हो और परिंद उड़ जायें।

खुटकना (क्रिया) बीज का ग़िलाफ़ यानी ऊपर का छिलका। फुटाव की नोंक के पास से फटना या चटख़ना।

खटखटा (पु0) देखें खटका।

खर (स्त्री) खुद रौ घास जो कियारियों में निकल आये।

खरहर (स्त्री) देखें कड़का।

खरिया (स्त्री) घास का गट्ठा, बाँधने की रस्सी की बनी हुई जाली।

खड़खड़ा (पु0) देखें खटका।

खोकला/खोखा (पु0) वह तना जो अंदर से खाली हो जैसे बाँस, नरकुल वगैरह या जिसका अंदर का हिस्सा गल गया या सूख गया हो।

गाभ/गाभा ( ) केले, खजूर वग़ैरह की सरबंद गुल्ली जिसमें फल या बीज के गुच्छे तह दर तह लगे हों। **~आना** फलों की गुल्ली फूटना।

गावचा (पु0) बड़ी क़िस्म के दरख़्त लगाने को तैयार किया हुआ गड़हा।

गोचा ( ) देखें गावचा।

गुप्फा (पु0) फूल की पंखुड़ियों का खन या गुच्छम।

गुच्छा (पु0) शाख में लगे हुये फल या बीजों का मजमूआ।

गुद्दा (पु0) दरख़्त के तने का सिरा या सिरे पर निकला हुआ मोटा डाला जो इधर उधर फैल गया हो।

गद्राफल (पु0) तैयारी पर आया हुआ फल।

करम कल्ला (पु0) देखें फूल।

गुल (पु0) देखें फूल।

गुल फुन्ना (पु0) वह पौदे जिनपर गुच्छेदार तुर्रे निकल आते हैं। जो उनके फूल होते हैं और गुलफुन्ना कहलाते हैं जैसे कंगनी के गुल फुन्ने।

गुलचीँ (पु0) चमन के फूल तोड़ने वाला माली। **2.** एक फूल का नाम।

गुल दस्ता (पु0) हाथ में रखने को मुख़्तालिफ़ क़िस्म के फूलों का बनाया हुआ गुच्छा या गुप्पा।

गुलख़ार (पु0) देखें फूल।

गुलरिया (पु0) गूलर के दरख़्तों का झुंड।

गुलज़ार (पु0) देखें गुलषन।

गुलषन (पु0) फूलों का चमन।

गुलू (पु0) फूल के अंदर फल की बैठक या बच्चेदानी।

गुलौंदा/गुलैंदा (पु0) देखें गुलू।

गमला (पु0) देखें कूँडा।

गँठौला (पु0) पोरदार ढंठल का पौदा या दरख़्त जिसके तने में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठ हो, दो गाँठों के दरमियानी हिस्से को इस्तिलाह में पोर कहते हैं।

गोभ (पु0) पौदे की जड़ें शाखदर शाख़ घना फुटाव जो पौदे कमजोर करे और उसके

बढ़ने को रोक दे। **निकलना, आना** के साथ बोला जाता है।

गोभी/गोबी (स्त्री) एक ख़ास क़िस्म का फूल जो बतौर तरकारी खाया जाता है। इसकी एक क़िस्म बंदगोभी या करम कल्ला कहलाती है जो सिर्फ पत्तों का एक बड़ा बंद गुप्फा होता है।

गोचर (पु0) खाद बनाने का गड़हा। **देखें** गावचा।

गोद/गोदा (स्त्री) पौदों की जड़ों के पास की मिट्टी कुरेदने और पोला करने का अ़मल। **लगाना, करना** के साथ बोला जाता है।

गोधल (स्त्री) घास की लम्बी जड़ें जो ज़मीन के अंदर दूर तक फैलकर छोटे पौदों को नुक़सान पहुँचाये।

गोड़ करना (क्रिया) देखें गोद करना, गोदना।

गोमा (पु0) गाँठ की शक्ल का फल जो जड़ के ऊपर पैदा हो। जैसे अनन्नास।

गैल (स्त्री) हिन्दी में गैल बमानी साथ के होते हैं यानी किसी का साथ देना। **देखें** गाम।

कहावत

तेली का बैल क्या जाने गैल।
खल खाये लगा रहे घानी से।।

घन/घना (पु0) दरख़्त या पौद के पत्तों और शाखों का ज़ियादा फैलाव या घेर घना दरख़्त या पौदा, हिन्दी में घना बमानी ज़ियादती बोला जाता है।

लग्गी (स्त्री) ऊँचे दरख़्त के फल तोड़ने की आँकड़ेदार लम्बी छड़ जिसमें फल लेने को एक जाली आँकड़े के क़रीब बंधी होती है।

लग्गा ( ) लग्गी का इस्मे मुकब्बर।

लोहिया काँबर (स्त्री) बहुत सख़्त क़िस्म की ज़मीन जिसमें नाज़ुक जड़ों का पौदा न लग सके। **2.** वह क़तअ़ अराज़ी जिसमें चट्टान सत्ह के क़रीब हो। **देखें** पठार।

लहलहाना (क्रिया) पौदों और दरख़्तों का बहार पर होना, फूल पत्तों से आरास्ता होना।

हवाये बहारी से गुल लहलहे।
चमन सारे शादाब और थे हरे।।

मादकीन (स्त्री) वह फूल जिसमें फल जमे या पैदा हो।

मादा फूल ( ) देखें मादकीन।

माली (पु0) चमन बंदी करने वाला पेषेवर।

माँझो (पु0) देखें जंदरा।

मद (पु0) नीम और बाज़ ख़ास दरख़्तों का जौहर या मस्त पानी जो ख़ास दरख़्तों की डालों से टपकने लगता है।

मुदव्वर पत्ता (पु0) गोल शक्ल का पत्ता।

मुषज्जर (पु0) दरख़्तों का झुंड।

मगरी (स्त्री) थावले की मुंडेर।

मुल्का/मूलका (पु0) दालों वाले बीज में जड़ की अ़लामत जो बीज फूटने पर जड़ बन जाती है।

मंडला (पु0) केले के दरख़्त का तना।

मँढ़वा (पु0) बेल चढ़ाने का सहारा बाँस वग़ैरह का बनाया हुआ ठाट जिसपर बेल चढ़े और फैले।

मौर (पु0) आम का फूल।

मोरसखा (स्त्री) एक क़िस्म की खुदरौ निबातात अज़ क़िस्म जड़ जो खुष्क हो जाने के बाद बरसात में हरी हो जाती है।

मूसली (स्त्री) केले की गाभ या कली।

नारा (पु0) नारियल का रेषा जो उसके छिलके के ऊपर होता है।

निबरिया (स्त्री) नीम के पौदे की सरदरख़्ती।

निमटाव (पु0) देखें गाभ।

नौरंगी (स्त्री) मेवे के दरख़्तों की नई सरदरख़्ती। **2.** मुख़्तालिफ़ क़िस्म के छोटे पौदों का चमन।

नोनिया (पु0) एक क़िस्म की हरियावल या सब्ज़ा। जो गर्मियों में सरसब्ज़ रहती और बरसात में जल जाती है। बरसात का पानी उसके लिए ज़हर होता है। इसकी कई क़िस्में होती हैं जो इकहरा नोनिया और दुहरा नोनिया वग़ैरह नामों से मअरूफ़ है।

नै (स्त्री) फूल के बच्चेदानी के नीचे की डंडी।

नीमकौरी (स्त्री) नीम का फल।

निबौली ( ) देखें नीमकौरी।

हिंचकी (स्त्री) दरख़्त से फल तोड़ने की आँकड़ीदार छड़। **देखें** लग्गी।

हिलाली पत्ता (पु0) क़ौसनुमा पत्ता।

तीसरी फस्ल आबपाषी

आबपाषी (स्त्री) देखें सिंचाई।

आबियाना (पु0) खेती के लिए सरकारी ज़रिये यानी नहर से पानी लेने का महसूल या मुआवज़ा।

जलकर ( ) देखें आबियाना।

आख्रा (पु0) देखें ओखरा।

अड़ासन (स्त्री) चरस या ढोल का पानी गिरने को कुँये के बराबर बनी हुई हौदक आ चौबच्चा।

अड़ाड़ा (पु0) नहेर के दो तरफा बनाया हुआ ऊँचा किनारा या पुष्ता।

उस्रा (पु0) नहर से पानी मिलने के वक़्त जो बारी बारी से आता है।

असीचा (पु0) वह खेत जिसमें पानी न दिया गया हो या वह खेत जिसमें आबपाषी न हो सके।

अकवाई (पु0) नहरी इलाक़े के सिर्फ आधे हिस्से में पानी पहुँचाने वाला एक रूख़ा रजबहा।

अखौट/अखौटा (स्त्री) ढेकली की बल्ली जिसके ऊपर के सिरे में पानी का बर्तन लटका होता है। **देखें** ढेकली।

इंदारा (पु0) संस्कृत अंधू बमानी कुँआ। इँध बमानी रौषन करना, मुराद बड़े दौर का गहरा कुँआ।

अनूआ/अंवा (पु0) नहेर का चोब्चा। नहेर के किनारे बनाया हुआ ऐसा हौदा जिसमें से पानी ऊपर लिया जा सके। **2.** नहेर के किनारे पानी निकालने को बनी हुई जगह।

औरी (स्त्री) नहर का पाखा, मिट्टी का बनाया हुआ ढालू किनारा।

औखरा/अखरा (पु0) बाज़ मुक़ामात पर हर्फ (र) को (ल) से बदलकर और (व) की आवाज़ को ख़फ़ीफ करके आखला तलफ़्फुज़ करते हैं। कुएँ की गरंड की वह खड़ी बल्लियाँ जिसमें लाड़ के चाक यानी घिरनी का धुरा लगा होता है अगर आखला टूट जाये तो धुरे को नुक़सान पहुँचे। **देखें** गरंड। **2.** पेली के पट्टे की ना यानी मर्कज़ी हिस्से को बराबर धुरे या धुरी के सारने को लगे हुये चोबी डंडे। **देखें** भाग पाँच पृ0

ओगड़ा (पु0) ओखरा या अखरा का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** ओखरा।

अहरा/ऐरा (पु0) चरस का पानी गिरने को कुंये के मुंह से मिली हुई पक्की बनी हुई महदूद जगह। **देखें** भाग तीन पृ0 लफ़्ज़। ऐरा।

एक लावा कुँआ (पु0) वह कुँआ जिसपर सिर्फ एक लाव चले।

बारा (पु0) चरस का रस्सा। मुअल्लिफ़ फर्हंगे आसिफिय्या ने इस लफ़्ज़ के मानी चरस खींचते वक़्त का गीत लिखा है जो ग़ालिबन बारा लाइयों के नारे से जो चरसिया चरस के ऊपर आने पर बैल वाले को मुख़ातिब करने के लिए लगाता

है और जिसका मतलब चरस का रस्सा छोड़ देना होता है, ग़लत मतलब समझा है। एक अंग्रेज़ सिविलियन ने ग़लत फहमी से अपनी तारीफ़ में इस लफ़्ज़ को बाहरा लिखकर उसके मानी कुयें के बाहर खड़ा होने और चरस का पानी गिराने वाला शख़्स लिखे हैं। लेकिन मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर दरयाफ़्त करने और अ़मल देखने से यही तहक़ीक़ हुआ कि बारे से मुराद चरस की रस्सी है। जो हिन्दी लफ़्ज़ का उर्दू तलफ़्फ़ुज़ है।

बर्दी/बर्धी (पु0) बैल के चमड़े का ढोल, मुराद चरस बर्द हिन्दी में बैल को कहते हैं। चूंकि चरस बैल की बड़ी आधी खाल का होता है इसलिए चरस को बाज़ मुक़ामात पर इस्तिलाह में बर्दी कहते हैं।

बर्का (पु0) बगैर कोठी की गड़हे की शक्ल खोदा हुआ कुआँ। पानी का बड़ा गड़हा। **देखें** बरकुवैनाल।

बरकुवैनाल (पु0) मामूली कच्चा कुँआ जो आरज़ी जुरूरत के लिये खोद लिया जाये।

बिरैत/बिर्त (स्त्री) देखें बारा। **2.** ढ़ेकली के ढोल की रस्सी या गुर्हन।

बरहा (पु0) खेत में पानी पहुँचाने की कच्ची नाली।

बरा ( ) देखें बरहा।

बर्हया (पु0) खेत को पानी पहुँचाने वाला मज़दूर। सिंचाई करने वाला।

बड़ूड़ (स्त्री) देखें भौंरी।

बंदताल (पु0) देखें बंधदास।

बंधदास (पु0) पुष्ता बंद पानी का गड़हा जिससे खेत को पानी दिया जाये।

तग़ार ( ) देखें बंधदास।

कट्टा ( ) देखें बंधदास।

बिंगा (पु0) तेलिया पानी, चष्मे या कुयें का ऐसा पानी जिसमें किसी क़िस्म के तेल के अज़्ज़ा मिले हुये हों।

बोदर (स्त्री) देखें डाल।

बहा (पु0) आबपाषी की नहेर से निकाला हुआ नाला जो खेतों के किनारे किनारे बहता है और जिससे बरहों में पानी लिया जाता है।

बहाई (स्त्री) भराई, पनियाई **2.** खेत को पानी पहुँचाने की उजरत। **देखें** सिंचाई।

कहावत

गेहूँ बढ़े बहाई से, चना बढ़े दलाई से
धान बढ़े गहाई से, मकई बढ़े निलाई से
ईख बढ़े कसाई से।

बहन (स्त्री) पानी का छोटा नाला पानी या नलिया। **देखें** बहा।

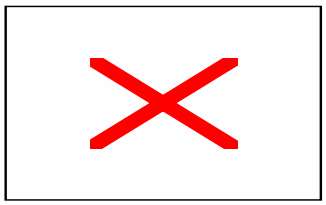

बेड़ी/बँड़ी (स्त्री) रजबहे से पानी निकालने का एक क़िस्म का टोकरी की शक्ल का तिनकों का बना हुआ ढोल जिससे नहर का पानी उछाल कर सतहे आब से ऊँची ज़मीन पर पहुँचाया जाता है।

बेड़ी ( ) देखें बेंड़ी।

बँड़ा/बँडा (पु0) कच्चे कुयें की मिट्टी की रोक को झाऊ की शाखों का बनाया हुआ गोला या कोठी।

भराई (स्त्री) सिंचाई।

भौंरा/भौंरू (पु0) लाव के बैलों की आमदोरफ्त का ढालू रास्ता या रप्टा जो खो की शक्ल हस्बे जुरूरत लम्बा और गहरा बनाया जाता। **देखें** लाव।

भौंरी (स्त्री) रहट की बल्ली जो कुँयें के ऊपर लगी होती है उसके बाहर के सिरे में बैलों के जोत बंधे होते हैं और अंदर का सिरा टंडियों की लकड़ी को घुमाता है। **देखें** गरंड।

भेरी (स्त्री) देखें भौंरा या भौंरी।

पाट (पु0) कुएँ के चाक या गिरनी की पाड़ जिस पर क़ायम की जाती है। **देखें** गरंड।

पाछौर (पु0) पार्छा।

पार्छ (पु0) जल हौदा जिसमें पानी आकर खेत की नाली में जाता है। **देखें** गरंड।

पाड़ (स्त्री) देखें गरंड।

पानी पटाना (क्रिया) खेत को पानी देना, सिंचाई करना।

पानी हारा/पनहियारा (पु0) खेत में पानी पहुँचाने वाला मज़दूर। **देखें** बरहया।

पायीं कुआँ (पु0) वह कुँआ जो दहकर सत्हे ज़मीन के बराबर या नीचा हो गया हो और जिसमें राहगीर धोका खाकर गिर पड़े। **2.** दहा हुआ कुँआ जिसके चारों तरफ की मिट्टी गिरकर गड़हा बन गया हो।

पुरबंधी (स्त्री) देखें बारा और पुर।

परधा (पु0) देखें बेड़ी।

पुर्सा/पुरस (पु0) ऊँचे हाथ के साथ आदमी की लम्बान के बराबर गहराई। इस्तिलाह में कुँयें के पानी की गहराई।

परोट (स्त्री) मवेषी के ज़रिये कुँयें से पानी निकालने का तरीक़ा।

परैता (पु0) ढ़ेकली का कीला जिस पर वह हरकत करती है।

परैथ (स्त्री) कुँयें के अतराफ की ज़मीन जहाँ तक उसके पानी से सिंचाई हो सके।

पल्का (पु0) देखें पनमेलिया।

पल्ला (पु0) देखें बेड़ी, दौरी, दग्ला।

पल्वार (पु0) छोटे पौदों की सर्दी और पानी से बचाने के लिए बनाई हुई महफूज़ जगह।

पलेवट (स्त्री) देखें पनवट।

पनबला (पु0) देखें पन मेलिया।

पनचुलोइया (पु0) देखें पनमेलिया।

पनकटा (पु0) नहेर का पानी काटकर खेत की नालियों में पहुँचाने वाला शख़्स।

पनघट (पु0) कुँयें, नहेर या दरिया के किनारे पानी लेने को बनी हुई जगह।

पनमेलिया (पु0) खेत के बरहों और कियारियों में पानी पहुँचाने वाला मज़दूर।

पनवट (पु0) बीज बोने से क़ब्ल खेत में पानी देने का अ़मल।

पनहारा (पु0) देखें पनमेलिया।

पनहौदा (पु0) पानी का छोटा चौबच्चा या जल हौदा।

पोखर (स्त्री) ऐसी नषेबी ज़मीन जिसमें बरसात का पानी भर जाये और बवक़्त जुरूरत खेत में दिया जा सके।

जोहड़ ( ) देखें पोखर।

पैरा/पैरी (पु0) नहर के किनारे ऐसी बनी हुई जगह जहाँ से ऊँची ज़मीन के लिए पानी निकाला जाये। **देखें** भौंरा।

पैना (पु0) देखें बरहा।

तरावट (स्त्री) पानी की नमी या असर जो आबपाषी के बाद ज़मीन में क़ायम रहे। **देखें** आल, पेषा काष्तकारी पृ0।

तलैया (स्त्री) देखें पोखर।

तोड़ (पु0) आबपाषी की इस्तिलाह में ऐसा क़त्अ़ अराज़ी या खेत जो नहेर की सतहे आब से नीचा हो जिसमें नहेर का पानी बहता और फैलता चला जाये। **2.** नहेर के किनारे बना हुआ बंद जहाँ से बड़ी नहेर का पानी किसी दूसरी तरफ छोटी नहेर में पहुँचाया जाये।

तहपैरा कुँआ (पु0) देखें तहवाला कुँआ।

तहवाला कुँवा (पु0) वह कुँआ जिसपर बवक़्त वाहिद तीन लाब चलें और पानी न टूटे।

तेलिया पानी (पु0) ऐसा पानी जिसमें किसी क़िस्म के तेल के अज्ज़ा मिले हुये हों। इस क़िस्म का पानी बाज़ क़िस्म के पौदों के लिए नुक़सान देह होता है।

टाँड़ (पु0) देखें गरंड।
टंडर (स्त्री) देखें टुंडी।
कुंडा ( ) देखें टुंडी।
टुंडी (स्त्री) रहट की डोलचियाँ या मटकियाँ जिनमें पानी भरकर ऊपर आता है। **देखें** रहट।
टिंढर ( ) देखें रहट।
जाठ (स्त्री) पानी के नाप की तालाब में खड़ी की हुई बल्ली जो पानी के उतार चढ़ाव को बताये यानी जिससे यह ज़ाहिर हो कि तालाब का किस क़दर पानी आबपाषी में सर्फ़ होता है।
जाखन (स्त्री) कुँयें की कोठी तैयार करने को चोबी बनाया हुआ ढोल या फर्मा।
नीमचक ( ) देखें जाखन।
नेवार ( ) देखें जाखन।
जाँट (स्त्री) ढ़ेकली, ढूला और माँचा भी कहते हैं। **देखें** दबकन।
जिता (स्त्री) रहट की ढोल्चियों की रस्सी या जंजीर जिसमें वह लटकती रहती है। **देखें** रहट।
जुट्टा ( ) देखें जिता।
जगत (स्त्री) कुँए के अतराफ़ की वह पूरी जगह जहाँ पानी निकालने को पाड़ या टाँड़ बनी होती है और जिसमें कुँए की हद, चौबच्चा और घाट भी शामिल है।
जल हौज़ (पु0) कुँए के क़रीब चरस का पानी गिरने और जमा होने को बना हुआ चौबच्चा।
जलकर (पु0) सरकारी नहर से खेती के लिए पानी लेने का महसूल। **देखें** पनवट।
धारा ( ) देखें जलकर।
जल हौदा (पु0) देखें पनहौदा।
जमौट (पु0) देखें जाखन।
जेखड़ (स्त्री) देखें टुंडी।
जेल (स्त्री) लफ़्ज़ झेलना और झेलन से जेल तलफ़्फ़ुज़ हो गया। मुराद रहट की ढोलचियों की जंजीर या रस्सी जिसमें ढोलचियाँ बंधी रहती हैं।
झाल/झाला (स्त्री) नहर के पानी का नषेब में गिरना।
झाम (पु0) ज़मीन की तह की चट्टान में सूराख करने का बर्मा जो चट्टान के नीचे का पानी निकालने को इस्तेमाल किया जाता है जहाँ गहराई ज़ियादा हो। **देखें** भाग एक पेषा बेलदारी पृ0
झाँझरा (पु0) वह कुँआ या तालाब जिसका पानी ज़मीन के अंदर जज़्ब हो जाये या किसी दूसरी तरफ झर जाये।
झरा (पु0) झरना, कच्चा कुँआ जो नद्दी या नाले में बना लिया जाये। **2.** पानी की सोत।
झोरा (पु0) चमन की कियारियों में पानी ले जाने की नाली या नालियाँ।
झोला (पु0) चरस को पानी में डुबकी देने का अ़मल। **देना** के साथ बोला जाता है। **2.** चरस को झुलाकर आगे को खींचना।
चाक (पु0) कुँए की पाड़ या गरंड की चर्ख़ी जिसपर ढोल या चरस का रस्सा खींचा जाता है। **देखें** गरंड।
भून ( ) देखें चाक।
चर्ख़ी/चाली ( ) देखें चाक।
घिरनी/गिरनी ( ) देखें चाक।
चाही डाल (स्त्री) देखें डाल।

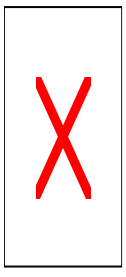

चरस (पु0) कुँयें से पानी निकालने का बहुत बड़ा ढोल जो बैलों की ताक़त से खींचा जाता है। **1. मंडल** चरस के मुँह का आहनी हल्का। इसको बाज़ मुक़ाम पर कुंडल कहते हैं। **2. पाँव/पायीं** कुंडल के बीच में लगी हुई लकड़ी जिसमें रस्सी बाँधी जाती है इसको ढ़ेरा भी कहते हैं। 3. **कौली** पाँव के सिरों पर लगे हुये आहनी हलक़े। **4. भोरा** वह चोबी कीला जो चरस की रस्सी

के हल्क़े और चरस के कड़े के दरमियान फँसा दिया जाता है।

मोट/मोठ ( ) देखें चरस।

पुरस ( ) देखें चरस।

बर्धा/बर्धी ( ) देखें चरस।

चरसैया (पु0) कुँयें पर चरस का पानी गिराने वाला या चरस खिंचवाने वाला।

चक (पु0) कुँए की सोत का मुँह।

चक्का (पु0) देखें चक।

पर्छा ( ) वह जगह जिसपर ढेक्ली की बल्ली आकर टिके।

चिल्वाई (स्त्री) चहेलवाई का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। कुँए के किनारे की वह जगह जहाँ चरस का पानी गिराया जाता है।

चहेलवाई (स्त्री) देखें चिलवाई।

चम्बल (पु0) नहेर से पानी निकालने का एक क़िस्म का ज़र्फ़। **देखें** बेड़ी और दौरी।

चोआ (पु0) कच्ची कुँइयाँ या ऐसा गहरा गड़हा जिसमें अतराफ का पानी झरकर आये।

चोड़ा ( ) देखें चौंडा।

चौंड़ा ( ) देखें चोआ।

चोआँ ( ) देखें चोया।

चौअड्डा कुँआ (पु0) वह कुँआँ जिसके चारों तरफ पानी खींचने की घिरनियाँ लगी हों।

चौपुरा कुँआ (पु0) देखें चौलावा कुँआ।

चौपड़ की नहर (स्त्री) चारों सिम्त की नहरें जो मर्कज़ पर आकर मिले या मर्कज़ी मुंबअ़ से निकलकर चारों तरफ जायें।

बनी संगमरमर की चौपड़ की नहेर।
गई चार सू उसके पानी की लहर।।

चोप्ना (क्रिया) चमन की कियारियों या खेत को पानी से सैराब करना या भर देना।

चौपहरा कुँआ (पु0) वह कुँआ जिससे दिन रात पानी निकाला जाता रहे और उसका पानी न टूटे।

चौलावा कुँआ (पु0) वह बड़ा कुँआ जिस पर चार लाव चलें यानी चार चरस से बवक़्ते वाहिद पानी निकाला जा सके।

चौंडा (पु0) चोड़ा का दूसरा तलफ़्फ़ुज़। कच्चा कुँआ। **देखें** चोआ।

चोटा (पु0) देखें चोआ।

चः (पु0) जल हौदा, चौबच्चा।

चहेल (स्त्री) चरस का पानी गिरने की जगह। **देखें** चिलवाई।

चेहली (स्त्री) झेली और झिल्ली ग़लत तलफ़्फ़ुज़। आबपाषी की इस्तिलाह मुराद चरस की रस्सी की घिरनी या चाक होती है।

चेकर/चेक (स्त्री) ढ़ेकली की ढोलचियों की रस्सी या ज़ंजीर जिसमें वह बँधी रहती है। **2.** ढ़ेकली की बल्ली का छूट कर अपनी जगह पर आने का अ़मल।

छाकना (क्रिया) पानी साफ करना, पानी को ठहराकर निथारना।

छाऊनी (स्त्री) गरंड के अखरों या खड़े खम्बे का पटाव। **देखें** गरंड।

चोया (पु0) दरिया या नद्दी के खुष्क हिस्से में खोदा हुआ कच्चा कुँआ।

दबड़ा/डबरा (पु0) देखें पोखर।

दब्कन (पु0) ढ़ेकली की बल्ली के निचले सिरे पर रखा हुआ वज़न जो बल्ली को अपनी जगह पर ले आता है। **देखें** ढ़ेकली।

थूनी ( ) देखें ढ़ेकली।

दड़ा (पु0) धड़ा, ढरेड़ा, आबषार, भदभदा।

दग्ला (पु0) देखें बेड़ी और दौरी।

दो अड्डा कुँआ (पु0) वह कुँआ जिस पर पानी निकालने की दो घिरनियाँ लगी हुई हों।

दो पैरा कुँआ (पु0) देखें दो लावा कुँआ।

दोचा (पु0) खज़ाना ए आब जो नहेर का पानी ऊँची ज़मीन पर पहुँचाने को किसी ऊँचे मुक़ाम पर बनाया गया हो। इसी

तरह सिलसिलेवार तह चः और चौचा कहलाता है।

दौरी (स्त्री) एक क़िस्म की टोकरी जिससे नहेर का पानी ऊँची ज़मीन पर फेंका जाता है। **देखें** बेड़ी।

दो लावा कुँआ (पु0) वह कुँआ जिस पर दो लाव चलें।

धाडा (पु0) धारे का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। **देखें** दड़र, जलकर।

डाल (स्त्री)

ढाल (स्त्री) आबपाषी की इस्तिलाह में ऐसा क़त्अ़ अराजी या खेत जो नहर के पानी की सतह से ऊँचा हो और जहाँ आबपाषी के लिए पानी चढ़ाव पर ले जाना पड़े। इसके बर खिलाफ नषेबी ज़मीन तोड़ कहलाती है। **2.** वह चौबच्चा या जल हौदा जो नहर के पानी की सतह से ऊँची जगह बना हो जिसमें पानी चढ़ाकर ऊँची क़त्अ़ अराजी में पहुँचाया जाये। इस्तिलाह में डाल तोड़ कहलाती है।

डालतोड़ (पु0) देखें डाल वाक्य 2।

डब्का (पु0) आबपाषी की इस्तिलाह में कुँयें का ऐसा मीठा पानी जो छोटे पौदों के लिए मुफीद हो।

डब्वा (पु0) नद्दी या दरिया के पुराने घोर की ज़मीन में खोदा हुआ कच्चा कुँआ या ऐसा गहरा गड़हा जिसमें पानी झर आये।

डोलापाट (पु0) कुँयें के गरंड की खड़ी लकड़ियों या अखरों के चूलिये जो पत्थर के होते हैं और कोठी की चुनाई में चूलें बाहर निकालकर चुन दिये जाते हैं। चूलियों को संगतराषी की इस्तिलाह में **मर्वा** कहते हैं। **देखें** भाग एक, पेषा संगतराषी पृ0

डहर (स्त्री) देखें पोखर।

कहावत

बनिये को शहर भैंस को डहर।
अहीर की दहींडी जात न गुजात।।

ढ़ेरा (पु0) देखें चरस।

ढ़ेकली/ढ़ैंकली (स्त्री) कुँयें से पानी निकालने की एक क़िस्म की दब्लक़ जो दो थूनियों के बीच में लगी हुई एक बल्ली होती है जिसके एक सिरे में डोल लटका होता है और दूसरे सिरे पर वज़न बँधा होता है। डोल को पानी में डुबोकर जब छोड़ देते हैं तो पिछले वज़न के दबाव से बल्ली का सिरा ऊपर उठ आता है और उसके साथ डोल भी ऊपर आ जाता है। यह बल्ली ढ़ेकली कहलाती है मगर इस्तिलाह में इसकी मुकम्मल सूरत ढेकली कहलाती है। **2.** नहेर का पानी ऊपर उछालने का ज़र्फ़।

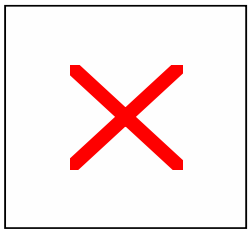

बल्ला ( ) देखें ढ़ेकली।

रजबहा/राज बहा (पु0) आबपाषी की बड़ी नहेर की शाख़ जिससे नाले और नलिया निकालकर पानी पहुँचाया और खेतों में तक़सीम किया जाये।

रहट (पु0) कुँयें से पानी निकालने का चर्ख़ जिसपर ढाँगों का पट्टा चढ़ा होता है जो चर्ख़ के साथ घूमता और ढाँगों में पानी भरकर ऊपर आता रहता है। **1. मरोड़ 2. भौंरी/बड़ोड़** वह लकड़ी जिसपर चर्ख़ घूमता है। **3. जेली, जिता या जेल** वह ज़ंजीर या पट्टा जिसमें डोलचियाँ बँधी रहती है। **4. टंडी, टिंडर या जेखड़** पानी ऊपर लाने की डोलची या डाँगी। **चित्र रहट**

सरा (स्त्री) लफ़्ज़ सैल का ग़लत तलफ़्फ़ुज़। काष्तकारों की इस्तिलाह, मुराद खेत में पानी पहुँचाने की नलिया।

सखर तेलिया (पु0) देखें खारी तेलिया।

सोत (स्त्री) कुँयें में सत्हे ज़मीन के नीचे का पानी आने का रास्ता। **2.** ज़मीन के

अंदर जज़्ब हुये पानी की तबअ़ी नाली। **निकलना, आना** के साथ बोला जाता है।

लड़ (स्त्री) रहट के डोंगों की रस्सी या ज़ंजीर जिसमें डौंगे बँधे रहते हैं।

पट्टा ( ) देखें सोत लड़।

सवेथाई/स्वेत हाई (पु0) वह कुँआ जिसमें चष्मे के पानी की सोत आती है।

सैल (स्त्री) चरस का रस्सा।

सिंचाई (स्त्री) खेत या चमन में पानी देने का अ़मल। **2.** खेत में पानी पहुँचाने की उजरत।

पनियाई/पनयाई ( ) देखें सींचाई।

पटाई ( ) देखें सींचाई।

सींचना (क्रिया) खेत या चमन में पानी देना।

सींचोनी (पु0) खेत में पानी देने वाला मज़दूर।

सेंध (स्त्री) कुँयें के अंदर पानी के रिसाव की नाली।

क़ल्लाबा/कुल्ला आब (पु0) अरबी लफ़्ज़ कुल्ला बमानी पानी का बड़ा ज़र्फ़ या मटका से कुल्ला आब। आबपाषी की इस्तिलाह में नहेर के ऐसे ख़ज़ाना ए आब यानी जल हौदा को कहते हैं जहाँ से रज बहों या नालों में पानी छोड़ा जाये। **खोलना, बंद करना** के साथ बोला जाता है।

काठ कुँआ (पु0) वह कच्चा कुँआ जिसमे लकड़ी के तख़्तों का बना हुआ गोला या कोठी डालकर आर्ज़ी बंदिष कर ली हो।

कुर्हा (पु0) आबपाषी के लिए कियारियाँ बनाने का औज़ार।

जंदरा ( ) देखें कुर्हा।

कड़वा पानी (पु0) वह पानी जिसमें नमक का जुज़ ज़ियादा हो और आबपाषी के काम न आये।

तेलिया पानी (पु0) ऐसा तल्ख़ खारी पानी जिसमें किसी क़िस्म के तेल के अज्ज़ा मिले हुये हों।

कस्ला (पु0) छोटी क़िस्म की फावड़ी। **देखें** कुर्हा।

कंतार मिट्टी (स्त्री) वह मिट्टी जो पानी में बह कर आये और बरहों या पानी की नालियों में जमती जाये जिससे उनकी तह की सतह ऊँची होकर पानी की रवानी को रोके और उसके बहाव को बदल दे।

कुंड/कुँड़ (पु0) कुँयें के तह की चट्टा में बनाया हुआ ऐसा बड़ा सूराख़ जिस में से चट्टान के नीचे का पानी उबलकर ऊपर आये। बाज़ मुक़ामात पर उसको कमल कहते हैं। **2.** तलावी, डब्रा, गड़य्या, लवार। **देखें** पोखर।

कुंडवारा ( ) देखें कुंड/कुँड़।

कुँआ बंदी (स्त्री) कुँयें से खेत को पानी देने का मुआवज़ा।

कोठी (स्त्री) गोला। **देखें** भाग एक पृ020।

कोरा (पु0) खेत की पहल सींचाई करने का अ़मल।

कोल (स्त्री) चमन में पानी पहुँचाने वाली ऐसी नाली जो ऊपर से ढकी हुई हो।

खला (स्त्री) देखें कोल।

कूमल (स्त्री) देखें कुंड।

काँडा (पु0) बरहों में पानी छोड़ने का नाले या नलिया के किनारे पुख़्ता बना हुआ छोटा चोबचा या जल हौदा।

कोहार/कुहार (पु0) देखें ढ़ेकली।

कीली (स्त्री) चरस के रस्से को बैलों के जुए में बाँधने वाली चोबी मेख़।

कीलिया (पु0) लाव वाला जो बैल हाँके और चरस का रस्सा खिंचवाये और उसको खोले बाँधे।

खारीपिंगा (पु0) किसी क़दर खरियाता पानी जो ज़ाइक़े में अच्छा और पौदों के लिए मुफीद हो।

तेलिया (पु0) ऐसा खारा पानी जिसमें किसी क़िस्म के तेल के अज़्ज़ा भी मिले हुये हों।

जरेल (पु0) निहायत खराब क़िस्म का खारी पानी।

मरमरा तेलिया ( ) देखें खारी तेलिया।

खरा (पु0) खले का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** खला।

खला (पु0) खेत में पानी पहुँचाने की बड़ी और ऊपर से बंद नाली।

खंद गोला (पु0) वह नषेबी मुक़ाम जहाँ पानी की रवानी कम हो जाये और पानी की लाई हुई मिट्टी उस जगह जमने लगे।

खंडवा (पु0) वह कुँआ जिसका गोला कोरे पत्थर जमाकर यानी बग़ैर चूना भरे बनाया गया हो और जिसमें पानी के साथ रेत भी आती रहे यानी पानी के रिसाव में रेत से भर जाये।

खँवची (स्त्री) गरंड के चाक या घिरनी का धुरा जिस पर वह घूमती है।

गदगोल (पु0) गदला पानी जिसमें मिट्टी के ज़र्रे मिले हुये हों।

गरगज़ (पु0) गिर्द गच का ग़लत तलफ़्फुज़। कुँये के गिर्द चूने की पुख़्ता चुनाई का गोला या कोठी।

गरंड (पु0) कुँयें के चाक या घिरनी का अड्डा जिसपर चाक लगाया जाता है इस मजमूअे में दो कड़ियाँ एक धुरी और एक चाक, पय्या या घिरनी होता है। **1. आखरा, आखला, आखरे, आखले, थूनी** दो खड़ी

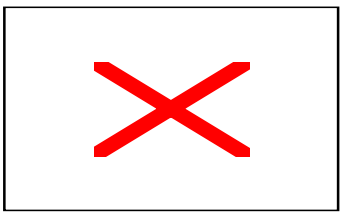

कड़ियाँ जिस में चाक की धुरी लगी होती है इन कड़ियों के नीचे के सिरे या तो पत्थरों के चूलियों या मुरे में जो कोठी के अंदर चिते हुये होते हैं फँसा दिये जाते हैं या कुयें के बाहर ज़मीन से गाड़ दिये जाते हैं। **2. धुरा, धुरी, मियाल** वह आहनी या चोबी डंडा जिस पर चाक या घिरनी घूमती है। **3. चाक, घिरनी, भोन, चर्ख़ी** वह पय्या जिसपर चरस या डोल की रस्सी खींची जाती है। जब आखले एक दूसरे से कुछ ज़ियादा फासले पर होते हैं जो उन पर एक पटाव डालकर जिसको इस्तिलाह में **छावनी, भरत और माँझी** कहते हैं। उसके ऊपर छोटे आखरे खड़े करके उनमें घिरनी लगाई जाती है। छोटे आखरे इस्तिलाह में गुडियाँ कहलाते हैं और उनकी धुरी मियाल।

गरंडो (पु0) देखें अखौटा और ढ़ेकली।

गुरहन (स्त्री) देखें बिरत। प्रयोग 2।

गुड़बा (स्त्री) देखें गरंड।

गुल्ला (पु0) कुल्ला का ग़लत तलफ़्फुज़। **देखें** कुल्लाबा।

गुलाबा (पु0) कुल्लाबा का दूसरा तलफ़्फुज़। **देखें** कुल्लाबा।

गुल्ला (पु0) देखें परैला।

लादा (पु0) देखें दबकन या ढ़ेकली।

लादका (पु0) देखें लादा।

लाव (स्त्री) चरस का रस्सा, उर्फ़े आम में चरस से पानी निकालने के पूरे मजमूअे को लाव कहा जाता है। जैसे लाव चल रही है, लाव लगी हुई है। **चित्र गरंड**

लिंगा (स्त्री) चरस के पानी की नाली जो खेत या चमन में जाती है।

माँझी (स्त्री) देखें गरंड वाक्य 2।

मट कुँय्याँ (स्त्री) बग़ैर कोठी का कच्चा कुँआ।

मटवारा (पु0) खरियाता मीठा पानी।

मरमरा पानी (पु0) किसी क़दर खरियाता पानी।

भड़ोड़ (पु0) रहट की दाँते या खँदानेदार सिरे की लकड़ी की जो डोल्चियों या डोंगों के पट्टे की घिरनी को घुमाती है।

मल्मला पानी (पु0) देखें मुरमुरा पानी।

मंडल (पु0) चरस का आहनी कड़ा यानी मुँह का आहनी हल्का।

मेट (स्त्री) छोटी क़िस्म का चरस। **देखें** चरस।

पुर ( ) देखें चरस।

मियाल (स्त्री) देखें गरंड।

मीठा तेलिया पानी (पु0) मीठा पानी जिसमें तेल के अज़्ज़ा हो।

मैंढ़ (स्त्री) कुँये की कोठी का ऊपर का हिस्सा जो सत्हे ज़मीन से बाहर निकला हुआ बषक्ल मुंडेर बनाया जाता है।

नारमोट (स्त्री) मोट या चरस की रस्सी या लाव।

नाका तोड़ पानी (पु0) नहेर का भरपूर छोड़ा हुआ पानी जो रजबहे के बंद तोड़ दे।

नागौर (स्त्री) एक जोट की लाव।

नाला (पु0) रजबहे की शाख़। नाले की शाख़ नलिया कहलाती है।

नरेली (स्त्री) चरस का नारियल के रेषों का बना हुआ रस्सा।

नहेर (स्त्री) पानी का बड़ा नाला जो आबपाषी की ज़ुरूरत के लिए बनाया गया हो और जिसमें दरिया से पानी लिया जाता हो। जिन अराज़ियात में नहेर बनाई जाती है उनमें अच्छी खेती होने लगती है। ***कहावत*** *बसाव शहर का खेत नहेर का* / **1. ऊधी** नहर के दोनों तरफ बनाये हुये ऊँचे पाखे जो उसके किनारे कहलाते हैं। **2. पार्छा, पन हौदा** नहर का बंद जहाँ से पानी छोड़ा जाये। **3. अंवा** नहर का पानी चढ़ाव पर ले जाने का बंद।

नोचक (पु0) ढोल जिस पर कुँयें की कोठी बनाई जाती है। **देखें** जाखन।

चकरा ( ) देखें जाखन।

छल्ला ( ) देखें जाखन।

नैनी (स्त्री) डाल पर पानी चढ़ाने का पहला पनहौदा या जल हौदा। **देखें** ढाल।

अंवा ( ) देखें नहेर।

समाप्त